वीर सावरकर

लेखक

शिव पाण्डे

शिव पाण्डे
हनुमान हत्था,

पिता श्री लालूराम जी पाण्डे

अर

मातुश्री दुर्गा बाई पाण्डे

नै

समर्पण

सर्वाधिकार	लेखक
पुस्तक	वीर सावरकर
लेखक	शिव पाण्डेय
संस्करण	जुलाई 2000
मूल्य	100 रुपये
मुद्रक	कल्याणी प्रिण्टर्स माल गोदाम रोड बीकानेर (राजस्थान) दूरभाष 526890
प्रकाशक	शिव पाण्डे हनुमान हत्था सत्यनारायण मंदिर के पास बीकानेर (राजस्थान)

वीर सावरकर भूमिका

'काव्य शास्त्र विनोदेन कालोगच्छति धीमताम' ओ संस्कृत रो घणो मानीजतो सुभाषित है। भाई श्री शिव पांडे बीकानेरी आपरी सेवानिवृत्ति रै पछै आप रा सगळा ई समा काव्य शास्त्र री चर्चा विचारणा रचना गोष्ठिया अर श्रीमान जना री सत सगत मे वितावणो शुरू करियो जिके रो ई सुफल आज आपा रै सामै है। मात्र तीजी कक्षा ताई भण्योड़ा अर रेल्वे कारखाने रा पेंटर शिव पांडे जी प्रकृति रा ऐड़ा फूटरा चितराम आपरै काव्य मे रच्या अर भजना री सुरसरि प्रवाहित करी कै आखे भारत मे मायड़ भाषा रा हेताळुवा आपने बुला-बुला'र आपरी काव्य सुधा रै माध्यम सू राजस्थानी भाषा अर संस्कृति में अवगाहन करणै रो पुण्य कमायो।

भाई शिव पांडेजी री काव्य साधना ई प्रबल प्रोत्साहन सू आगै बधती गई। मायड़ भाषा रा तो शिवजी दीवाना है। भारतीय संसद रै सामने राजस्थानी री मान्यता रो सवाल ले'यर राजस्थान रा साहित्यकारा जद धरणो दियो तो पांडेजी बठै हाजर हा अर आपरी रचना सू राजस्थानी रै पख रो सबळो समथन करियो। बीकानेर री जनता री जबान माथै आपरा गीता रा बोल सदा गूजता रैया अर बार-बार 'चदा रे संदेशो ल्यादै म्हारी माय रो' 'चादड़ल्या में चमकै चीर. ' सुणणै री माग करता बैन भाया री आखा सू आसूड़ा री धार वैवती रैवती।

इण तरै रा जन-जन रा कवि भाई श्री शिव पांडेजी भारतीय साहित्य परिषद री गोष्ठिया मे भी आवण लाग्या। बीकानेर मे भारतीय साहित्य परिषद रा धुन रा धनी कार्यकर्त्ता श्री रमेशकुमारजी शर्मा वीर सावरकर रै व्यक्तित्व अर कृतित्व माथै लगोलग-बरसा रा बरस घणी गोष्ठिया करी। इया सू शिव पांडेजी ने वीर सावरकर माथै काव्य लिखणै री प्रेरणा मिली अर वै प्रबन्ध काव्य स्तर रो प्रस्तुत काव्य रचना कर'र मा भारती रै कोष मे मायड़ भाषा री निधि मे एक अणमोल रतन अर्पित करयो है। विद्वत जन चावै ई काव्य नै प्रबन्ध काव्य कैवे चावै खण्ड काव्य कैवे पण ई काव्य रै मायनै भारत माता रै गौरव और राष्ट्र रै स्वातन्त्र्य री उपासना रो जिको स्वर मुखरित हुयो है मनै विश्वास है ओ स्वर प्रान्त अर भाषा री सींवा नै लाघ'र राष्ट्रीय जागृति रो शखनाद करसी।

काव्य रो विषय वीर सावरकर है। सुभाष अर सावरकर भारतीय जीवण री भारतीय लोक री आत्मा री धड़कण है। इया दोन्या रो नाव जोश त्याग-बलिदान अर देश सेवा रै ज्वार रो पर्यायवाची है इणी कारण इया रो नाव ही विद्युत गति सू लोक जागरण रो मंत्र है। प्रस्तुत काव्य रो केन्द्र वीर सावरकर है।

वीर सावरकर रै नासिक जिले रै भगूर गाव में जलम अर सस्कारपूर्ण पारिवारिक शिक्षा मात्र 15 वर्ष री आयु में चापेकर बधुवा री फासी रो बदलो स्वातन्त्र्य सू लेवण री सौगध लीवी अर फेरू शुरू हुयी अनथक कालजयी कालयात्रा। विदेशा में रैय शिक्षा रै सागै आजादी री अलख जगाई। सशस्त्र क्रांति री आधारभूमि तैयार की अर जद फ्रांस रै समुद्रतट माथै अग्रेज जहाज सू कूदर पोंवग्या तो वै विश्वभर में चर्चित होयग्या। फेरू कालैपाणी री नारकीय यातनावा दो जलम रो आजीवन कारावास पण ता ई सघर्ष री अमर प्रेरणा देवण आळै छह हजार पृष्ठ रै चिन्मय साहित्य री रचना भारत माता रो ओ सपूत सकल्प शक्ति रो जीवतो-जागतो प्रमाण है।

इसो कुण भारतीय होसी जिको 'माझी जनमठेप' पढ'र आठ-आठ आसू रोयो नी हुवैला का 1857 रै स्वातंत्र्य संग्राम' नै पढ'र गौरवान्वित नीं हुयो हुवैला। बिया रो नाव ही स्वातंत्र्य वीर पड़ ग्यो। साहित्य में 'छह स्वर्णिम पृष्ठ' री रचना कर निराशा मे आशा अर विश्वास रो बीज मंत्र कुण फूक्यो। बो 'मृत्युंजय' म्हारे शिव पांडेजी रै काव्य रो हेतु बण्यो। म्हे सगळा अर मायड़ भाषा भी धन्य हुई स्वातंत्र्य रा गुणगान सू।

महायोगी सावरकर जी काई को नी हा? लेखक विचारक कवि नाटककार समाज सुधारक विज्ञान प्रसारक इतिहासकार पत्रकार ओजस्वी वक्ता कर्मयोगी अर युगपुरुष सावरकरजी नै काव्य-केन्द्र चुण'र भाई शिव पांडे जी राजस्थानी अर मराठी री ही नईं अपितु मा भारती री भी महताऊ सेवा करी है। ईं काव्य रो रस ई - 'देशभक्ति रस' है।

तुलसीदासजी कह्यो हो 'स्वांत सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा' बिल्कुल ठीक कह्यो। स्वांत सुखाय हुया बिना काव्य री रचना हो ई कोनी सकै अर जे करीजै तो बो काव्य' रै सागै बल प्रयोग हुवै। काव्य रचना री कसौटी है- आत्मानुभूति। जे आत्मानुभूति नीं हुवै तो काव्य री स्फुरणा किया हुवै? अनुभूति तो हरेक मे हुवै प्राणी मात्र में हुवै पण काई हरेक कवि बण सकै? दर्शनशास्त्र मे उपनिषद अर गीता मे द्वैत अद्वैत विशिष्टद्वैत अर द्वैताद्वैत आद अगणित प्रकारा सू अनुभूति री विवेचना करीजी है। पुरुष अर प्रकृति आत्मा अर अनुभूति शिव अर शक्ति भवानी-परमेश्वर जाणै कित्ता कित्ता प्रकारा सू अनुभूति री अर बीं री शक्ति री विवेचना करीजी है।

काव्य रा वर्तमान सिद्धान्त भी अनुभूति नै काव्य रो मर्म कैवै। ध्वनि सिद्धांत मे जोर दे'यर कह्यो गयो है कै काव्य रै मरम में अनुभूति काम करै। रस सिद्धान्त री मान्यता है कै रचयिता री अनुभूति ही स्थायी भाव रो आश्रय हुवै। जिया कि म्हे पैला कयो कै अनुभूति हरेक मे हुवै पण हरेक कवि को हुवै नी बिया ही घणकरा काव्य शास्त्री विवेचक आलोचक ईं मत रा समर्थक है। पश्चिमी विद्वान क्रोचे कह्यो कै- अनुभूति केवल बा ई है जिकी काव्य नै जलम देवै। क्रौंच मिथुन माथै व्याध रै तीर सू आदिकवि री अनुभूति रै ज्वार री कोख सो आदि काव्य री रचना हुई। भारतीय विचार है कि जे मानखै मे अनुभूति नीं है तो बो काठ री कुढी है- करड़ी बात है पण खरी है। काव्य री अनुभूति खुदोखुद एक अखंड आत्मिक व्यौपार है।

भाई शिव पांडे ईं काव्य अनुभूति ईं आत्म अनुभूति रै माध्यम सू हड्मान जी दाई आपरो हिरदो खोल'र आपां रै सामै राख दियो है। विक्रम संवत रै नववर्ष अधिष्ठान री मंगळ वेळा में ईं काव्य-इमरत रो आस्वाद म्हारै रोम-रोम नै रोमांच जगा दियो। स्वातन्त्र्य री अग्निशिखा अगनझळ 'वीर सावरकर' राजस्थानी काव्य मे मिठास ओजस्वीता अर प्रसाद गुण साकार होय ग्यो है। सावरकरजी री इतिहास दृष्टि नै पर'सर (स्पर्श करके) शिव पांडेजी विषय री अतल गहराई तक जाय पोंच्या है।

भाई शिव पांडे बीकानेरी खुद में एक जागती जोत अर धुन री जीवती-जागती लौ है। बिंया री आ काव्य रचना देशप्रेम रै दीवाना रै हिवड़े रो हार बणैली म्हनै पूरो विश्वास है।

अक्षय तृतीया सं 2057
दिनांक 6 मई 2000

जानकी नारायण श्रीमाली
ब्रह्मपुरी चौक बीकानेर

आतम रो स्वर (आत्म कथन)

श्री राम

नाव - शिव पाण्डेय 'बीकानेरी

जलमतिथ - १५ फरवरी१९३१। उण दिन शिवरात्रि पर्व हुवण रै कारण माता पिता म्हारो नाव शिव राख दियो। औ ही शिव आगै जायर शिव पाण्डेय बीकानेरी रै नाव सू जाणीजण लागो।

शिक्षा - तीजी कक्षा ताई हुई। आखर उघाडणनै लागग्यो। पोथी बाचणो अर माडणो लिखणो पण आयग्यो है। कुदरत रै वरदान सू आवाज म्हारी तीखी अर कण्ठ-स्वर मीठ अर मधुर हुवण सू जमा-जागणा माय गाय स्वर माय स्वर मिलावता अर दाद पावता। अठै सू ही म्हारो सगीत पासै लगाव जुड़तो रैयो। सगीत कानी रुझान टाबरपण सू हो। आगै जायर म्हारा स्वजातीय सगीताचार्य गुरुवर श्री रामकिसनजी पाण्डेय सू सगीत री शिक्षा ग्रहण की। वा म्हारो पूरो ध्यान राखता था। म्हनै गावण जोग गायकी बणा दियो कै म्है सगीत रो अखाडची पण हुग्यो।

दस बरस री उमर मा म्हनै महाराजा श्री सादुलसिहजी री गोल्फ खेलावण री नौकरी मिलगी। आ ही दिना मा म्हैं ब्याव रै बधन मा बधग्यो हो।

निर्माण - राजस्थान निर्माण रै सागै म्हारी गोल्फ रमावण आळी नोकरी जाती रैयी पण म्हारा सुसरोजी आपरै जतना सू म्हनै रेल्वे री कची नौकरी मा रखवा दियो। उणी दिना मा दिल्ली मा रेल्वे-वीक रो जलसो मनाइज्यो जिणमा बीकानेर सू रेल्वे रा कई मोटा अधिकारी अर चिन्यासीक कर्मचारी शामिल हुवण नै दिल्ली गया। अधिकारया म्हनै पण आ रै साथै दिल्ली भिजवा दियो।

माता सरस्वती री कृपा सू इण सफर मा म्हैं एक कविता बणाई अर पछै आ कविता म्हैं आयोजन स्थल पर सैकड़ा री मौजूदगी मा स्वर-साधना सू सुणाई जिकी नै सगळा हीज बोत पसद करी। कवितारा बोल 'म्हे हू बीकानेरी घरचा हुवै सगळै म्हारी हा म्हैं रेल्वे वीक मनाने आया ईस्टर्न वैस्टर्न सदर्न नार्दर्न का म्हैं नक्शा लाया।' इण कविता रै प्रताप बीकानेर आवता ही अधिकारया म्हारी नौकरी पक्की करदी अर ता पछै स्टेशन सू ह्टार रेल्वे वर्कशॉप मा म्हनै पेन्टर बणा दियो। म्हैं छेलो उठै सू ही सन १९८९ मा हेड पेन्टर रै पद सू सेवामुक्त हुयो। म्हारो साक्षी रैकर्ड हेला मारर कैवै कै म्है म्हारो काम नेकी राखतै इमानदारी सू कियो। आ बात पण अठै ध्यान मा राखण जोग है कै म्हैं सगीत रै क्षेत्र मा बराबर सक्रिय रैयो अर भजन गीत बराबर लिखतो रैयो। सुणातो जिकानै लोक-प्रियता पण बराबर मिलती रैयी।

भजना री रचना अर वारो सगीतमय प्रस्तुतीकरण रै कारण म्हारो नगर रै मेठी साहित्यकारा सपर्क मा आया अर पछै वारो प्रोत्साहन मनै कवि रै एक स्तर पर खड़ो कर दियो। अठै सू हीज न्यारै-न्यारै भावा रा गीत राष्ट्रीय चेतना रा काव्यात्मक गीत अर वीररस री रचनावा रो श्रीगणेश हुवै। जद औ गीत अर वीर रसात्मक काव्य गीत कवि गोष्ठ्या अर कवि सम्मेलना मा सुण र लोग लखदाद दियै बिना कोनी रैया। इण मौलिक रचना क्षेत्र मा आगै बधणै रो श्रेय तोगोलोकवासी म्हारा श्रद्धास्पद श्री प विद्याधरजी शास्त्री गुरुवर श्री श्रीलालजी नथमलजी जोशी विदवदवर्य प अभयचद्रजी शर्मा पूज्याचार्य श्री सूर्यशकरजी पारीक अर पछै औरै परवारकर और पग कई वेली है जिका म्हारै हित सारु प्रेरणा अर प्रोत्साहन देवता रैया है।

ओ कवि कर्म अर आ साहित्य सेवा अर पछै सगीत सू नेड़पण म्हनैं चित्रपट कागस

रै कई महारथ्या सूं मुलाकात करण रो मौको मिल्यो। म्हैं जद मुम्बई गयो तो सगीत निर्देशक महेश कोल एस एन त्रिपाठी भरत व्यास अर शिव शर्मा आद नै गिणाया जा सकै। वा म्हारो गावणो सुण्यो। वा कैयो कै मुम्बई मा थिर रूप सूं जमो तो बात बणै पण म्हैं परिवार री जिम्मेवारी अर सरकारी नौकरी हुवण रै कारण उठै नीं रैय सक्यो।

बीकानेर रै नागणेचीजी रै मिदर मा बैठ'र म्है स्तुत्या लिखणी शुरू करदी। वै स्तुत्या आज पण लोग मिदर मा बोलै है। मित्र बेल्या रो ओ आग्रह बराबर बण्यो रैवतो कै थारै भजन री पोथी छपणी चाहिजै। जद म्हैं भजना री स्तुत्या आद री दो पोथ्या भजनावळी अर त्रिवेणी सगम छपवाई। औ लोगा नै घणी दाय आई। प्रवासी राजस्थान्या नै तो म्हारा भजन घणा दाय आया। पछै म्हैं बारै बुलावै माथै कलकत्ता गुवाहटी मद्रास हैदराबाद विराटनगर शिलाग पटना घगलपेट कटिहार ब्रजराजनगर आद नगरा मा गयो अर बठै म्हारै भजन गावण रा कई कार्यक्रम हुआ।

राज री सेवानिवृत्ति सूं पैला सन १९६२ मा म्हारै भजना स्तुत्या अर छद-गीता रै सहारै सूं बीकानैर शहर रै पुरानी गिनाणी मुहल्लै मा थित महाराजा श्री गगासिहजी रै बणवायोड़ै माताजी रै गोल मिदर रो म्हारै थको जीर्णोद्धार हुयो अर उण मा मूरती री थापना करवाई इण रो म्हनै घणो हरख है कै एक भलै काम रो म्हैं निमत बण्यो। आर्थिक सहयोग जनता जनार्दन दिल खोल'र कियो।

राज री सेवा सूं निवृत हुया पछै म्हारो ध्यान नूवा-नूवा भजन बणावण अर राजस्थानी भाषा में देशभक्ति अर वीर रस री कविता बणावण कानी गयो। अर औड़ी रचनावा पण मोकळी सारी बणी। इण ताळखै प्यारा मित्र बेल्यारो आग्रह रैयो कै औ रैना छप'र प्रकाश मा आवणी चाहिजै तो पछै औ 'हियेड़े रा गीत मनड़ै रा मीत' नाव सूं राजस्थानी भाषा साहित्य एव सस्कृति अकादमी बीकानेर रै आर्थिक सहयोग सूं प्रकाशित हुया। इण री विदवाना अर पाठका कानी सूं मोकळी सरावना हुई। प्रकाशन क्रम मा म्हारी आ तीसरी महताऊ पुस्तक है।

इणी सिलसिलै मा म्हारै २०५ भजना री पुस्तक 'प्रभु प्रसादी' मनभावण नाव सूं २ अक्टूबर सन १९९७ मा प्रकाशित हुई। इण नै पण पाठका लोकगायका घणै चाव भाव सूं आदरी है अगेजी है। इण रै प्रकाशन मा बीकानेर रा राजमाताजी साहिया रो अर्थात्मक अर आशीर्वादात्मक सहयोग रैयो। इण लेखै म्हैं आपरो नरमाई कवळाई सूं घणो आभारी हूँ।

म्हारै इण चौथै प्रकाशन रै छैलै म्हारो 'वीर सावरकर' नाव रो सुद्रढ प्रलम्ब काव्य पूज्य गुरुजना अर आप सुधी पाठका रै सामैं राखता म्हनै खुशी हुय रैयी है। इण लेखै प्यारु वत्स ही म्हारै हितालु अर बेल्या रो हियै तणो डॉ बाबूलाल शर्मा भा वि म शोध प्रतिष्ठान श्री सत्यप्रकाशजी आचार्य डा गिरिजाशकर शर्मा गुरुवर श्रीलाल नथमल जोशी प अदायचन्द्रजी शर्मा डा किरणजी नाहटा रमेशचन्द्रजी शर्मा सेती म्हैं घणो कृतज्ञ हू जिका म्हारा हित चिंतक रैया है।

विनतमय
शिव पाण्डेय

पहलो परिच्छेद

मा सुरसत धरती प्रकृति रूप
सिवरखा आखर मे बधै ओप
साचै भावा रा पुसब चढा
देऊ चरणा मे निवण धोक

बूढा - जवान - बेटा - बेटी
सस्कृति रा मरम भणो-सीखो
बिन देशभक्ति रै मिनखपणो
देवा जैड़ो लागै फीको

भारत री पत राखण सारू
अणगिणती वीर जलम धार्‌यो
इतिहास वखाणै गुण वा रा
वैरी नै पग-पग ललकार्‌यो

धर मौत हथाळी ले सौगन
आजाद कराया वै म्हानै
निस्वारथ लघग्या मौत घाट
म्हे किया भूल जावा वा नै

देवा-सो ऊचो है दरजो
कीरत वा री मै गाय रयो
अणमेदा अवखाया भेळै
गोरा रा जुलम सुणाय रयो

छॅद अलकार मात्रा जड़ियो
रस वीर पाय वळ तोलैलो
बलिदान हुयो हो फळीभूत
जण-जण नै [illegible]

उण जुग म भारत गारा रो
हुय गुलाम जकड़ीज रयो
ना भुगत करावणियो कोई
इण लेखै फफेडीज रयो

बिन ताकत देखी सूनवाड
कर लीनो काबू मिनखापण
सत रो दिन-रात हरण करता
रावण अर कुभकरण ज्यू बण

सागीड़ी बेड्या बधियोड़ी
भारतमाता तडफडती ही
कद पीडो छूटै गोरा सू
नित सावरियै नै भजती ही

सुख पराधीनता मे नाही
आ चिता हिवडो सेकै ही
बेड्या काटण बेटा सामी
टकटकी लगाया देखै ही

महाराष्ट्र राज्य रै नासिक मे
नान्हो-सो हो भगूर गाव
सावरकर री गुण-गाथा सू
बणग्यो बो पावन धाम नाव

ब्राह्मण घर वस दामोदर
भगूर गाव पढ केय कलम
२८ मई सन १८८३ नै
[illegible]

बावल दामोदर मा राधा
रामकिसन भगति रैता लीन
कट्टर हिन्दू बै कैवाता
नीं हा किण रै ही पराधीन

रामायण महाभारत कथा
तात्ये नै रोज सुणाता हा
राणा प्रताप शिवाजी री
गौरव-गाथावा गाता हा

प्रताप शिवा गौरव-गाथा
सावरकर होता सुण्या मगन
मैं आ रै जैडो बणू वीर
मन माय लगाली आ ही लगन

हिंदवा नै कैसू अलग जगा
घर-घर क्राती दीवा चासो
भेळा कर करसवासू कम्मर
फुरवासू हिन्द-किस्मत पासो

तोड़ विदेसी री ताकत नै
पद पादसाहि थापन करसू
स्वातत्र राष्ट्र हिन्दू रो ही
निर्माण नीव भारत भरसू

अकुर फूट्या मन हुया हरा
दस बरसा मे मा छोड मरै
बावल घर रो लै काम साभ
फेर दूजो ब्याव नही करै

तीनू भाया दै काम बाट
चौकै रो काम आप लेवे
कुलदेवी री पूजा करणो
सावरकर नै भोळा दवै

नित पूजा कर अरदास करै
मा निसफल जावै नीं भगती
अग्रेजा रा पग भारत सू
छोडाऊ ऐडी दै सगती

आ लगन लाडलै री देख्या
बावल इसकूल पढण घालै
बै लगन मगन विद्यार्थी बण
सीधै-सादै मारग चालै

छोरा री टोळी बणा परा
तरवार चलाणी देवै सिखा
आपस मे नकली जुद्ध करै
मास्टर लोगा नै देवै दिखा

बणा धनुष बाण फूला-पत्ता
रै माथै निसाणा बै टेकै
दो टोळ्या कर आपस माहीं
नकली हमलो करके देखे

लिखणै री कलम बणा भाला
फेकै एक-दूजै पर लेता
तात्यो आ देखा करामात
साथ्या रा बण जावै नेता

कर पाच पास अंग्रेजी ताई
नासिक विद्यालय भेज देवै
राष्ट्रीय भावना जता परा
सगळा नै आपरा कर लेवै

देशभक्ति कवितावा माडी
मराठी पत्रा रै माय छपी
पढ़कर कै मगन लोग होया
ओकात सातरी तुरत लखी

साथ्या रै भेळै साहित नै
पढणो तात्ये चालू कर दै
दीवानी देस-भावनावा
लोगा री खोपड़िया भर दै

अखबार केसरी बाच बाच
हालात हिन्द रा सै जाणै
भारत आजाद करावण नै
जीवन रा तम्बू बै ताणै

महाराष्ट्र मायनै बिया दिना
एक लहर गजब दौड़ती ही
अंग्रेज खिलाफ जवाना रो
काधै सू काधो जोड़ती ही

सन १८९७ पूना रै माया
प्लेग रोग तकड़ो चालै
अंग्रेजा री लापरवाही
जनता नै ही फोड़ा घालै

नीं मिल्या दवाया जनता नै
बूढा-जवान मरणै लागै
सीढ्या नीसरता देख-देख
घर-घर रै माय क्राति जागै

चाफेकर बन्धु बणा प्लान
कमिश्नर-मारग रोकावै
बीच बजारा गोळी मारै
दो गोरा धरती धोकावै

चाफेकर बन्धू तणो प्लान
सागीड़ो जाचो जचवावै
पकड़ावै सासन हुकम देय
तहलका हिन्द मे मच जावै

आ खबर विश्व माया पूगै
गोरा री होवै हासी है
दूजै ही दिन अखबार छपै
दोना नै दीनी फासी है

चाफेकर बँधुवाँ फाँसी सू
जनता मे जोश भळै भभकै
मर-मिटणै री धारै जनता
रू-रू माही क्राति भळकै

आ पढै तात्ये रो खून बळै
मर-मिटण भावना भी जागै
गोरा सू बदळो लेवण री
मन-मन माहीं सोचण लागै

आजादी इज्जत रो झडो
फहराय जूझतो ही रहसू
हिम्मत देखाळू दुनिया नै
दुख नै सुख समझ परो सहसू

कुलदेवी रै मिन्दर पूगै
अर धोक लगा फेरी देवै
ओ बदळो लेय परो रैसू
साम्है ऊभो सोगन लेवै

सोगन ले नींद हराम करी
माया रै माया मार-मार
गोरा नै ढावण रै ताई
करी योजनावा कई त्यार

मित्रा रा मेळा लगा लगा
छात्रा नै कर-करकै भेळा
जोशीला भाषण देय कवै
अब लड़णे री आई वेळा

गणेश शिवाजी उछव मना
'मित्र मेला' नाव सस्था थरपै
सशस्त्र क्राति प्रचार करै
गोरै शासन सू नही डरपै

भारत मा री हालत बखाण
सगळा नै सदस्य बणा लेवै
कै मर-मिटणे नै होय त्यार
उठता नै स्याबासी देवै

२२ जनवरी १९०१ विक्टोरया
मरिया गोरा मन दुख जागै
भारत रै माया जगा जगा
सोकसभावा होवण लागै

मित्रा री बैठक कर तात्ये
विरोध जताय भाषण देवै
इगलैड री महाराणी नै
दुसमण भारत री बो कैवै

सन १९०१ मे मैट्रिक करलै
सीधो ही पूगै बो पूना
फर्ग्यूसन कालेज हो भरती
छात्रा सू मिले जावै जूना

सगळा रै हिवड़ा प्रेम जता
देयावै देस-भगति रो बळ
जोशीला भाषण देय देय
वै भळै बणा लेवै है दळ

विदेसी कपड़ा री होळी

कवितावा और लेख लिखणा
कालिज मे भी चालू करदे
पढवावै सगळे मित्रा नै
रु रु मे राष्ट्र-भाव भरदे

कविता-लेखा मे देसभगति
अखबार मराठी नितू छपै
गुणवान जाण दे पुरस्कार
पढ परा लोग ओकात लखै

कविता लेख पढ्या पराजपे
मन माया हुया खूब राजी
ओ देशभक्ति रे पाळे मे
दूजा सू मारैलो बाजी

उण लोकमान्य सू मिलवाया
सावरकर नै सागै लेजा
कविता रा ऊचा भाव देख
राजी हा अबै तिलक वेजा

भारत आजाद करावण नै
आपस माया मन मिल जावै
बै रोज मिलण री धारै तद
खुसिया सू मनड़ा खिल जावै

देख हाव भाव तिलकजी रा
सावरकरजी मन मे हरखै
हीमत ही और वधै दूणी
औकात विया री ही परखै

जोशीली कवितावा पढ-पढ
कै लड़का मन मे लेय धार
भारत री इज्जत राखण नै
मर मिटणै खातर होय त्यार

सन 1905 मे सावरकरजी
बीए री कर रया हा त्यारी
आजाद देश करवाणे री
चिन्ता ई लागोड़ी भारी

ई बीच विदेशी कपडा रो
आदोलन आगे आ छेडै
होळका विदेशी गाभा री
बाळण री मन माया तेडै

कपडा लाकर कै घर-घर सू
भेळा कर युवका री टोळी
पूना रै बीच वजारा मे
धू धू कर बाळै बे होळी

करै तिलक इण री अगवानी
सावरकर घोटो घमकावै
आ खबर विश्व माया पूगै
बिजळी रै दायी चमकावै

अगरेज छपावै अखबारा
आ बात बखाणे बै भूडी
क्रातीकारी भारतवासी
आ खुणस काढ रैया ऊडी

फर्ग्यूसन कालिज अधिकारी
कालिज सू बा नै देय काढ
अगरेजी सासन सू डरता
क्रातीकारिया री लेय आड

अधिकारी कालिज सू काढै
सावरकर होवे नी उदास
वम्बई विश्वविद्यालय पढकै
बीए कर लेवै उणी साल

आपस मं कह भेळा करतै
विसवासी निज रा से साथी
कर मीटिंगा छानै-छुपकै
ऊंची नीची सगळी जाती

ससतर क्रांति छेड़णे खातर
भारत-नामी सस्था थरपै
साथ्या री हीमत बधवावै
विद्यालय नीं किण सू डरपै

हर कोई लडको लै सौगन
वीर शिवाजी रै नाव उपर
भारत आजाद करावण नै
खेलाला म्हारी जान उपर

सब धरम-करम थिर राखण नै
आळस तक अबै करा कोनी
दुसमण छक्का छोडाया बिन
पग पाछा मरया धरा कोनी

सावरकरजी फिर जगा-जगा
छात्रा नै भेळा खूब करै
क्राती री करुड भावनावा
बस जण जणै रै माय भरै

जोशीला भाषण देय देय
सै हाल हिन्द रा बतळावै
काना री खिड्क्या खोल परा
महाराष्ट्र हाका मचवावै

पूना री एक सभा बोलै
थे वीर शिवा री औलादा
सगळी दुनिया जाणै इण नै
दुसमण खातर हो फौलादा

ज्यू शिवाजी मुगल शासन नै
लड़ आडो लाख दूर करया
सदा शिवराज सिंघासण नै ही
हाथा सू चकनाचूर करया

वा जेड़ी ताकत देखायर
गोरा रो काळो काटोला
भारत मा री बेड़या काटर
शेखाई कोई न छांटोला

लन्दन नै प्रस्थान

देशभक्त श्यामकृष्ण वर्मा
लन्दन रै माय रेवता हा
भारत रै वीर सपूता नै
पढणै मे स्हारो देता हा

इंडिया सोशियालोजिस्ट नाव
अखबार एक छपवाता हा
भारत आजाद करावण नै
पाछी भी नही ताकता हा

लोकमान्य भी कागज भेज्यो
सावरकर राजनीति तायी
श्यामजी पढूतर द कैवै
भेजो इण महिने रै मायी

कानून पढण इगलैड जावण
सावरकरजी हुय गया त्यार
सुसरोजी रावभाउ वा नै
रुपिया हजार दो दिया आर

९ जून सन १९०६ बम्बई रै
बन्दरगा ऊपर पूग जाय
विदाई देवण लोकमान्य
तिलकजी पधारया बैठे आय

इगलैड श्यामजी कृष्ण वर्मा
इडिया हाउस चलाता खुद
हा आर्य समाज कट्टर हिन्दू
भारत री लेता पूरी सुध

इगलैड माय रैय भारत
आजाद कराणो चाता हा
परचार करण भारतवास्या
सगळा सू आगै आता हा

इगलैड माय ही होमरूल
आदोलन हो चलवायोड़ो
अखबारा माही छाप-छाप
ण सगळा नै घलवायोड़ो

इगलैड ज्हाज सू उतर परा
इडिया हाउस तात्ये ठहरै
फ्री इडिया सोसाइटी सस्था
निज घर पर जैमाळा पहरै

परमानद सेनापति बापट
मदनलाल ढीगरा हरदयाल
वावा जोशी र महेशचरण
कोरगावकरजी मिलै चाल

हरनामजी रै ही आता ही
देशभक्ति सबमे तण जावै
सोसाइटी इडिया सस्था रा
मेम्बर सगळा ही बण जावै

सै इडिया सोसायटी माय
योजना बणावै मिल सागै
आजाद हिन्द करवावण नै
आपा नै आणो है आगै

सावरकर जोशीला भाषण
दे पहली मीटिग मे कैवै
हाथा मे सस्तर हुया बिना
भारत री इज्जत नी रैवै

दे हथियार हिद युवका
गोरा सू लड़वाणा पड़सी
थे कान खोलकर सुण लेवो
निज माथा घड़वाणा पड़सी

कानून पढण विद्यालय मे
बस नाव-मात्र ही जाता हा
ब्रिटिश लाइब्रेरी मे सगळो
राजनीति ध्यान लगाता हा

इटली क्रांतिकारी मैजिनी
जीवन ऊंची कोटि दीख्यो
बै लगन मगन हुय बैठ परा
जीवन चरित्र उण रो लिख्यो

सन १९०६ इतिहास अनेकू
पढता ही ध्यान भेरू करै
सिखा स्फर्तिदायक इतिहास
इक ग्रंथ लिख परा और धरे

सन १८५७ स्वातत्र्य समर
इंगलैंड लायब्रेरी लिख धरियो
अंगरेजी लूटा गदर बता
लिखियोड़े नै बदनाव करयो

सावरकर ग्रंथ मगल पाड़े
लक्ष्मीबाई कुवरसिंघ घड़्यो
बिहारकेसरी तात्या टोपे
अंगरेजा सू पहलो जुद्ध लड़्यो

गुपताऊ पुलिस पतो लागै
जब्त करावण री करै बात
सावचेत हुय पाडूलिपी
भारत भेजै हाथ री हाथ

छपवाणै रा सै करै जतन
बिन छाप्या अधविच मे लटकै
पूलिस सगळा छापाखाना
काबू करणै छापा पटकै

पाछी पूगै तात्ये पासी
आ वात कोई नीं लखै फेर
अनुवाद होय अंगरेजी मे
इंगलैंड पूगनै छपे फेर

हजारू किताबा भेजे फ्रांस
ब्रिटिश सरकार बतावै खपत
ऐलान गैरकानूनी कर
करवावै हाथोहाथ जपत

कई किताबा छानै छुपकै
सगळै देसा माया जावै
कई देशभक्त लुकाय परा
भारत रै माया भी लावै

मैडम कामा अर हरदयाल
उर्दू हिंदी पजाबी छपवावै
क्रांतीकारया नै पढा पढा
तात्ये नै हस्ती लखवावे

लाला हरदयाल हितकारी
काबू कर पाछी नी ताकै
अमरीका गदर पतर माही
धारावाहिक इणनै छापै

स्वातत्र्य समर सावरकर रो
लिखियोड़ो ऊंचो इतो चढै
ससतर क्रांति सू सजायोड़ो
गीताजी दायी समझ पढै

संस्करण तीजो इण ग्रथ रो
भगतसिंघ गुपचुप छपवावै
सब युवका म क्रांति लावण नै
घर-घर रै माही नखवावै

देशभक्ति ऊची कोटी री
पढता ही सै री निजर टिकै
तिन तिन सौ रुपिया मे पोथी
भरयै बजारा खूब विकै

आ साच बात है इतिहासू
सावरकर बात गजब कीनी
सुभाष बोस तो प्रेरणा ही
स्वातत्र्य ग्रथ सू ही लीनी

भारत आजाद करावण वै
वेधड़क चालकर मिलै आय
आजाद हिन्द फौज बणावै
विदेसा मायनै आप हि जाय

आजाद हिन्द रा सैनिक सै
पढ-पढ ओ ग्रथ सीख लेता
आजाद करावण मातभोम
मौतड़ली रै मूढै चढता

स्वातत्र्य समर पोथी पढ-पढ
युवक बधै हा आगै-आगै
ब्रीटिश शासन री आख्या मे
सावरकर तद खटकण लागै

कवितावा लेख क्रातिकारी
आछा-आछा मन बहलावै
इगलैड आयरलैड अम्रीका
तक भाव आपरा फेलावै

जर्मन सोशलिस्ट वण काग्रेस
सरदारसिंघ भीखजी कामो
श्रीमती रुस्तमा नै भेजे
अगवानी करण पैरा जामो

वै भाषण देय फिरग्या रो
मीटिंग रै माया फोड़ै भडो
आठ कमल लिख वन्देमात्रम
कामा उठ फैरावै झडो

रूसी क्रातिकारया सू दोय
लड़का नै सिखा बणाणा बम
बैठाय ज्हाज माय कैवै
भारत मे बणा दिखावो दम

पिस्तौल बणावण री पोथी
वै आता सागै लावै है
गोरा नै ढाक चढावण नै
वै बणा चलाय बतावै है

भारत मे भेजै पिस्तौला
कर बडा-बडा खोखळा ग्रथ
बलशाली बणावै युवका नै
गोरा रो करणै ताऊ अत

अगरेज पुलिस नै पता पड़ै
च्यारू पासी घेरा देवै
पिस्ताल भरयोड़ा पारसला
तल्लासी लेय पकड़ लेवै

स्वातन्त्र्य शताब्दी आधेटो
तात्ये मनवावे नी बिसरै
भारत बेटा तुकमा लगाय
इगलैड सहर माया निसरै

युनिवर्सीटी रो प्रोफेसर
तुकमा नै देखै चिड जावै
शहीदा नै डाकू बतळावै
भारत रा बेटा भिड़ जावै

काड रूप लै आदालन रो
लागै बात ऊची चढण नै
देश-दीवाना भारत बेटा
नी जावै कोई पढणै नै

इगलैड सभा तात्या टोपे
झासी राणी खातर कैवै
बिहारीकेसरी कुवरसिघ ही
शहिदा नै सरधाजळि देवै

सावरकर कैवै भाषण मे
इक बात आज थानै कैणी
शहीदा रै मारग पर चालण
सब नै सागन पड़सी लेणी

गोरा रै जुलसी सासन नै
जद तक लड़कर कै नीं ढवा
आ भीष्म प्रतिज्ञा है म्हारी
सुख सू रोटी म्हे नीं खावा

गोरी सरकारा पड़ै पतो
थे पुलिस नीं पाछीनै ताको
सावरकर जुलम करावै है
पग पग पर निगराणी राखो

नी बरती थे सावळचती
थारी निजरा सू बचरयो है
बहकावै भारत-युवका नै
इण कारण हाको मचरयो है

रूस फ्रास चीण अर अमरीका
स्पेन भेजे तात्ये छपण लेख
भारत आजाद करावण नै
मिल करै समर्थन सभी देख

इगलैड देस रा छापा भी
तात्ये री बाता साख भरै
ओपै बाता आजादी री
घण दाब्या आ नै नहीं सरै

करजन वायली रो वध

मदनलाल ढींगरा सग तात्ये
इडिया हाऊस रै माय मिलै
देशभक्ति अर क्राति भावना
दोनू मन बिगसै फूल खिलै

मदनलाल ढींगरा भारत नै
आजाद करावण करै बात
सावरकरजी खुश होय परा
बेधड़क मिला लेवै है हाथ

तात्ये कैवै ओ काम विकट
अर चिणा चावणा है लौ'रा
तूफाना भचभेड़ी लेणी
फूका सू उडै नही धोरा

ढीगरो रीस मे आ कैवै
देसू मै थानै पुरो साथ
मनचाहि परीक्षा लेय सको
आ कहकै आगै करै हाथ

ऊंधो हो उण रै मन रो वळ
बो क्रांति राह रो राही हो
खुद नै बो फक्त समझतो हो
भारत रो एक सिपाही हो

अंगरेजा भारतवास्या पर
अणगिणती रा है जुलम कर्‌या
बै म्हारी छाती वण्या घाव
ओजू लग भी वै नहीं भर्‌या

मै तो बलिदानी बकरो हू
बो बदळो लेणो चाऊ हू
भारत-मा री सौगन खाऊ
थानै आ बात बतावू हू

सावरकर हाथळ मे सूओ
तीखो घुसेड दै डरै नही
ढीगरो मुळकतो ही रैवै
चुसकारो तक वो करै नही

सावरकर मगरा थापी दै
तू क्रांति मारग पर चाल सकै
है मनै भरोसो अंगरेजा
नाका मे नाथा घाल सकै

1 जुलाई सन १९०९ लंदन रै
जहांगीर हॉल ढीगरो जार
सर करजन वायली गोरै रै
छाती मे गोळी देय मार

इण तरिया सू भगदड माचै
गोळी रो सुणकै गरणाटो
सगळा-ई कांपणनै लागै
च्यारू पासी हो सरणाटो

हक्का-वक्का सै हुय जावै
पुलिस भागे पकड़ण नै लार
इंडिया हाऊस माही बड़ता
ढीगरै नै करलै गिरफ्तार

हौसलो युवक रो निरखै जद
अंगरेज सभा मे करै बात
आ लखणा तो भारतवासी
आपा नै मारै करै घात

अगरेज भगत भारतवासी
पख लेता बारी नही डरै
टुकड़ेलू कुत्ता सरे आम
इण हत्या नै भूडी सदरै

गोरा रो चमचो आगा खा
कर शोकसभा आ नै बरजै
सावरकर उण री बात काट
सिंघ वण्यो बीचाळै गरजै

पामर नामी अगरेज एक
तात्ये रै मुक्को मारै दौड
हिंदवाणो युवक छडी सू ही
मारी अर माथो दियो फोड

विसवास हुयो तद गोरा नै
ओ काम इयै करवायो है
मदनलाल ढीगरै नै कैयो
सर करजन नै मरवायो है

सावरकर टायम्स पत्र म
शोकसभाई बतावै खोटी
पढता ही तो अगरेजा री
हो जा हराम खाणी रोटी

मुकदमो ढीगरै पर चालै
वहस अदालत हुवै खासी
गवाह वणावै हत्या रा
लेजा कर दे देवै फासी

फासी पर चढणै सू पैला
निज फरज बताता वो कैवै
दश री इज्जत ईश्वर इज्जत
अपमान भगत कीया सेवै

गोरा जद मारया हिंदुवा नै
सरकार कान ढेरया कोनी
मै सागी बदलो लीनो है
कोई अन्याय करयो कोनी

तीनू भाई जेल मे

तात्ये री पोथी महाराष्ट्र
आजाद भावना पनपा दी
गोरा सू गिण-गिण बदळा री
मन-मिटण कामना सिलगा दी

पूना रै गोरै जिलाधीश
रैंड साब नै रोक्या राखै
भारत रै युवका री गोळया
भिटा मे ही आडो नाखै

पछै जगा-जगा गोरा रा
मरता ही जावै अधिकारी
भारत अर दुनिया रै माही
मच जावै तहलको तद भारी

विजयानद नाट्यगृह नासिक
पार्टी विदाई री गूजै
कुरसी बेठी जैक्सन-वीबी
कान्हेरे गोळया सू भूजै

आ सुण-सुण भारत-वेटा रै
मन माय खुशी फेरू जागी
लन्दन सू भेजी सावरकर
पिस्तौल बतावै जद सागी

कान्हेरे रै मूढै पर तो
घरआळा नै दीखै हासी
गीताजी हाथा लेय परो
चढ जाय मतै ही बो फासी

अगरेज अफसरा लियो जाण
तात्ये ही ऐ करवावै है
भारत युवका पिस्तौला दे
अगरेजा नै मरवावै है

महाराष्ट्र रा सरकारी
अफसर भी घणा-घणा अकडै
अग्रज गणेश सावरकर नै
क्रातिकारी बता परा पकडै

जेक्सन रो हत्यारो कैवै
क्रातिकारया सू वता मेळ
पकडै है उण नै सरे आम
आजीवन देवै सजा जेळ

गणेश दामोदर सुणर बात
हाकम बतावै ओरू खपत
सघाई रै मू पाटी बाधी
सपत्ती सगळी करी जपत

तात्ये रा साथी तद बोल्या
था रै भाया नै पकड लिया
आजीवन सजा सुणाय परा
सपत्ति जपत कर जकड लिया

वै सुण पाछा यू मुळकाया
म्हारी तो आ ही वाणी है
भारत मा वेड्या कारण नै
परिवारा भेट चढाणी है

कीं दिन पाछै बै सुणी खबर
भाई नराण नै लियो झाल
ले जाय जेळ मे कियो बद
होरया है लारै बुरा हाल

तात्ये बोल्यो ओ हुयो ठीक
है था देखणै लायक सीन
स्वातत्र्य लक्ष्मी आराधना
म्हे तीनू भाई हुया लीन

भाया रो पकडीजण सुणकै
आख्या नी आसू टपकावै
पण हिवडो पिघळै मोम सरिस
भावज रो दुख मन दरसावै

कागद लिख वीरपणो छळका
भाभी नै धीरज सजवावे
किस्मत वाळा निछरावळ हुय
मावा री कोखा पुजवावै

दातारी देखा म्हे तीनू
दुख भारत मा रा धोवाला
देवा-सी शोभा पाय परा
इतिहासा अम्मर होवाला

कै मिनख इसा होवै भावज
सूलखणी वेला लाग खिलै
दुनिया सू सौरम नी जावै
धरती चरणा चढ सुरग मिलै

म्हे तीनू भाई फूल कमल
मरणै सारु कसली कम्मर
श्रीहरि चरणा चित लगा परा
भारत-भूमि होसा अम्मर

सावरकर री ऐ ओळ्या पढ
घणकरा क्रातिकारि परिवार
बलिदान देश पर होया
मन माया धीरज लेय धार

म्हारो नी वाको होय वाळ
मन माय मती करजो धोखो
निछरावळ दुवणो भारत पर
नीठा आयो है ओ मौको

गोरा री पूलिस हाथ धोय
सावरकर रै पड़ जाय लार
साथ्या कैणै इगलैड छोड
पेरिस रै माया रैय जार

साथ्या नै छोडै खतरै मे
जाणो जद आछो नी लागै
इगलैड धरा पाछा पूगै
बलिदानी भाव हियै जागै

श्यामजी कृष्ण पेरिस माया
रैवण रै ताई कै वा नै
चिता रै माया पड जावै
सावरकर रो मन नी मानै

मन नीं लागण रै कारण सू
इग्लैड गाडी चढ जाय चाल
१३ मार्च सन १९०९ ठेसण
लदन री पुलिस लेवै झाल

भारत रो अगरेजी शासन
थरप्या उण माथै पाघ काड
ब्रिटिश सम्राट वचित प्रभुसत्ता
करवावण ताई देय भाड

छानै-सी सस्तर बटावणा
करजन हत्या करवा कैणो
भारत लदन मे १९०८ मे
राज देशद्रोह भाषण देणो

ऐतिहासिक मृत्यु-पत्र

लगार लारला कयी लाछण
ब्रिटिश जेळ माय भेज देवै
आपा नइ फासी चढा सकै
सावरकर हि मन सोच लेवै

वै निज भावज नै मृत्यु पत्र
मराठी भाषा रे माय लिखै
इतिहासू कविता रै माया
चमकाता सगळा भाव दिखै

आभै मै वैसाखी चन्दो
चादणी खिले मुळकै गमकै
हाथा सीची ही वेल लाल
डाळ्या बिगसे फूला महकै

गोकळ रै दायी घर-आगण
आनद मगळ ही नाचै हो
से सगा प्रसगी आयोड़ा
था मन मेंदी-सो राचै हो

वा युवका रो आदर्श देख
हियड़ फूला ज्यू खिलस्या हा
प्रेम-चरित सू उमगाता
आपस में सगळा मिलस्या हा

वेला अर गाछा ज्यू ओ घर
खुसिया सू सोभा देतो हो
थारै हाथा फुरवा भोजन
मन जीम उछाला लेतो हो

जीमै सगळा सागै रळमिल
चादणी दूधिया वैठ परा
आपस माया वाता करता
तो मनड़ा होजा ताइ हरा

श्रीरामचन्द्र वनवास-कथा
इटली नै स्वतत्र वताता
आपा काना सू सुण करकै
देशभक्ति मन मयी जताता

कदेई कदेई चित्तौड उपर
सनिवार बाड ध्यान जाता
वीर तानाजी रा गीत म्हे
सगळायी बैठ परा गाता

इसै बगत अनाथ माता रो
जद सुमरण करणो ही आतो
दुसमण नै छिन्न-भिन्न करण नै
द्रवित मन म्हारो उछळ जातो

प्यारी भावज रमणीक अवसर
वो प्रियजणा मधुर सहवास
वै चन्द्रप्रकाश नव कथाया
दश मुक्त करावण खास बात

थानै याद या म्हनै याद
युवका सघ बात केयोड़ी
म्हे बाजी प्रभु वणकै रेसा
आवै याद सगळी रैयोड़ी

हाथा माया हथियार लेय
देश रै खातर ताणा तणसा
अर क्यो लुगाया चित्तौड़ री
वीरागण्या से म्हे वणसा

प्यारी भावज! म्हे ओड़ वरत
आधा वणकर नईं कियो है
ओ सतीवरत सत राखण म्हे
कीं सोच-समझकर लीयो है

देवी वहिनी! प्रियजना सागे
प्रतिज्ञा कीयोड़ी याद करो
म्हे सतीवरत धारण कीनो
बी माथै थोड़ो ध्यान धरो

हे प्यारी भावज! कागद पढ
थे समझ गया सगळो कारण
थाँरै बलबूतै रै माथै
म्हा सतीबरत कीयो धारण

मायड़ रो दूध लजा करकै
नी बस लजाणो करा काम
से कवितावा मे करू भेट
था चरणा च्यारू समझ धाम

थे देखो आठ वरस माही
इज्ञत सू देश सजायो हे
गोरा री नाका नाथ घाल
डको ससार वजायो है

हेमाळै सू कन्याकुमारि
म्हारी पेठ सवाई जचगी है
भारत आजाद होवण ताई
इण तरिया हलचल मचगी है

ओ राष्ट्र दीनता ने त्यागी
वीरता ग्रहण करतो रयो है
निराशा त्याग परो आगै
धीरै-धीरै पग धररयो हे

रघुवीर चरण मे भक्ता री
अणगिणती भीड़ लागोड़ी है
यज्ञकुड जान झोकण ताई
भावनाइ खूब जागरी है

इण यज्ञकुड मे हुताशन
प्रदीप्त होतो निजर आवै
कुण-कुण देसी आहुति कैवो
ओ सगळा सू पूछ्यो जावै

समग्र विश्व मगल सारु
कुण आहुति देसी बोलो आर
ले हाथ निमन्त्रण कयो गरज
कुळ म्हारो सगळो हुयो त्यार

आ बात कैय चुक्या प्रभु समान
नटकरके बणा नही दोसी
बज्रर-सा सगळा ऐ सरीर
निछरावळ धरम तणा होसी

ओ कैणो अरथहीन भाभी
यातनावा लारो नी छूट्या
म्हे सहवा किरतव समझ-समझ
हौसला अजू तक नीं टूट्या

निष्काम कर्मयोग म्हारो
खाडो होयर नी दे पाछी
प्रियजणा सामनै परतिग्या
आख्या देखी होरी साची

म्हे मा नै मुक्त करावण हित
यज्ञकुण्ड मे सरबस खोया
मन माय खुसी महकावै है
मुगती रा हकदारी होया

हे मातभोम था चरणा पर
तन-मन धन अरपण कर रयो हू
नमन करन्ता कोटि-कोटि मे
कवितावा आगै धर रयो हू

ई खातर ही थारी सेवा
भगवान री सेवा है दिखरी
कान्ता भावज अग्रज अगनी
रै भेट कलम कर है धर री

सिर पाप उतारण नै थारो
दुसमण पर करवावणै वार
म्हारो तन भेट चढावण नै
चौबीसू घटा रहू त्यार

भाई जे सात हुया होता
वीज गजब क्राती रा बोता
दुसमण रा छक्का छोडाता
थारै चरणा अरपण होता

तीस क्रोड़ बेटा भारत रा
मातृभक्ति मे लाग्योड़ा है
नी सुख री सेजा वै सोवै
दुख मेटण नै लाग्योडा है

म्हारो भी कुळ वैरै माया
ईश्वर रै अस समानी है
निरवस होय करकै अखड
होया गीता रा ज्ञानी है

चाहे वश अखड हो ना हो
मातृभूमि री सुध नीं खोया
प्रज्वलित अग्नि मे माता रा
म्हे बन्धन तोड़ अमर होया

प्यारी भावज इण तरा समझ
कुळ री सफलाई जाण लिया
वीरागनावा बणणै तायी
मरदाना ताणा ताण लिया

इण तरिया रा है करया काम
भारत रा लोग नही भूलै
तो म्हारी छाती गौरव सू
बोलो आवज क्यू नी फूलै

अगद दाई पग रोप परा
क्राती रो जाचो जचा दियो
थे खुद रै काना सुणस्या हो
ससार तहलको मचा दियो

मे निधड़क सूतो सुपनै मे
सकळप कर जीवन दिया दान
सिर माथै मौत घूमरी है
ओ था सगळा नै हुयो ध्यान

श्री पार्वती हेमाळै री
चोटी माथै तपस्या कीनी
कै रजपूताण्या जौहर मे
बै जान आपरी दे दीनी

भारत री नारद्या रै माया
थे जोस हिलोरा जाण लिया
थे भी तो बणो वीर ललना
भावज अब छाती ताण लिया

कायरता मन मे मत लाया
प्राणा सू हाथ पडै धोणा
सतिया रै जैड़ा ही विचार
थारा भी चाहीजै होणा

ओ देय सनेसो मै म्हारो
इण भेळो ही ओ काम करू
गगा सम चरणा पर थारै
हू प्रेमसहित परणाम करू

म्हारी प्यारी जीवनधण नै
छाती चिपाय थे दिया प्यार
लाड लडाय वेटी समझ्या
खाँडै सी सूतो कहू धार

इतिहास हि रूप आजकै रो
दिव्य दाहक कठा गायो है
ओ सतीबरत प्यारी भावज
म्हे सोच-समझ अपणायो है

समुन्दर मे तिरणो

लन्दन रो जज सावरकर नै
भारत जेळा भेजै पाछो
कै अठै मुकदमो नी चालै
भारत मे जचवावो जाचो

इगलैड मोरिया जाझ माय
तात्ये नै बिठाय लावै है
गोरा रै हाथा बन्दूका
पहरा बा उपर लगावै है

हो जाझ माय बो बन्द सिघ
छूटण ताई वो तड़फावै
सोचत-सोचत ही भेजै मे
इक बात याद आ झट आवै

छत्रपति सिवाजी औरगजेब
सू मात तो हरगिज न खावै
गोरा सू छूटण रै तायी
हुसियार तातियो हुय जावै

मन लेय धार अग्रेज जेळ
आपा नै नी जाणो पाछो
ऐ मार-मार सिट काढैला
इण सू पैला मरणो आछो

फासी पर चढणै सू पैला
सिपाहिया सू दो हाथ करो
भारत मा चरणा धोक लगा
कूद समदर क्यू न मरो

गोरा सू पीडो छोडावण
मन माया पूरी लेय धार
कीं राख भरोसो किस्मत पर
मरतै दम मानो मती हार

८ जुलाई सन १९१० मारीशस
बदरगा नेडो पूग जाझ
सावरकर करै वहानो इक
टट्टी मे बडै न देवै राज

वै सोचै जाझ बदरगा रै
नेडो नी बेगो पूग जाय
पकडै सठो वै पोर्ट होल
समदर रै माया कूद जाय

जद मालम पडै सिपाया नै
कापण लागै ओ देख हाल
हिम्मतआळो भारती बता
मू मे आगळिया लेय घाल

सावरकर तिरै चुभ्या खावै
जान बचावै समदर मायी
गोळ्या री बौछाड़ा करदै
गोरा उणनै मारण तायी

मीला तिरता सासा फूलै
गोरा सू मात नही खावै
छोळा सू टकरा लेता ही
सागर तट नेडा लग जावै

राखै है जिण नै सावरियो
नीं मार सकै है भळै कोय
आ खरी चालती है कैबत
सगळो जग बैरी चाये होय

समदर तिर काकड प्रत्रस घाट
किनारो निसर नेडो लेवे
सामै ऊभै फ्रासीसी नै
तात्ये खुद नै पकडण कैवै

गोरा रा बदा बोट लेय
पूगै झट लारै पकडण नै
खूखारपणो देखो तात्ये
सामो खड लागै अकडण नै

तो चोर-चोर बै चिरळावै
बन्दूका रा मू लिया ताण
फ्रासीसी पाछा ही सूपै
सावरकरजी नै चोर जाण

देखाळ सिपाया सू हिम्मत
हाथापायी कर खूब लडै
घणकरै सिपाया रै आगै
एकलपा री नी पार पड़ै

वेड़या पैरावै पगा माय
हाथा हथकड़िया घाल फेर
बैठाय जाझ मे तात्ये नै
भारत पासी दुर जाय फेर

सावरकर रै पकड़ीजण सू
क्रातीकारी घम घम घमकै
ससार माय तकड़ी घटना
विजळी रै दायी बण चमकै

छापा गोरा रै राजस रा
दुनियाभर नी पाछी राखै
सावरकर रो ओ चमत्कार
पैलड़ियै पेजा मे छापे

की छापा तो आ बाता नै
खास बात इक कैय जतावै
इक भारतवासी रो साहस
दैवी घटना सी समझावै

अमरीका रूस फ्रास जरमन
कानून बताय परा अकड़या
दूजा री काकड लाघ परा
तात्ये नै गोरा क्यू पकड़या

आ सगळी दुनिया जाणै है
है भारत देस नही छोटो
दूजा री काकड़ लाघ परा
अगरेजा काम करयो खोटो

फ्रास भूमि मे पकड़ीजण रो
मुकदमो अदालत हेग गयो
घणी हुई वहसा पण निरणै
सावरकर रै पख नी रैयो

अग्रेज पत्रकार भी वदी

लदन तात्ये रा लिख्या लेख
विद्वाना जादू काम करै
हालैड पत्र स्वाधीनता री
सै आन्दोलन री साख भरै

इगलैड रा नामी पत्रकार
गाय आल्ड्रेड लिख जतलावै
हिद स्वाधीनता आन्दोलन
खुलकर बै साचो बतलावै

गोरा री जेळा रै माया
फटकारा हटर री सैवै
चोड़ै-धाड़ै साची कैवै
मूढै कैनै की नी कैवै

हेराल्ड रिवोल्ट फ्री वूमन
सपादक भापण जदै सुणै
पत्रकार सगळा ही विमकै
सावरकर सामे माथ धुणै

रिव्होल्ट पत्र माया छापै
तात्ये मन सू नी जाय दूर
देस दीवाना भापण सुणकै
सब भरम होया चकनाचूर

१८५७ मे भारत माही
जा जुध होयो वो हो साचो
से लोग विये नै न्याय कहै
थे झूठ वताय किया नाचो

लख करतब क्रांतिकारिया रा
सगळी दुनिया आ ही कैवै
गोरा रै सासन मे भारत
अब घणै दिना तक नीं रैवै

गाय आल्ड्रेड रा लेख पढ्या
गोरा रा होवै खडा कान
पल्टन नै लारै लगा परी
खतरै मे देवै लाख जान

तात्ये पोथी स्वातन्त्र्य समर
छापण माथे प्रतिबंध लगा
सन १८५७ लिख्यै माथै
प्रेसा मे पुलिस देवै भगा

श्यामजी कृष्ण इग्लैड भेजे
सै छापण ताई मना करै
समर ग्रंथ क्रांतिकारी बताय
प्रेसा रा लोग लुकाय धरै

इंडिया सोशियोलाजिस्ट ग्रंथ
आल्ड्रेड निज पत्र माया छापे
सासन रै हुकमा टाळ परो
कचरै भेळो फाड़ै नाखे

आल्ड्रेड करै मनमानी तो
ब्रिटिस सरकार ताव खावै
सै बात करै एक पत्रकार
आपा रै काबू नी आवै

ब्रिटिस सरकार देसद्रोही
बताय उडावै खूब गद
मूंढो बंद करणै रै ताई
कर देवै जेळा माय बंद

सावरकर रो हेताळू कह
लाछण बै घणा लगा देवै
गद्दार देस रो बता परो
मुकदमो भळै वै कर देवै

मुकदमो कई महिना चालै
आल्ड्रेड पैरवी करलै खुद
भारत आजाद करावण री
हाकम नै बता दिरावे सुधा

भारत आन्दोलन लुकावणो
इतिहासा अन्याय करणो है
सचाई पर पड़दो नाखणो
अर घड़ो पाप रो भरणो है

वो स्ट्रीट वेली न्यायालय मे
पोत खोल जाचो जचा दियो
झूठा रो मूंढो काळो कर
वा विश्व तहलको मचा दियो

लन्दन पासी सावरकर नै
कर बद जेळ पेला देवै
सावरकर अर गाय आल्ड्रेड
दुख दोनू ही सागै सैवै

जेलर नै केवै ऐ दोनू
इणगी-उणगी नी हिल लेवै
सावरकर आल्ड्रेड दोनू
आपस म वे नीं मिल लेवै

गाय आल्ड्रेड जेळ सू छूटै
बारै री खबरा जाणै है
सावरकर समदर कूद तिरयो
दैवी सगती कह सरावे है

पाछी नी ताकै सजा भुगत
दुनिया री भूडाई ओढै
मिनखपणो देखाळै सगळा
सावरकर सरधा नी छोडे

भगत बणै अर लिखै लेख
आ कुळ नीं होयो इसो वीर
किसन बण्योडो बधा रयो
भारत माता रो आज चीर

देशप्रेम ओ दिखा दिखा
गोरा रो पकड्यो है पूचो
भारत रै माया देशभगत
आ जैड़ो होयो नी ऊचो

सावरकर रै दुख पावण सू
भारत आजादी पाई है
बा सिद्धाता री छिया आज
दुनिया री माया छायी है

अभ्यासू बुद्धि महान हुया
पडिया कैवाया हा महान
हिन्दी अर विश्व प्रेरणा हा
जाणे आ सगळो ही जहाज

देवा जैड़े गुण कारण ही
मिनखा समाज दरसण कर स्या
भारत री इज्जत राखण नै
पग मौत सामनै बै धर स्या

भारतवास्या रो बणै फरज
आजादी मायै ध्यान धरै
इण देस-समाज दिवानै रो
सावरकर रो सम्मान करे

दो आजन्म कारावासा रो दण्ड

मुकदमो अदालत बणाई
सावरकर माथै चला दिया
१५ सितम्बर सन १९१० नै
चालू कर केई घला दिया

मुकदमा तीन न्यारा न्यारा
मत पूछो सागे ही घाल्या
पहले मे ३८ अभियोगी
नाव कया रा बै हा घाल्या

दूजै रे माया सावरकर
गोपाळराय पाटकर भोगी
तीजै र माया सावरकर
एकलपा हा बस अभियोगी

गोविन्दराय गाडगिल चित्र
करी मुकदमा पैरवाई
कुण-कुण कैरा होवै वकील
आ आगे बात सुणो भाई

अर एडोकेट जनरल जार्डिंग
वेलिंगकर निक्सन आर खडै
सरकारी बण करकै वकील
मुकदमो सागै खड्या लडै

पहले मुकदमै सावरकर नै
ऊमरभर सजा सुणा देवै
जैक्सन री हत्या करवावण
मुकदमो चला ओरू कैवै

२३ जनवरी सन १९१० नै ही
मुकदमो चालू होवै फेर
३१ जनवरी नै उमर कैद
हाकम सुणावै बानै फेर

जजा आपरै उण निरणै मे
तात्ये नै दोसी ठहरावै
अगरेजा पर षड्यत्र रच्या
झडा रै दायी फहरावै

ऐ इता भयकर दोसी है
आरोपा मे है इत्तो दम
कानून बात आ बतळावे
फासी री सजा भी हुवे कम

हाकम बदळै पण हुक्म नहीं
आ बात बताया अवै खास
म्हे सोच-समझ कर दीनी है
तात्ये नै ऊमर कारावास

दो उमर कैद सुणकर तात्ये
ओ हुक्म हाकमा बता दियो
हिन्दू सिद्धान्ता पुनरजनम
सरकार ब्रिटिश री मान लियो

ओ निरणै मिनख हजारू ही
सुणणै रै तायी आया हा
सावरकर उमरसजा सुण कै
सगळा रा मु मुरझाया हा

सावरकर एक मित्र नै कह
मै आपो आप नै कहु दोसी
त्याग और बलिदाना सू ही
स्वातत्र्य लिछमी खुस होसी

जनता जय बोले अर कैवे
था राखी देस री जाति लाज
घर सुख सपत्ति त्यागी तीनू
सिर काटा लीनो पहर ताज

तात्ये हथकड़िया पैरोड़ा
हाकम रै साम्हे कैय गरज
निछरावळ देस ऊपर होणो
कुड़ जनता रो भी बणै फरज

सावरकर सजा सुणायोड़ी
सगळी दुनिया माया पूगे
भारत रै बच्चे-बच्चे रै
हिवडा दुख सूरज बण ऊगे

तात्ये रै काम कियोड़ा पर
दुनिया री निजरा जदै टिकै
लाखू ही कागद गोरा नै
छोडावण खातर भळै लिखे

कागद म सगळा आ मांडे
था करया जुलम सै याद करो
म्हे भगा परा थानै रैसा
सावरकर नै आजाद करो

लखणा रा लाडेसर गोरा
पत्रा सामै जोवै कोनी
सावरकर नै आजाद करण
वै टस सू मस होवै कोनी

सजा सुणा अडमान जेळा
डोगरी जेळ माया नाख्या
जदै लोकमान तिलकजी नै
इतिहासू वकर मे राख्या

बन्दी जीवन

इक कमरै माही बन्द करै
आ सगळी रस्सी कूटैलो
खावणनै रोटी पछै मिलै
कूट्या ही लारो छूटैलो

महाकाव्य लिखण री जेळ माय
सावरकर मन मे लेय धार
इछया आ पूरी नही हुवै
बिन साधन रै नीं पड़ै पार

गुरु गोविन्दसिंघजी रै ऊपर
बै कवितावा लिखकै धरलै
गीता रै माया ढाळ परा
कमरो पूजा कठस करलै

बारी घरवाळी मिलणै नै
आवै अर सागै हो साळो
बे दोनू सावरकर निरखे
ऊभै रो देखै ढग-ढाळो

कैद्या रा गाभा पैरयोड़ा
सरिया लारै जद ऊभा पति
आख्या देखै वा दुख करै
इक देसभगत री खड़ी सती

हाथा मे हथकडिया गहणा
पैरण बै कैद्या रो पहरेस
सावरकर ने निरखै धरणी
हिवड़े पर लागै जबर ठेस

पाच बरस पेला बा पति नै
बदरगा छोडण आई ही
परदेस जावते नै देख्यो
मन फूली नही समाई ही

मन माया सोचै ही ऊभी
पढ ऊचो ओधो ऐ पासी
सपनो साचो होसी म्हारो
बैरिस्टर बणकर कै आसी

मोटै-मोटै सरिया लारै
देखै मन मे दुख रळकावै
आपस मे चौनिजरा होवै
आख्या सू आसू ढळकावै

घरआळी रा आसू देख्या
हीयो भरै गळगळा होवै
धीरज बधवावै प्रेम जता
देखाळ वीरता मन मोवै

तू मने ओळख्यो दूरा सू
आ बात समझ मे अब आयी
आ कपड़ा सरदी नी लागै
है घणा-घणा ऐ सुखदायी

माई महान ही पतिवरता
अर देशभक्त हिन्दू नारी
पति गौरवता रै कारण ही
दुख झेलै हिम्मत नीं हारी

सावरकर हिम्मत बधवावे
किस्मत म्हारी है कुण खोसी
भगवान भरोसो है प्यारी
आपा फेरू मिलणो होसी

बेटा-बेटया नै जलम देय
कोई भी सुख नी पाया है
चिडी-कागला भी घर ऐडा
तिणका चुग घणा बसाया है

सतोस सबूरी धार-धार
दुख सू भेटा करणा सीखो
बिन देसभगति रै हे प्यारी
मिनखापण लाखीणो फीको

परिवार सजावण रै तायी
म्हे बडो अरथ नीं खोयो हा
मौतडली सामै पग धरकै
कुण केवै सफल न होया हा

परिवार दुखी करणै सारु
मै खुद नै मानू हू दोसी
पण लाखू ही परिवारा पर
सुख री बिरखा आगै होसी

भारत रो बच्चो -बच्चो ही
सुक्खा रै मारग भागैलो
बलिदान दियोड़ो उणी दिना
भारत मे घणो फळापैलो

सावरकर री आ वाणी सुण
घरवाळी कह था करयो नाव
गौरव सू निरभय हुय कैऊ
था चरणा म्हारा चार धाम

दुनिया देखै थे सुख त्याग्या
वेधड़क दुखा पग धरया हो
मे वडभागण मानू खुद नै
थे घोर तपस्या करया हो

है इयै बात री घणी खुसी
इक मिल्यो देवता जिसो पती
खुद सागै मनै उजाळी बो
इतिहास बतासी मनै सती

मानू पग धरा मौत साम्है
सुख आपा हाथा सू खोया
परिवार सजाणे रै लेखै
म्हे भाई तीन सफळ होया

ससार सुखी विचार करणो
प्लेग रोग सिकार होय मरै
घर विन दिवला रै हेय जाय
धानणो न लारै कोइ करै

फेरा लेती वेळा ही तो
नूवै जोड़ा नै ग्रसे काळ
दुखड़ा सू लड़णो भी सीखो
जीवन नै मारग धरम ढाळ

देखै मिलाप पति-पत्नी रो
जेलर आपस मे हुवै दग
प्रेम हुवै तो यस इसडो
सब करै अचुभो देख ढग

डागरी जेळ सू तात्ये नै
भायखला जेळ भेज देवै
भायखला जेळ रै माया भी
रस्सी कूटण रो ही कैवै

करवाता दौरो इतो काम
आराम करण नीं हा टिकता
तीखी कातळ री चूचा सू
भीता पर कवितावा लिखता

लिखता अर सागीड़ी लिखता
छद- अलकार वा मे भरता
गुजाय परा उण कोटड़ती
सुर सजा परा कठस करता

भायखला जेळ सू पाछाई
ठाणे जेळा ले जाय धरै
दुख पाया माझी जन्मठेप
पोथी लिख दुनिया थीच करै

जिण कमरै मे राख्या वा नै
पहरै पर राख्यो वार्डर नै
सूकोड़ी रोटी बुस्यो साग
जुलमीड़ा देता खावण नै

बाजर री रोटी खाटी-सी
पाणी गुटका गिटणी पड़ती
नी पचती पूरी पेट माय
कठा रै माया चुभ अड़ती

कैया सू सै रीसा बळता
गुपचुप थाळी सिरका जाता
पाणी रै गुटका रै सागै
बै चाब-चाब करकै खाता

ठाणे जेळा मे सावरकर
दुख भौत घणा ही सेवै है
पण बोल परा अर मूंढे सू
कैनै ई की नी कैवै है

सावरकर तो नारायण नै
कागद लिख वार्डर सागै दे
हिम्मत वधावण रै खातर
सागीड़ी बाता लिखकर कै

जे पाच-सात बरसा माही
परिवार लाण मिलसी मौको
अपणाऊलो ज्ञान व्यसन
अर काम करूलो मै चोखो

फेरू जे भारत पुण्यभोम
माटी माथै पग सक्यो राख
रचना करस्यो जिण महाकाव्य
जग माहीं उण री जमै धाक

छोटो भाई भी उणी जेळ मे

इक दिन छानै-सै वार्डर आ
अर बात कान माया कैवै
था छोटो भाई नारायण
दुख इये जेळ माया सैवै

नारायण नै लार्ड मिटो पर
बम फैंकण जुलम लगा झालै
अहमदाबाद सू पकड़ परा
लेजाय जेळ माया घालै

मोटै भाई दामोदर नै
भेज्यो पैला काळै पाणी
घर माया चिन्ता उमड़ पड़ी
वेजा ही होवै है हाणी

प्राचेतस तत रामायण मित
मैथिलेयो कुशलवो जगतुर्ग
कै औरा नै करवा कठस
मूंढै सुणवा सू लिख्यो सुरग

मूंढै सू दुनिया जद सुणसी
कीयोडो काम रग लासी
गीता अर रामायण दाई
घर-घर रै माय पढ्यो जासी

आ हुवै लालसा फळीभूत
ईयै ही मारग पर बहसू
मरतै दम पाछी नी ताकू
अडमान जेळ जीतो रहसू

इक जलम जेळ काट्या पाछै
छोडै जे काढे नही बार
मरणो अर जीणो अठै मनै
आ मन मे पक्की लिवी धार

थे चिता मन मे करया मती
दुनिया इक सपनै-सी माया
क्राती री लाय लगाई है
इण माय झोकणी है काया

भाई रो कागद पढता ही
नारायण मन धीरज दौडे
वज्रर-सी छाती कर लेवै
मरणै सू मूढो नी मोड़ै

दूसरो परिच्छेद

गोरा तात्ये सू होय दुखी
महाराजा जाझ उणै चाढै
भाई तक सू नीं देय मिलण
अडमान काळै पाणी काढै

पोर्ट ब्लेयर काळ कोटडी
१२३ न माया बानै राखै
सूकी रोटी बुसोड़ो साग
थाळी मे धर आगै नाखै

लाहिडी भाई परमानन्द
बगकेसरी क्राति आसूतोस
हरदयालसिग अर परमानद
झासी सू मिलता चढै जोस

अण्डमान मे सावरकर
परमानद जितरा दुख सैया
लिखिया पढिया कापण लागा
मूढै सू जावै नही कया

ऐ भारत रा लाडल बेटा
काई काई दुख नी सैया
भारत री आजादी खातर
धर मौत हथाळ्या मे बैया

अडमान नारगी बै भोगी
पोथी मे वरणन कीयो है
जीवन हो कारावास माय
तात्ये उण ववंडै कीयो है

वै नरक भोगियो जेळ माय
माडी आ जीवनकथा बात
म्हे न्यारा काळ कोटड्या रह
काटी नीं सुख री एक रात

बोलण री जिण हिम्मत होती
उण काधा भार घणो धरता
हाथा हथकड़िया घाल परा
तावडियै मे ऊभो करता

न्हावण या जीमण री बेळा
जे सेना कर लेतो कोई
बेड्या देता बै पगा घाल
डडा रि सजा पातो बोई

घाणी चलवावण जेळ माय
काधै पर लकडो धर देता
बळधा रै दाई जोत परा
घाणी सू तेल निकळवाता

बो कारावास कहाणी मे
वरणन कीनो है जोरदार
कोई जे चालत थम जावै
हटर री पडती और मार

घाणी रै माया जोत परा
वै तेल काढणो दियो काम
तो झूठ बोलणो महापाप
कइया नै आतो याद राम

सबसू दौरो ओ काम हुवै
फिरवाणो जेळा मे घाणी
आछै सू आछै कैदी रो
घाणी मे परखीजै पाणी

घाणी माया तिल पडता ही
भारी हो जाती एक बार
जे नटी घलाता उणनै तो
हटर री पड़ती और मार

जे कोई थक कर थम जातो
ऊपर सू पड़ती जोर मार
बेहोस होय बो पड़ जातो
कइ डिगरी चढ जातो बुखार

दिन ऊग्या बधवा लगोट्या
घाणी म म्हानै जुतवाता
भूखा अर तिस्सा राख परा
सिझ्या लग फेरया लगवाता

दोपारै रोटी लाय परो
जेलर थाळी सिरका जातो
पाणी अर रोटी रो पूछण
पाछो वो भळै नही आतो

कोई निरभागी कैदी जे
हाथा नै धोवण री कैतो
जेलर वीयै नै झिडक परो
सागीडा ही लत्ता लेतो

तगड़ै सू तगडै डीलाळो
घाणी रै गड़कै चढ जातो
हुय परो पसीनै सू लथपथ
थक परो रोवणै लग जातो

अर राजनीति रा कैदी तो
बीमार होवता ही रैता
दुसमणी मायली काढण नै
ओ काम बिया नै ही देता

सामराज्यवादी रयी हात
चिकित्सा सास्त्र केई टणग्या
ना बस री बा रै रयी बात
ई कारण कठपुतळ्या वणग्या

आपस रे माया कदै-कदै
रै रै-तू तू वाता अड़ती
पीणै रै पाणी रै खातर
हाथाजोड़ी करणी पड़ती

कोई तावड़ियै ऊभ परो
ले लेवै दो पल रो सा'रो
मत पूछो लम्बरदारा रो
मिटा मे चढ जातो पारो

पाणी रो तोड़ो वता परा
उण सू धोवाता वै नाळ्या
जे पीवण कोई मागै तो
मा-वापा री देता गाळ्या

घाणी चलावता जे कोई
पीवण रै पाणी री कैतो
बदमास इतो हो लवरदार
पीवण नै हरगिज नी देतो

चिमटीभर तम्बाकू दीया
मिन्टा मे ल्या पातो पाणी
जे थोड़ासाक अकड जाता
फेरू होती खेचा ताणी

कोई पाणी पीवण जावै तो
कैता ओ पग खखाळे है
पीणै रे ताईं माग परो
ले परो अणूतो ढोळे है

विन पाणी ढोळ्या वै कैता
तू पाणी घणो गमावैलो
पीवण रै ताईं वता पछे
था वाप घरा सू आवैलो

रोटी री भी आ हालत ही
लूखी-सूखी खावण धरता
जीमो झट वारै आ जावो
कमरा आगै हाको करता

जे जमादार नै जाय परो
कोई भी चुगली कर देतो
वो आख राख कर बीयै रै
नाका माही दम कर देतो

दूजै दिन रीसा बळ कैतो
तू झूठ बोलनै जीयै क्यू
जद हुक्म है दोय कटोरी रो
तू तीन कटोरी पीवे क्यू

मत बैठ गमावो इतो वगत
इण बात ध्यान था धरणो है
घाणी मे जुत सिझ्या तायी
काढ तेल पूरो करणो है

नी पूरो करसो तेल काढ
अफसर नै जाकर कैवाला
सजा मिलैली बा न्यारी
खावण रोटी नी देवाला

न्हावण री देवो बात छोड
वासण नै डील लाग जाता
सावरियो जद विरखा करतो
पालर पाणी सू ही न्हाता

आ नही सोचता कै वदी
रोटी खोई या नी खाई
दरवाजो आयर खडकाता
कैता उठ काम करो भाई

इण हालत माया कइ कैदी
टट्टी तक कोनी जा सकता
थाळी मे टपकै परसेवो
रोटी पूरी नी खा सकता

मूढै मे कोवो लिया तेल
30 सेर काढ पूरो करता
कम वता परा बै धीगाणे
हाथा माथै डडा धरता

घाणी मे पिलता पिलता ही
जे थककर हाय-हाय करता
निरदयी दया बै नीं करता
लाठ्या कम्मर माथै धरता

जे कोई अकड परो थमतो
थप्पड मुक्का खातो वा सू
कर हाय-हाय धरती पडतो
आख्या मे सू वहता आसू

ज्वर मे भी कोल्हू

कै मूंढै कोवो लिया-लिया
अर तेल काढ पूरो करता
धीगाणै ही कम बता-बता
हटर कम्मर माया धरता

कालिज रै क्रातीकारथा नै
घण कूव्या मनवा लेय हार
घाणी मे जुतणै रै कारण
पड जावै सगळा बै विमार

१०२ डिगरी बुखार नै तो
बुखार बता नी हा भरता
वार्डर रै कैवण रै साथै
उण हालत माय काम करता

ना अस्पताळ बै भिजवाता
आराम करण भी नी देता
दुसमणी काढता हा पूरी
अर काम दबा पूरो लेता

कोइ माथो दूखण हियै रोग
वता परो देखातो छाती
सावरकर लिखे किताव माय
बै री तो शामत आ जाती

मोटै भाई दामोदर नै
बचपन सू ही आ बीमारी
आधा-सीसी सू जेळ माय

घाणी रै माया जोतण सू
बीमारी और घणी होगी
माथै मे सूया-सी चुभती
दूणा ही हुयग्या बै रोगी

दिन ऊग्या घाणी देय जोत
बै तेल काढता जावै है
तावडियै पीड हुवे दूणी
सिर झाल गुळाच्या खावै है

धमकी देवै है जमादार
थे जल्दी काढो तेज चाल
नी तो ओ हटर देख लिया
मारचा उधडेली आज खाल

गोरै अफसर नै दामोदर
देखाळै तपियो ताव हाथ
बो कैवे मैं कीं कर न सकू
आ डाक्टर रै वस हुवै वात

डाक्टर नट जावै देख हाथ
नी कोई बीमारी थानै
कमकस सू होवै नहीं काम
क्यू देखावै नाटक म्हानै

इक दिन डाक्टर बिगड़ी हालत
दामोदर नै बो लख लेवै
दा दिन रै खातर अस्पताळ
झट भेजण रो अ

गणेश बिछावणो लेय परो
वार्डर रै हो जावै सागै
गोरो अफसर आ देख परो
रस्तै मे रोक्या आ आगै

डाक्टर रै कैया अस्पताळ
लेजारयो हू कैवै वार्डर
वो कैवै डाक्टर कुण होवै
घाणी जोतो म्हारो आर्डर

पाछा घाल्या कोटडती मे
दिन ऊग्या पाछा दिया जगा
तपता बुखार मे जावे पण
घाणी मे बानै दिया लगा

माथै मे दरद बुखार हुया
दामोदर घाणी काढ तेल
नापै गणेश अर भरे आह
लकडे पर देवै डील मेल

आख्या झपकावण सू पैला
दिन उगता ही बै उठ जाता
वार्डर रै कैया घाणी जुत
बै तेल काढणै लग जाता

टट्टी-पेसाब माथै भी रोक

अगरेज ढाया जितरा
फोड़े

घाणी मे जुतणो दुख सहणो
हथकड़िया दोनू पैर हाथ
कैता ही सको आवै है
इक आर वताऊ खास वात

रात नै टट्टी पेसा करण
काळ कोटड्या घड़िया धरता
आधी राता सका होती
तो घडा मायनै ही करता

बारै घटा रै माय कोय
पेसाब टट्टी तायी अड़तो
डाक्टर सू हूकम लेय परो
जमेदार नै कैणो पडतो

दूजे दिन बारी आ कैतो
साळा टट्टी रात ने लागै
म्हानै सुख सू वीं सोवण दै
तू सारी रात इया जागै

ईं हालत मे केयी कैदी
करता सै कमरै रै माया
करता भगीऊ हाथा जोड़ी
सफाई करावण रै ताया

मेहतर माथै वाधण जोगो
जा जमादार नै भिड़कातो
तो जमेदार रीसा वळतो
पाणी तक कोनी छिड़कातो

जमेदार रात ने आय परो
सागीडी धमक्या दे जातो
दिन ऊग्या ठोकर मार-मार
वारी रै खन्ने ले जातो

बारी धमकातो आख दिखा
मनड़ै रो इत्तो हो काळो
टट्टी पेसाब सू भरियोड़ो
हाथा सू नखवातो पाळो

जमेदार बारी बद्या रै
ठोकरा मारता नइ डरता
हथकड़िया पैरा सजा देय
तावड़ियै माय खड़ा करता

बै किसै जलम रो बदळो ओ
निरलज्ञा बद्या सू लेता
पावा मे बेड़या घाल परा
पेसाव करण भी नइ देता

अमानीय यातवनावा

तात्ये रा अडमान साथी
क्रातिवीर शातिभानु लहरी
सावरकर सैया जित्ता दुख
सै बाता लिखदी वै गहरी

घूमत-घूमत ही मै इक दिन
वीं सागी मारग आ पूग्यो
सावरकर सजा भोगतो हो
वस देख परो धृजण लाग्यो

हाथ बध्योड़ा हथकड़िया
पग ऊपर लोहे री राड़ा
छाती पर सिल्ला धरियोड़ी
वै सहन करै पीसै जाड़ा

इत्ती जाडी ही सागकळा
खोलणियो काईं खोल लेय
इक पहरेदार खड़्यो ऊपर
किणनैं बतळावण नही देय

मै पूछ्यो झट इक बदी नै
ओ कुण? जद बो पाछो कैवै
ओ देस दिवानो सावरकर
आजादी खातर दुख सैवै

साथीड़ै रा ऐ हाल देख
हिवडे माया दुख रळकावै
वी जागा ऊभा-ऊभा ही
आख्या सू आसू ढळकावै

देवता सरुपी परमानद
आ सू ई खोटा कर्‌या हाल
मार मार कोरडा अणगिण
उधेड़ी ही बारी भी खाल

लाहै रै कटकड़लै माया
पग हाथ बाध कर लटकाता
घटा ही ऊभा राख परा
ऊपर सू हटर सटकाता

बेमेदा सही यातनावा
सावरकर परमानद भाई
कम्मर मे लीला उपड़ जाय
बेता री मार इती खाई

कइ युवक क्रातिकारी ऊभा
आख्या जद देखै इसी मार
सगळा अपघात करण री ही
आपस रै माया लेय धार

नौजवान एक इदूभूषण
बा मार देख मन बैठे हर
बेइज्जत होवण रै कारण
आतमहत्या बो लेवै कर

मार कोरड़ा री खाय परो
उल्हासकर दत्त जाकर सोवै
ई गहरै सदमे रै कारण
नी बोल सकै पागल होवै

भाइ परमानद देव सरुपी
मारतड़ा देखै इसी मार
क्रातिवीर आसुतोस लाहिडी
अनसण कर मरणै हुवै त्यार

सावरकर अनसन करणै मे
विसवास कदै करता कोनी
लल्लू पजू-स कामा पर
बे ध्यान कदै धरता कोनी

परमानदजी नै समझावै
अनसन कर भूखा मती मरो
दुसमण रा चक्का जाम हुवै
थे काम करो तो इसो करो

भूखा रह खुद वेमौत मरो
इणसू फळ कोइ मिलै कोनी
ना-कुछ जैड़ी आ बाता सू
दुसमण रो जोम हिलै कोनी

अनसन रै जैड़ी बाता पर
विसवास कदी भी करयो नहीं
दुसमण सू मात खाय लेवा
आ बाता कान धरयो कोनी

जे काम करो तो इसो करो
दुसमण रा छक्का पण छूटै
अर साप मरैलो मिटा मे
थे समझो लाठी नइ टूटै

वै सावरकर कहणो मानै
हड़ताल भूख सगळा तोड़ै
दुसमण सू टक्कर लेवण नै
मन माय वीरता ही दौड़ै

धरमवीर रामरक्खा रो बलिदान

पजावी बामण रामरखो
धरम जनेऊ राखे कम्मर
अनसन करलै मरणो धारै
इतिहासा वो हूवै अम्मर

हो देसभगत वो जोरदार
जरमन जापान दूर करतो
भारत फौज्या रै मन माया
भावना राष्ट्रभक्ति भरतो

रगून श्याम तक पूग परो
बो काम गजब रा करतो हो
भारत आजाद करावण नै
पग मौत सामनै धरतो हो

ब्रीटिश सरकार देखता ही
लगा सुराग लेवै पकड़
अडमान जेळ माया भेजै
हथकड़िया देवै हाथ जकड

अण्डमान जेळ माय वार्डर
गळै जनेऊ काढण लागै
वी बासण रै एकान एक
मन धरम भावना ही जागै

वो कैवै धरम निसाणी आ
क्यू जोर धिगाणै काढो हो
थे कान खोलकर सुणो मनै
मौतड़ली मूढै चाढो हा

पाच-सात मिल वार्डरिया
नस झाल परा मूढो मोडै
वो घणी करै तड़फातोड़ी
पण खेच जनेऊ वै तोड़ै

रामरखो हो पक्को ब्राह्मण
बोल्यो म्हासू टक्कर लेसो
रोटी नी खावण ल्यू सौगन
जद तक थे पाछी नीं देसो

सगलै राजबद्या माही
इयै बात पर चढ्यो जोस
धरम हाण करणे रै तायी
जेलर रै माथै मढ्यो दोस

सै मूसळमानी बद्या नै
छूट धरम पूरी दे राखी
हिन्दुवा री आण धरम री ही
तोड़ण री मन मे क्यू ताकी

रामरखो रोटी रै सागै
पाणी भी छोड दियो पीणो
कमरै नै कैवै गूजातो
अबै मै चावू नी जीणो

अधिकारद्या बात जनेऊ री
सरकार बात पर अड जावै
पण रामरखो भी उण पेटै
अनसन रै माथै डट जावै

दिन पदरै बीत चुक्या हा जद
वार्डर उण रै कमरै आवै
पकड़ै अर आडो नाख परो
नाका सू दूध चढा पावै

दिन दिन हालत तो बिगड़ै ही
छाती मे पीड उठी ओरू
भूखो-तिस्सो बो घणै दिना
चिरळाट्या मारे बो जोरू

डाक्टर तो देख बताय दियो
ग्यो हाडा पाणी घण भरीज
ओ नही जीवतो रैय सकै
टीबी रो हुयग्यो है मरीज

हू रामरखै कागद लिखियो
बिन मौता मरणो ठीक नहीं
तू वीर क्रातिकारी तगडो
इण भात मरे ओ ठीक नहीं

पजाबी माटी जलम्योड़ो
झुकणो बो वीर नही जाणै
मरजादा आण निभाय परो
जीवन खांडै दाई ताणै

बो साफ कयो खाधै माथै
जद तलक जनेऊ नी पाऊ
आ भीष्म प्रतिज्ञा है म्हारी
मरतै दम रोटी नी खाऊ

दो महिना माय पड़्यो रैयो
नी मात फिरग्या सू खावे
बो मुकुट धरम रो पैर परो
छोडै है प्राण मुगत पावै

रामरखो जिण भाग मरयो
उण वात लुकाणी चाता हा
बीमारी सू मरणो बताय
जेलर से छिपळ्या खाता हा

पण भारत रै अखवारा मे
आ खवर छपी हाथो हाथा
कैद्या म भड़क्यो भळै जोस
तो आगे और वधै वाता

भारत रै राजवदिया रो
आयोग जाणणो हाल चाय
सुणलै जेलर अर वार्डर तो
फेफ्या होठा रै जाय आय

अखवारा खवर छापी कारण
दुनिया मे भाडो जाय फूट
वामण वलिदान दियो हिंदवा
क्यू नी पावै बै धरम छूट

घायल हुय जद वो पड़ जावै
नीं भाग सकै तद पकडीजै
की दिना आपरी जेळ राख
काळे पाणी उणनै भेजे

जद काळ कोटड़ी मे वार्डर
रोटी देवण जावै माही
वो थाळी हाथ झाल केवै
मळ-मूत उठावण रै तायी

सगळो ही कमरो वासै है
की और कैवणो नी चावू
पाळो वारै नखवाया विन
हरगिज ही रोटी नी खावू

ई सूगलवाड़ै रै कारण
रैणो ही मुसकल होयो है
थे नाक ऊपरा दियो हाथ
आ मेहतर क्यू नीं धोयो है

जोतीशचन्द्र काळ रो ग्रास वण्यो

जोतीसचन्दर वगाल रै
सागै ही खोटो काम करयो
मार मार जेलरा काढी सिट
पागल हुय कमरै माय मरयो

मान्योड़ो क्रातीकारी हो
उण लड़ी लड़ाया ही वोळी
अगरेज पुलिस पकड़ण ताई
पण माथै लागी ही गोळी

वार्डर अर जमादार दोनू
दे धक्का माया ने करदै
म्हे देखा कद तक नीं खावै
आ कह थाळी माया धरदै

बारी तक वात जाय पूगै
थोड़ो भी बो नीं धरै ध्यान
जोतीसचद्र री भभकै सू
मत पूछो कलपै घणी जान

अकड़ू हो पहलै दरजै रो
उण हालत मे भी पड़ो रैय
पाणी तक माग पिवै कोनी
भूखो तिस्सो की नही कैय

कइ राजबदिया रै सागै
ऐड़ा ही जुलम घणा होया
या मूढै बोल नही कैयो
तो हाथ मोत सू ही धोया

इण नौजवान बगाली री
नी सहन खोपड़ी सू होवै
इण सूगलवाडै रै कारण
तन-मन री सुध-बुध सा खोवै

दूजै दिन रोटी फेकै बो
सगळो ही बिगड़ै है खेलो
अर रीस मायनै आय परो
अनसन रो कर देवै हेलो

म्हे हालत देखी जद बै री
चिन्ता रै माया डूब गया
आ कहता आवै घणी सरम
मौतडली नेडा पूग गया

मै उणनै समझा-बुझा परो
अनसन तुड़वायो दी रोटी
आख्या सू देखी नही गई
हुयगी हालत ऐड़ी खोटी

माथे मे सुन थापरणै सू
बोले नी चालै बो सोयो
म्हे सगळा ही तो दख रया
कइ दिना पछै पागल होयो

बगाळ भेज दै अस्पताळ
पागलखानै दै भरती कर
की बरसा तायीं दुख भोगै
ना ठीक हो सकै जावै मर

कमजोरी आजावे बौळी
सिझ्या रा सूरज होय अस्त
खोटी हालत टसकण लागै
लोही रा लागै और दस्त

हाड्या तक दीसण लाग गयी
अराताळा भरती करवा दै
सगळी बीमारी बता परो
डाक्टर रो ध्यान धरवा दै

इक पत्र माय आ छपै बात
बस थ्यार लेण में यात खास
क्रातिवीर जोतीशचन्द्र
पागलपण होयो सुरगवास

वहरामपुरै पागलखानै
उण नै भरती करवायो हो
काळे पाणी सू भेज परो
अठै समझकर धरवायो हो

अकड़ू हो पहलै दरजै रो
उण हालत मे भी पड़ो रैय
पाणी तक माग पिवै कोनी
भूखो तिस्सो की नही कैय

कइ राजबदिया रै सागे
ऐडा ही जुलम घणा होया
वा मूढै बोल नही कैयो
तो हाथ मौत सू ही धोया

इण नोजवान बगाली री
नी सहन खोपड़ी सू होवे
इण सूगलवाड़ै रै कारण
तन-मन री सुध-बुध सा खोवै

दूजे दिन रोटी फेकै बो
सगळो ही विगड़ै है खेलो
अर रीस मायने आय परो
अनसन रो कर देवै हेलो

म्हे हालत देखी जद बै री
चिन्ता रै माया डूब गया
आ कहता आवै घणी सरम
मोतड़ली नेड़ा पूग गया

मै उणने समझा-बुझा परो
अनसन तुड़वायो दी रोटी
आख्या सू देखी नही गई
इयणी हालत ऐड़ी खोटी

माथै मे सुन बापरणै सू
बोले नी चालै बो सोयो
म्हे सगळा ही तो देख रया
कइ दिना पछे पागल होयो

बगाळ भेज दै अस्पताळ
पागलखाने दै भरती कर
की बरसा तायी दुख भोगे
ना ठीक हो सकै जावै मर

कमजोरी आजावै वोळी
सिझ्या रा सूरज होय अस्त
खोटी हालत टसकण लागे
लोही रा लागे और दस्त

हाड्या तक दीसण लाग गयी
असताळा भरती करवा दै
सगळी बीमारी बता परो
डाक्टर रो ध्यान धरवा दै

इक पत्र माय आ छपै बात
बस च्यार लेण म बात खास
क्रातिवीर जोतीशचन्द्र
पागलपण होयो सुरगवास

बहरामपुर पागलखाने
उण नै भरती करवायो हो
काळै पाणी सू भेज परो
अठै समझकर धरवायो हो

रणै सू पैला केवै है
ागलपण उण रो ठीक दिख्यो
रमध्या मितर घरआळा नै
ाथा सू कागद लिख भेज्यो

समझ्या मत मरणै रै पाछै
मे सुरग भोगतो रैऊला
इण धरती मा सू मनै प्रेम
म जनम तुरत ही लेऊला

आत्मा तो हूवै अजर अमर
आ जनम लेय मरती रैसी
कर मिनखपणै नै फळीभूत
आ देशभक्ति करती रैसी

कागद पढणै सू आ लागै
औकात दिखाकर तणग्यो हो
लोगा मन री ली बात जाण
वो देस-दिवानो बणग्यो हो

मायड़ रै मोह पुजारया नै
इज्जत पर मरणो आवै है
आगो-पीछो वै नी देखै
तो पागल लोग बतावै है

पागलपण रो शिकार

हो रामचरण लाल बन्दी
जेळा मे वो घण दुख पायो
जोतीशचन्द्र रै दाई ही
वो भी तो पागल कैवायो

राजबन्दी हो रामचरण
हिन्दू सगठन रा हा विचार
दुख बोळा देख्या जीवन मे
टी बी रो असली हो बिमार

इक दिन उण कागद लिख भेज्यो
जीवण री रैयी नी जुगती
आतमहत्या ही दिरा सकै
ई जेळ मायनै ही मुगती

सावरकर रै मन दुख उपजै
समझावै कमरै माय जार
ओज्यू आहूत्या देणी है
थे पैला मानी किया हार

दूजै रै खातर नी कैवू
भारत रै खातर कैणो है
राणा प्रताप दाई लड़ कर
बदळो फिरगिया लेणो है

हिम्मत बधवावै समझावै
तो बात विचै रै जच जावै
कीं दिना पछै हो जाय ठीक
मरतो-मरतो ही बच जावै

भानसिघ पर अत्याचार

सरदार भानसिघ बदी सू
पेटी अफसर करलै झगड़ो
की कारण हाथापाई सू
गड़के चढ जावै ओ रगड़ो

सुण भाग परो जेलर आवै
गाळ्या काढै कमरै मे बड़
उथळावे ईटा सू भाठा
भानसिंघ सामनै बे रै खड़

जेलर चमचा नै करै सेन
औ री अकड़ थे क्यो उतार
गाळी काढी है ओ म्हनै
डडा री मारो खूब मार

चमचा बड़ माय कोटड़ी रै
सरदार होयजा अबे त्यार
लोही सू लथपथ कर देवे
सिर माथे डडा मार-मार

घिरळाट्या गूंजे जेळ माय
पण हत्यारा डर नी दोड़ै
लाठ्या सू आडो नाख परो
डडा सू बै हाडया तोड़ै

मारै रै भाया छोडाओ
आ सुण बन्दी सगळा जागे
हाथा मे सरिया देख परा
चमचा तो पूछ दबा भागे

तात्यो चीख सुण समझ जाय
कोई कैदी नै बै मारै
अर बन्द कोटड़ी मे बैठो
आपा रै बात नही सारै

सुण भानसिंघ मारा कूटी
रैया मन माया दुक्ख पाय
इक जमादार नी साजै हो
सा बात बताई मनै आय

भानसिंघ नै ही ओ बारी
चमचा साजे कुटवायो है
म्हारो थे नाव मती लेया
किण नै भी नीं छुटवायो है

तात्ये अफसर नै लिख देवै
भानसिंघ कूट्यो हा भरसा
कैदी सगळा मांगै जबाब
नीं तो हड़ताल भळै करसा

बारी नै म्हारी चेतावणी

बारी नै जद आ दा लागै
धूजण लागे बो घबरावे
आ बात दबावण रै खातर
तात्ये पासी भाग्यो आवै

तात्ये कैवै थानै इण रो
अब डड भुगतणो ही पड़सी
सब कैदी कर हड़ताल अबै
मुकदमो सग थांरै लड़सी

पेटी अफसर पाछी केवै
आ थानै बात नही ओपै
म्हारै बो चक्या खाय गयो
ओ जुलम भानसिंघ पर थोपे

ात्ये कैवै इण वात परा
ोझी तरिया था मिल कूट्यो
ऊपर सू सचवादो वण र्‌यो
ूंढै सू लोही क्यू छूट्यो

ाजवन्दी कैदी अव सगळा
ुलम किया ध्यान धरवासी
आपस रै माया मिल र्‌या है
मुकदमो भळै वै करवासी

जद सुपरडट री जाच हुवै
वदी सै मिलै घेर लेवै
भानसिघ कूटण वात वता
अपराधी डडण री कैवै

बो म्हारी किणी बात माथै
थोड़ो भी ध्यान धरै कोनी
वार्डर नै सजा देवणै रो
नाटक करता धापै कोनी

कैयोडै रो नी हुवै असर
ऊभो ऊभो सुणतो रैवै
माग करै है उण वद्या नै
धमकिया सजा री वो देवै

जिण भानसिघ नै छोडायो
आ धमकी सुणकर अड़ जावै
हाथा सू जाती बात देख
हड़ताल करण नै खड़ जावै

वद्या नै वारी रा चमचा
कीं कैय परा नीं पाल सकै
वै खसै घणा फटवाडे नै
पण दाव एक नीं चाल सकै

भानसिघ शहीद हुयग्यो

हड़ताल जोर सू हुय जावै
सै वन्दी सागै जावै जुट
अधमरियै जेड़ो भानसिघ
माचै सू पावै नही ऊठ

लोही वद नीं होवण कारण
डाक्टर री इच्छ्या कै डरती
पेटी अफसर नै कैय परो
करवादै असपताळ भरती

तात्ये कह मै ही हो भरती
वीमारी लूठी जतळावै
आपस मे मिलिया भानसिघ
डडा री लीला दिखळावै

किण कोझी तरिया सू बारी
कुटवावै पछै अठै घालै
आ सगळी बाता रो वेरो
आख्या सू देख्या ही चालै

अस्पताळ मे हालत विगड़्या
डाक्टर घणी करे भाग-दौड़
इक महिनै तड़फै भानसिघ
हिचक्या खातो दम देय तोड़

हो अणपढियोड़ो वो किसान
नी देशभक्त ऐड़ो मिलणो
ऊमर काटी सा जेळा मे
किस्तब सू सीख्यो नीं हिलणो

आजाद देश करवावण नै
जी-जान फिरंगिया सू खसियो
ऊचो पद हुतातमा पायो
भारत रो पूत चाल बसियो

परलोक सिधावण रै कारण
आख्या रा आसू नही रुकै
सगळै ही राजबदिया रा
उण रै चरणा मे शीश झुकै

पृथ्वीसिघ आजाद रो अनशन

हड़ताल योजना बण्या पछे
दो राजबदी जमावे पेठ
लेवे सगळा री राय पछै
अनसन माथे बै जाय बेठ

आ माय साठ बरस रो हो
बूढो सरदार सोनसी सिख
दूजो पजाबी राजपूत
पृथ्वीसिघ दोनू गया टिक

बारह दिन भूखा तिसा रया
कोटड़्या पड्या देखाय सान
अधिकारी सै घबराय परा
लिखदी मागा लेवा मान

इगलेड भात राजबदया
से मागा थारै आगै ही
सावण सू माथो धोवण री
बाता लिखयोड़ी सागे ही

मागा सगळी मान्या पाछै
सोहनसिघ खा लेवै रोटी
पृथ्वीसिघ अड़ियोड़ो रैवै
तो हालत हो जावै खोटी

कोटड़ी माय बड़ अधिकारी
सगळा ही बैठ्या समझावै
बै केवै हरगिज नी मानू
नाका सू दूध चढा पावै

अन पाणी छोडण रै कारण
हालत बेजा खोटी होई
रजपूती रो खूखारपणो
ठडो नी होयो हो लोही

कपड़ा तक पैरण उण छोड्या
कै रै सामै उठ नी जावै
ठडै आगणियै कोटड़ती
नागा धरती माथे सोवै

समझाय कमिश्नर नै कैवै
कानून कायदो तो ओ है
सब बाता लिखकर मै दे दी
बोलण सू नहीं फायदो है

छव महिना लग वो राजपूत
बिन खाया-पीया दुख सैवै
लीयोडी आण नही तोडै
वो तो तप करतो ही रैवै

हाथी रै जैडो हो सरीर
बीमारी बा ळै गयो बैय
चिन्ता ही लेखै नित नूवी
हाड्या रो ढाचो गयो रैय

निसर्यो हो बारै कमरै सू
तात्ये इणगी-उणगी जोयो
पृथ्वीसिघ कमरै पूग परो
मिलणे रै ताई सफळ हुयो

अकबर सू महाराणा प्रताप
जूझ्या कैयी सगळी काणी
हटणो भी पाछो पड़्यो हो
पण बीं रो उतर्यो नीं पाणी

घर रो भेदी दुसमण बण कर
छाती पर सेना लाय खड़्यो
हळदीघाटी सू राणा नै
ईनै-बीनै की होण पड़्यो

थारै इण अनसन सू भाई
नी होवै देस नै फायदो
पण शूरवीरता देखाणी
भारत देश कवै कायदो

दे उदाहरण समझाणे सू
बो म्हारी बाता गयो मान
वचन दिया हा आतमहत्या
करकै मैं देऊ नही जान

पृथ्वीसिघ आय ताव मे कह
भारत री शान सजाऊलो
अर कायरता देखाय परो
मा रो नी दूध लजाऊलो

पृथ्वीसिघ री औकात देख
सावरकर घणो खुशी होवै
आपस मे हाथ मिलाय परा
निरभै कमरै मे जा सोवै

सुपरिंटेडेट पर हमलो

पजाबी बच्या मे इक सिख
मास्टर हो हाईस्कूल माय
मेबर क्रातीकारी सगठन
पग आगै धरतो डरै नाय

इक दिन अगरेजी इस्पेक्टर
जद विद्यालय मे जाच करै
हमलो कर बीं पर चतरसिघ
कम्मर मे चाकू री मारै

बी केस मायनै पकड़ परो
अण्डमान जेळ दे भेज माय
बो वीर मरद क्रातीकारी
रत्ती भर भी घबराय नाय

सिख बदया नै माथो धोवण
साबण अर तेल नही देता
जद काम करण बेळा हुवती
गाळ्या दे आपस मे हँसता

चत्तरसिंघ पारो चढियोड़ो
कैदया रो तोल होवतो हो
सुण जमेदार री बड़बड़ाट
वो मूढै सामे जोवै हो

बो सागी सुपरडट आयो
कैदया नै गाळा दे खटकै
कुरसी बैठ्ये नै चतरसिंघ
आ कठ पकड़ नीचै पटके

मूढै सू सामे बोल परो
कीं आज तलक नीं कैयो है
पजाबी बदया नै हरदम
तात्ये भड़कातो रैयो है

सुपरडट कनै पूग्या कैदी
हमलै री निदा करी जार
तात्ये तो की बोल्यो कोनी
कमरै मे बैठो रयो लार

बारी आयो बोल्यो उणनै
थे चुप क्यू रया भेद खोलो
तात्ये कै था केयोड़ो है
बदया रै बदलै मत बोलो

उण जेळ माय हाको फूटै
वार्डर पूगे झट सगळै सू
अधमरियो उणनै कर देवै
मारै लाट्या अर डडा सू

नी जमेदार छोडातो तो
भवसागर पार पुगा देता
लारै सगळा ही गया लाग
जुलमी बै प्राण काढ लेता

वार्डर सगळा आ कैवे हा
किण कैणै गुस्सो आयो है
इणनै हमलो करणै सारू
सावरकर ही भिड़कायो है

भाई म्हारा बीमार पड़्या
नी पडी पार म्हारी केयी
था सगळा ही तो कैयो हो
थानै बोलण अधिकार नयी

रोजीनै अैड़ा हुवै काड
था आगे आयर नी बोलू
तो चतरसिंघ रै लारै ही
गलती कर मूढो क्यू खोलू

जे चतरसिंघ हमलो करियो
तो बी रो पीछो नीं छूट्यो
अब बाकी काई रैय गयो
था इत्तो दौरो है कूटयो

म्हारै इतरै से कैणै सू
मूढै पर लेवो नही नाव
लारै सू सगळा ही केवो
इण रो भिड़काणो रयो काम

बारी नै ओ विसवास हुवै
सो काम इये करवायो है
हुय सकै इस्पेक्टर रै भी
चाकू ओ ही मरवायो है

सब कैदी इण कैणे चालै
मूंढै सू बोल न कैरयो है
ओ चतरसिघ ही सुणरया हा
आपा सामे पख लेरयो है

कइ बरसा चतरसिग नै वै
लारै रै पीजरियै राखै
रोटी तक पूरी नीं देवै
कइ वार कूट आडो नाखै

परमानद भाई रै इक दिन
कागद लागै इसो ही हाथ
बारी भिड़कावै सुपरडट
लिखियोड़ी उणमे साफ बात

आ बात आप तक ही राख्या
मनै कैवण कोइ आयो है
सुपरडट माथे हमलो भी
सावरकर ही करवायो हे

आ बात एकलो मै नी कू
सगळा मूढै पर लावे है
आ कैद्या नै भिडकावण मे
तात्ये नै आनद आवै है

मै झूठ रतीभर नी बोलू
ज्यू मनै बतायो कीयो है
भाई परमानद हवालो ओ
खुदबीती माही दीयो है

गभीर रूप सू बीमार

सन १९१५-१६ रै बीच माय
ओ डील बिगड़यो दुख सैयो
सन १९१० मे पहली बेळा
इगलैड जेळ माही रैयो

हिन्दुस्तानी जेळा देखी
आजादी गहरो चढ्यो रग
अण्डमान री जेळ भेज
काळकोटड़ी करयो बद

ज्यादा दुख पावण रै कारण
भेजै मे चिन्ता चढ जावै
रोटी ढगरी नी मिलणै सू
बीमारी दूणी वध जावै

अधकाची रोट्या खावण सू
पाचन सकती सा बिगड़ जाय
गुमसुम पेट रैवणे कारण
रात्यू नीदड़ली नही आय

मे सुपरडट ने कयो जार
बीये भी दीनो नही ध्यान
ई अण-सुणवाई कारण सू
मुसकल मे पड़गी ओर जान

चढ जाय ताव जोरा सू तो
अस्पताळ भेजे न ओरा दाई
रोटी खावण मन नी करतो
पड़ियो रैतो कमरै माई

काचा चावळ खाया पाछे
पाणी सी दाळ नही पचती
दूखण नै पेट लाग जातो
जीमण री कोनी मन जचती

लोही रा दस्त ज्यू ही लाग्या
वार्डर डाक्टर ने जा कैवै
वो जमेदार सू ही छानै
रोटी अर दाळ मगा लेवे

दिन उगिया ताव उतरता ही
सूत्यै ने देता आय जगा
रोटी-पाणी री पूछ्या विन
तात्ये नै देता काम लगा

औपध पाणी रै दिया विना
बीमारी पकड़यो घणो जोर
अर काचा चावळ खावण सू
लोही रा लागे दस्त और

कइ बदया नै बीमारी मे
दूधड़लै रोटी सुध लेता
म्हनै काची रोटी र दाळ
पीवण नै दूध नही देता

जद रोटी खाणी दिवी छोड
तो दाळ चावल लाय देतो
कर उथळ-पुथळ अर मिला परो
लागोड़ी भूख बुझा लेतो

दै काचा चावळ और दाळ
लागोड़ी भूख नही भागै
हो जावै म्हारी नीद हराम
पेसाब जोर सू जद लागै

पण जेळ माय बिन पूछ्या ही
पेसाब करण बै नी देता
दो-तीन बार जे कर लेतो
सागीड़ा ही लत्ता लेता

डाक्टर नै आवै देख दया
म्हारै दुखड़ै री सुण बाता
सरकारी हुकम दिरा दे झट
रोटी खुद बणवावण हाथा

झल जावै डील ताव सू ही
पेसाव दस्त सागै लागै
जमादार ऐ देख हाल
डाक्टर रै खवै फेर भागै

डाक्टर वै फेरू बुला परा
चढता देखाया ताव हाथ
बो कैवै दिन मे उतर जाय
चढ जावै पड़ता फेर रात

हाथा सू रोटी पोवण रो
मन मे म्हारे हो घणो कोड
पूरो समान नी देणै सू
पाछी बणावणी दिनी छोड

वड भाई छानै पुजवाता
रोटी नरेळ जोटी माया
नी पतो पड़ण देता केनै
रोजीने वै म्हारै ताया

मै इमरत समझ जीम लेतो
अर धन्यवाद फेरू देतो
काचा चावल अर पी पाणी
लागोड़ी भूख बुझा लेतो

आधीसीसी कारण भाई
माथो दूखण सू दुख पातो
रोटी खायोडी नी पचती
ई कारण रोटी नी खातो

लगणै सू जोरदार दस्ता
ताव घणकरो चढ जातो
कमरै रै माय पड्यो रैतो
पूछण नै कोई नी आतो

दिन उगता ताव उतर जातो
पड़ता ही रात झाल लेतो
दिन माय चढ्या बिन कोई भी
किण भात दवा डाक्टर देतो

ताव चढै या नही मनै आ
डाक्टर भी कोनी कह सकतो
पड़ता ही रात ताव चढतो
दिन माय दवा नीं ले सकतो

भाई रो माथो भी पाछो
जोरा सू लागै दूखण नै
ई बीमारी रै कारण सू
लग जाय डील भी सूखण नै

म्हा दोना नै थोडो-थोडो
दूधो देवै पीवण तायी
दस्ता लागण रै कारण सू
पीवा पण पचै नही माही

हिन्दुत्व री ज्योति

सावरकर जनमजात हिन्दू
मान्योड़ा कट्टर हा विचार
देख जेळ मे धर्मान्ध मिया
मन माही खाता घणो खार

धसकाता देखै हिन्दु धरम
आवै सगळा आख्या आगै
हिन्दुत्व ज्योति भभकाय परी
मन माय फेर दूणी जागै

वा माझी जन्मठेप लिखी
मीया ई जेळ दु ख देता
नी जाणै कुणसै जलमा रो
वे वैर म्हांरै सू लेता

अडमान जेळ हिन्दू वदया
वार्डर हा तीनू चुगलखोर
तीनू वोलूची मीया हा
हिन्दवा पर खाता सदा जोर

हिन्दवा ने दावण रै तायी
बै पाठ जलम सू पढिया हा
रड़काता आख्या रे माया
काटा वण छाती गडता हा

हिन्दू वदया पर आख राख
बै माय-माय घुटवाता हा
झूठी चुगल्या कर-कर वानै
वार्डर हाथा कुटवाता हा

इक पठाण वार्डर मदरासी
वदी ने गाळी दे खोटी
ओ काफिर हे आडो नाखो
साळै री झट काटो चोटी

सुण मदरासी नै आय रीस
भिड़ जावै पाछी नी ताके
पकड़ै पठाण री झट दाड़ी
घूमाय परो आडो नाखै

छाती रै ऊपर वैठ परो
मूढै पर मुक्का खूव धरै
कह भळै मनै काफिर कहसी
मूछा खोसै वेहोस करै

सावरकर केवै मदरासी
थू खूब वीरता देखाई
दुसमण सू वदळो ले लीनो
दयू धन्यवाद तनै भाई

वारी अगरेज मिल्योडा हा
मीया री पख वे लेता हा
सिंधी पठाण पजाव मिया
हिन्दवा नै मिल दुख देता हा

आ हालत देखी सावरकर
हिन्दू कैदया गौरव जगाय
मीया सू मात मती खावो
चढा जोस लारे दै लगाय

ऊचा चढवाय मुसळमाना
हिन्दवा नै आगे करता हा
तारीफ कुरानी करता बै
खुद माय रळाणो चाता हा

इक्के दुक्के हिन्दू ने वे
पढा कुरान निज गुण भरदै
सावरकर हिन्दू वणावणा
वा ने पाछा चालू करदै

मीया रो ढग देखता ही
दुख उपजै तात्ये मन माहीं
हिन्दू बणावणै रै खातर
दौड़े हो घोड़े रै दायी....

मिलता ही आपस रै भाया
दोनू ही चौनिजरा होवै
गणेश दामोदर कै तात्ये
थे अठे किया कह मन मोवै

भाई सू भेंट

4540

दोनू भाई इक जेळ माय
दुख रया नारगी जिसा भोग
सावरकर ने ओ मालम हो
पण मिलणे रो नीं बण्यो जोग

ओ मालम हो बारी नै भी
जा मिट मिट खबरा लेता
आपस मे रैता सावचेत
दोना नै मिलणे नी देता

भाई रा दरसण करणे री
मन माय लालसा जाय जाग
बिछड़्या नै कई बरस होया
आ चिन्ता औरू लाग जाय

वार्डर अर पेटी अफसर नै
वै मिलवाणे री अरज करै
आतक कारणै ही वार्डर
हाथा जोड़ी नी ध्यान धरै

सावरकर तेल काढ इक दिन
नपवाय परो पाछो आवै
आ बात है सिझ्या पड़ता री
भाई सू मिलणो हुय जावै

भाई रै मूढे बोल सुण्या
तात्ये आख्या आसू आवे
गळगळो नाखदे निसकारो
मूढे सू बोल्यो नी जावै

बारी नै वेरो पडता ही
वार्डर नै भेजै झट आता
दोना नै अळघा बो करदै
नी फेर करण देवै बाता

ओ भरत मिलाप देख करकै
वार्डर रो चढ जावै पारो
दोनू भाया नै फटकारै
ओ म्हनै काम लागै खारो

थे जेळ माय कैदया सामै
बाता कर मती खिडावो गध
सावरकर नै लेजाय परो
कर देय कोटड़ी माय बद

गणेश दामोदर दूजै दिन
कागज भेजै वार्डर सागै
पढ सावरकर री देशभक्ति
मन रै माया दूणी जागै

भाई रै मूढै सू निसरचो
हाथा रै माया हाथ लिया
ओ मनै अचुम्भो होय रयो
थे जल्दी केवो अठै किया

मै तो सोची थे बारै हो
सगळे कैदया नै कैवा हा
बो मातृभूमि री सेवा मे
अर म्हे दोनू दुख सेवा हा

थे पेरिस माय काम करता
क्रातीकारया रै मन छाया
आ नहीं समझ मे आय रही
गोरा रै पकड़ किया आया

दामोदर भाई पढ कागद
मन माय समावै नहीं फूल
मरणे री परवा नही करै
दुख भुगत्योड़ा से जाय भूल

उण क्रांति-ज्योति नै घण चेतन
कह भाई अब कुण राखैलो
बाल आपरो बाल अबै
बो किणरो मूढो ताकेलो

मे झूठ नही बोलू भाई
आख्या सू देख्या हे थानै
ये जेळ माय हो अण्डमान
आ बात आतमा नीं मानै

सावरकर ऐ बाता पढकर
मन ही मन माय घणा रोवै
भाई री सगळी रूवाळी
दरसाव राष्ट्रभक्ति होवै

सावरकर उण वार्डर सागै
जद कागद लिख कर दीयो हो
खुद बीती रो सगळो पोथो
लिखकर कै चवड़े कीयो हो

लौकिक अर भाग्योदयी राख
तन मे रमाय लड़ता रैणो
बो ही तो भाग्य अलौकिक है
इण रै आगे काई केणो

बी खरी उतरती देशभक्ति
तो सगळी दुनिया नीं हिलती
अर वश ऊजळो नी होतो
मेनत सा रेत माय मिलती

क्रातीकारया नी पनपातो
पग बा रा जे नी रोपातो
अर डिग जातो जे करतब सू
तो किण नै मूढो देखातो

अणगिणती रा दुख झेल परो
ओजू तक आपो नीं खोयो
नीं हेत लगायो स्वारथ सू
ईं कारण सू ही सिध होयो

भारत री जनता दुख देतो
उपदेस देय डर सो जातो
अर जेळा नही भोगतो तो
पथभ्रष्ट किया नी हो जातो

कोइ वारै रैय परो जूझे
अर केरो जेळ माय रैणो
है एक बराबर ऐ दोनू
गीता म किरसण रो कैणो

दुखड़ा भोगण रे माया ही
आपा सब री बलिहारी है
भारत आजाद करावण नै
पक्की ही मन म धारी है

मे दो जनमा री सुणी सजा
पद रच्या याद वै रैवैला
विसवास देय रया जेळ माय
दुख नै सुखमय कर देवैला

जीवन मे जुध करतो-करतो
पुळ ऊपर चढतो ही वेग्यो
पण नेपोलियन मरयो तद तो
माचे माथे सूतो रैग्यो

लेवे गणेश जद ओ कागद
छोटै भाई रो जदी पढै
दीखे अटूट ही दशभक्ति
ऊचो मन रो बळ और चढै

इण भात जुद्ध रण-राग गाय
रण मे रणभेरी गावै है
तरवारा घावा सू राणी
लिछमी तो सुरग सिधावै है

बलिदान भावना देख परा
खुद आगे आवण री सोचे
भाई होवै तो इसड़ो ही
मन खुशी होय नाचण लागै

मे जुध मे लुक रैऊ लारे
दूजा ही जीत मरे आगै
कायरता देखावण कारण
लाछण तो पीढ्या रो लागै

इतिहासू कागद सावरकर
वो भाई रो मनड़ो मोवै
वा राष्ट्र-भावना ही महान
सापरतै ही दरसण होवै

इण भात कसौटी रै माया
मानै सै उतरया अजू खरा
अगरेजी जेळा रा दुख भी
आपा नै कोनी सक्या डरा

अडमान जेळ माही दुखड़ा
नीं बा रो गौरव घटा सक्या
अर आजादी रै मारग सू
गोरा नी बा नै हटा सक्या

चादणी मे खासता बधु

हड़ताल सफल हुवणे कारण
इक वात बताऊ सुणो खास
कइ दिना पछे गोदाम तेल
स्वाधीन हवा मे लेय सास

गोदाम तेल सू बदया नै
वार्डर बारै काढण लागै
सिड्या पड़ता ला खड़ा करै
सगळा नै कोटड़त्या आगै

दस बरसा मे पेली वेळा
पायो हो चादणिया मौको
समसाण जेळ री छिया बता
मन माय करै सगळा धोखो

इक दिन जद भाई श्री गणेश
चादड़ले रै सामे जोवै
मै खने बैठ जा वात करी
दाना ने घणी खुशी होवै

वा रो वो मूढ़ो आज तलक
मूरत ज्यू ही चेतै आवै
वेठ्या हा कुरसी वत वणी
दखू तो भूल्या नी जावे

भारत आजाद करावण नै
जेळा मे उमर गमायी है
देशभक्त री वा मूरत
हिवड़ै रै माय समायी हे

कुरसी पर बैठा-बैठा ही
घटा ताई खासण लागे
अर डील टूटणै रै कारण
टी बी रा सै लक्खण लागै

लटकाया तन पर पाजामो
खासी दम लेवण देय नाय
कुरसी पर बेठ्या देव सरिस
बै बसग्या म्हारी आख माय

अण्डमान मे काव्य-रचना

घाणी मे जुतियोड़े तात्ये
कविता लिखणी मन मे आवै
नी बुझे लालसा जेळ माय
लिखणे माहीं वो लग जावै

उण बगत बिया नै आय कोइ
अर जेळ मायनै कैवै है
ठाकुर रवि बाबू विश्वकवी
पदवी सू भूपित होवे है

भारत रै कवि नै विश्वकवी
पदवी मिलिया गौरव होवै
सावरकर खुद भी विश्वकवी
सुण कर के मुह सामै आवै

टेगोर बधाई वै भेजै
लिख कविता ओळ्या रूप माय
भारत री शान करी ऊची
म थाने भूल्यो अजू नाय

भारत भाषा कविया टोळी
रथ वेठ जाय री ही आगे
मैं भी खुद नै कवि समझ परो
होगयो विया रै ही सागै

रस्तै मे मा रो हुयो हुकम
पण म्हारा होया वठै जाम
क्रातीकारया मे घणी कमी
थानै मिल करणो एक काम

ई हुकम कारणे सू ही मै
कविया सागै नीं जाय सक्यो
मा री वेड्या काटण कारण
म्हाकवि पदवी नीं पाय सक्यो

पाबन्दी जेळा हुवणै सू
कवितावा लिख सकियो कोनी
कागद अर कलम बायरो मै
थिरचक टिक सकियो ही कोनी

कातळ टुकड़ा ला बारै सू
कोटडती माया जाय टिकै
भीता रे माथै कवितावा
मनचाही आप रगड़ लिक्खै

दिन-रात लाग अर भीता नै
कवितावा सू भरदै सजार
खाली नी जागा बै छोडै
लिख लेणा पूरी दस हजार

गोमान्तक रो विरहोच्छवास
लिख कर से भींता ने भरलै
सिणगार वीर रस रै सागे
वेठाय राग कठस करलै

उण काळ-कोटड़ी माय भळै
वे पीटै एक नयो डको
थे पढकर सै ताज्जुब करसो
मन माय नही लावे सको

मै आदि-अत हू इण जग रो
मन मे कोई आ धार सकै
दुनिया मे कैरी ताकत है
दुसमण वणकर आ मार सकै

जद तेल काढता घाणी सू
सिड्या पड़िया घटी बजती
सुण करकै बारी मन बुद्धि
कवितावा सिरजण नै लगती

घटी रा टणकारा सुण-सुण
बा कविता माडी भळै एक
कुलदेवी मात रूप सुरसत
आसीसा कारण रैय टेक

मै किया करू थारो स्वागत
आ नही समझ मे आवे है
आजाद करावण भारत नै
सापरतै सुगन वतावै है

सुख संपति लात मार तात्ये
भारत माता री राख लाज
टावर अर घर रो मोह त्याग
काटाआळो सिर पैर ताज

मौतडली ने ललकारी है
लिखकर वा कविता रै माया
मैं खुद ही मरणो माड लियो
अब डरू नही थारै आया

कैनै सागै मत ना लाये
आवे तो एकेली आये
स्वागत करसू लाडा-कोडा
बीमारया सागै मत लाये

जे लावेली तो साथ लिये
थूक्यो पाछो नी धादूला
मा-आसीसा म्हारै सागै
टक्कर ले काळो कादूला

जद जेळा रो दुख नीं धार्‌यो
पण अबे ध्यान धरणो पड़सी
जे सागै फोजा लासी तो
बेधड़क होय लड़णो पड़सी

ईं खातर एकेली आये
मनड़े री बात बताई मै
जीवन सगळो ही झाक दियो
म तो दुखड़ा री खाई मे

तो भी सुध-बुध खोयी कोनी
बरसा ई जेळा माय टिक्यो
विद्या री अखण्ड तपस्या कर
बेधड़कै सुन्दर काव्य लिख्यो

साहित्यकार राष्ट्र वाळा
इण बात अचूभो घणो करै
नारगी जेळ री भोग परो
ऐड़ी कविताबा लिखै धरै

पूरा दस बरस नरक भाग्यो
अण्डमान जेळ दुख पाय परा
देसभगति विचार नी सूखै
बीया रा बीया रैय हरा

तीसरो परिच्छेद

अडमान सू रत्नागिरि

२१ जनवरी सन १९२१ नै
तात्ये नै हिन्द भेजै पाछा
हिन्दू कैदी सनमान करै
थे देस-दिवाना ही साचा

भारत धरती दरसण ताईं
मन माय खुसी दाड़ण लाग
महाराजा जाझ माय भेजे
भाई गणेश नै भी सागै

भारत मे लाय महाराष्ट्र
कर रतनागिरि मे नजरबद
दोनू भाई खुस होय कहै
पर भोम जेळ सू छुट्यो फन्द

मीटिंगा राजनीति वाळी
कै सू ही नही करण देवै
पाबन्दी पूरी लगवा दे
वारै पग धरण नही देवै

हिन्दू राष्ट्रीय भावनाळो
साहित रचणो चालू करदै
छोटै भाई नारायण मे
बै पत्रकार रा गुण भरदै

श्रद्धानन्द हुतात्मा नावा
हर हफ्तै एक पत्र छापै
खुद री रचनावा लेख लिखै
घर-घर रै माही नखवादै

जोसीली कविता लेख पढै
युवका मे देशभक्ति जागै
आपस मे वणा परा टोळ्या
आजाद हुवण आवै आगै

रत्नागिरि रै उण नगर माय
बरसा तक नजरबद रैया
हिन्दुत्व हिन्दु पदपादसाहि
सन्यस्त ग्रथ कई लिख दीया

शुद्धि आदोलन

रत्नागिरि हिन्दू महासभा
कर थापन देवै बिगुल बजा
जोशीला भासण देय परा
कइया रा जीवन दिया सजा

हिदवा नै ईसाई बणता
रुकवावै जोस माय आकर
कइ मूसळमान बण्योड़ा नै
खुद हिन्दू वणवावै लाकर

भासण दे कवै अछूता नै
हरिजन हिन्दू है एक अग
सै भेदभाव अळघा करकै
सबनै रगणा है एक रग

मसूरकर महाराज जाय
गोवा मे हलचल मचवावै
सावरकर कैणै हिदवा नै
क्रिश्चियन वणाता बचवावै

पुर्तगाल सासन छानै सी
ओ काम पुलिस सू करवा दै
स्वामीजी नै पकड़ाय परा
अर जेळ मायनै धरवा दै

सावरकर नै जद ठा लागै
बै दुखी हुवै रुपिया भेजै
समझाय केलकर अर मुजे
छोडावण दोना नै भेजै

वम्बई विधान सभा माया
सगळा ही जाकर अड़ जावे
पूरतगाल्या ने स्वामीजी
वेवसी छोडणा पड़ जावे

पनरै हजार ईसाया नै
पाछा वै हिन्दु वणा देवै
क्रांतीकारचा सावरकर सू
स्वामीजी वा-वाही लेवै

स्वामीजी लिखियो एक लेख
सावरकर कैणै करयो काम
हजारू हिन्दू वणा परा
क्रिस्याना चक्का करया जाम

हिन्दवा नै वणाया ईसाई
सावरकर हाको घलावै
पाछा हिन्दू वणावण रो
आदोलन जोरा चलावै

क्रिस्चन अर मुसळमान सभी
सावरकर माथै चिड़ जावै
ब्रिटिस्या रा टोवै कान खड़ा
सावरकर वा सू भिड़ जावै

वम्बई इसाई राज्यपाल
सामे जाकर ऊभा होवे
तात्ये आन्दोलन चलवाया
प्रतिवध लगावण नै केवे

सरकार जवाव वुला मागे
तो पाछो उत्तर जा देवै
हिन्दवा ने क्रिस्चन बणावणा
कुणसै विधान मे लिख्यो कवे

हिन्दवा नै क्रिस्चन वणवाया
तो मुसळमान थे हो साचा
अे मे डरणे री नही वात
म्हे हिन्दू लिया वणा पाछा

हिन्दवा नै क्रिस्चन वणवाणा
करवा देवें सरकार वद
तो म्हे भी मानण हुवा त्यार
हुय जाय लड़ाई आज वद

भाषा-शुद्धि आन्दोलन

रत्नागिरि मे वा हिन्दी री
परवार करण बिगुल बजायो
फारसी इसाई मुसळमान
सुणता ई माजनो लजायो

कह भासा शुद्ध करणै ताई
हिन्दी हिन्द सिर चाढी जावै
उड़दू अगरेजी वर्णसकर
इतिहासा सू काढी जावै

पढ देवनागरी लिपि जनता
गुण वीज ज्ञान रा वोय सकै
भापा नै मा रो रूप दिया
भारत एका सिध होय सकै

पुरुषोत्तम टडन लिख कैवै
आ हिन्दी आदोलन चलवायो
सावरकरजी रै कैणे सू
ऐ काम पार सौ घलवायो

सबसू पैला सावरकर रै
ओ ही तो तावै आयो हो
हिन्दी भाषा पढवावण नै
आदोलन बा चलवायो हो

गणेश रघुनाथ वैसपायन
तात्ये आ माया दम भरै
परचार थापना हिन्दी री
ऐ पूना माया जाय करै

मरजादा राम नै सहजादो
दशरथजी नै बादस्या बता
सीता नै दरजो बेगम दे
गाधीजी रोळो दियो घता

बाल्मीकि मौलाना कैयो
सगळा सैमूढै एक आप
गाधीजी खातर कह तात्ये
कर रया मूंढै सू महापाप

पूना टडनजी अध्यक्षता
हिन्दी रो सम्मेलन राखै
प्रस्ताव सस्कृति राख परा
हिन्दुस्तानी आघी नाखै

मालम लोगा नै आ कमती
तात्ये हिन्दी रो कोश कर्यो
लाखू ही सबद हुया भेळा
इतिहास नै मझधार कर्यो

शहीद ठौड रखियो हुतात्मा
प्रूफ जगा राख्यो उपमुद्रित
मेयर री जागा महापौर
आ सावरकर देन दुद्रित

नकली आखर नै पढो मती
लिखण वाळा है हरामखोर
असली हिन्दी पढवावण ताई
सावरकर देवै खूब जोर

रतनागिरि सेनापति बापट
हेडगेवर मुजे होया त्यार
इतिहासकार सर देसाई
ऐ सगळा वा सू मिलै आर

राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ
विचार ही रो अपणा लेवै
हिन्दू राष्ट्र बताय परा
सावरकर नै बधाइ देवै

राजनीति मे बोलण खातर
पाबदी कारण नही हिलै
अर माय-माय हिन्दू सस्था
बुलवाय परा वै लोग मिलै

बलिदान देवणै रै ताई
सगळा रो वै ध्यान धरावै
आजाद हिन्द करवावण नै
चमत्कार वै कई करावै

हिन्दू राष्ट्र थापना सारु
हिन्दू पदपादसाही ग्रथ धरया
पढ भारतवासी आगै आ
वे मौत देस पर कई मरया

बन्दा बैरागी जीवनिया
सोयो समाज चचेड़ दियो
आखै भारत री जनता नै
भारत उण माय दिखाय दियो

वैरागी पोथी युवका मे
क्राती रा देवै भाव जगा
बा देस-दिवाना बणा बणा
आजादी री दी लगन लगा

रत्नागिरि युवका नै बुलाय
सस्तर चलावणा सीखावै
थे भारत मा री लाज रख्या
खुद चला-चला कर दीखावै

मस्जिद नेड़ो बाजो बाज्या
मीया लड़णे खातर दौड़े
सावरकर कैया हिन्दु युवक
आछी तरिया बानै फोड़े

आदोलन सू न्यारा होवण
देवे है धमकी मुसळमान
गाधीजी चुपकी साध परा
मीया री लेवै बात मान

छापै मे ताल्ये छपवावै
कै उलटी पारी रया पढा
बोटा रै खातर कागरेस
मीया नै माथै लिया चढा

स्वाधीनता आदोलन मे
कइ मींया भाग लियो कोनी
हिदवा रै दाई मौतड़ली
सामै भी तो बै डट्या नहीं

म्हे राजी राखण नै वारै
हरगिज ही आगै झुका नहीं
थे थारी करके देखावो
म्हे रोक्या किणरै रुका नहीं

रतनागिरि मे सावरकरजी
हिदवा नै भेळा करै भौत
जनम अष्टमी रामानौमी
पूजा करवावै गणेश चौथ

दसरावो मनवा सकरायत
मन माही पाळै घणी प्रीत
हिंदवा मे भक्ति जगा परा
खुद लिखै गवावै घणा गीत

महादेव पूजा करता कह
म्हे ध्यान आपरो ही धरसा
धारण कर रूप महासागर
हिन्दू जाती सेवा करसा

ब्राह्मण क्षत्री अर वैश्य शूद्र
बिन भेदभाव परेम भरसा
नी धरम जाझ डूबण देवा
मिलकर कै पारा म्हे करसा

रत्नागिरि मे सावरकरजी
हिदू महासभा नै बुलवावै
ओकार कृपाण अर कुडलिनी
सेती भगवो झडो देवै

तेरह बरसा रतनागिरि मे
करता रैया साहित सेवा
कीरत सू कदै डिग्या कोनी
लड गोरा सू काढ्या केवा

रतनागिरि वैठा-वैठा ही
सगळे हिदवा शिक्षा देवै
भारत मा आज्ञाकारी वण
दुनिया सू आसीसा लेवै

सन् १९३७ माय जमनादास
धनजी सरकार बुला लेवै
मत्रीमडल सामिल होवण
आमत्रण लिखियोड़ो देवै

मेहता सरकार जतावै आ
इक सरत ध्यान धरवावाला
सगळा सू पैला सावरकर
सुणलो आजाद करावाला

मत्रीमडल प्रस्ताव धरयो
धरवाय परो सरकार ध्यान
साची बाता सामै आवै
तो सगळा लेवै बात मान

अगरेजा जुलम करयोडा रो
खुल्लासो सामै खड देवै
रत्नागिरि पीजर शेर बद
१९३७ मे मुक्त करा लेवै

चौथो परिच्छेद

तात्ये छूटण सुण समाचार
लोगा मे खुसिया देस माय
सस्थावा भी देय बधाया
स्वागत मे लारै रहै नाय

अखबारा ओरू छपै बात
जेळा रा खुलग्या है ताळा
सगळी सस्थावा हो भेळी
पैरावै आकर जयमाळा

जगमगे दिवाळी-सा दीया
भारतवासी होवै राजी
जेळ काट ऐ देस-दिवाना
लड़ गोरा सू जीती वाजी

नेताजी बोस सुभाषचन्दर
भेजे तार बधाई देवे
ले कागरेस सू बागडोर
वे देस साभणे री कैवे

काग्रेस रा नेता वा नै
कैवे उण भिळणे रै ताई
वै पाछो देवै झट जवाब
हरगिज आ बात जचै नाही

तात्ये जनम्यो हिन्दूवादी
पीवण घुट्टी आ सीख मिलै
कुलदेवी रै आसिरवादा
रू-रू मे देसभगति खिलै

वै वात मायली जाणे हा
गाधीजी मीया घणी पटै
क्रातीकारया पागल कैवे
इण कारण सावरकर नट्टै

फेर प्रान्तसभा रा वण अध्यक्ष
जनता रो भरम भगा देवै
जोशीला भासण देय-देय
देशभक्ति जगावण कैवे

आ मन सू देओ वात काढ
अहिसावादी देशभक्त होवै
लूठो समाज रै होया विन
नी स्वराज रो भोगी होवै

आजादी आन्दोलन खातर
होवै हिन्दवाणी देखरेख
नी आव देस नै आय सकै
मालिक रै राख्या रहे टेक

है एक धरम इतिहास एक
सब एकै मारग वैया हा
बारहसो बरस विदेस्या सू
लड़सा अर लड़ता रैया हा

राजनीतिक जीवन

तात्ये सोचै हिन्दू महासभा
देखाय सके कीं कर आगे
ऊम्मर भर रा सदस्य वणकर
हो जावे सस्था रै सागे

उण वगत मे हिन्दू महासभा
छोटो-सोक धरम-रूप लियो
सावरकर उण मे जान घाल
मनवाई मोटो रूप दियो

वे कैवे हिन्दू युवका नै
कै शस्त्र चलाणा थे सीखो
दुसमण नै आडो लाख सको
विन देसभगति जीवन फीको

सेना मे भरती होय परा
जे भारत लाज बचावोला
जमराज रोक पावै कोनी
मरकर थे मुगती पावोला

ऊभ मच पर वै हिन्दी नै
सर्वश्रेष्ठ वतावै भाषा
क्रोडा नै दै विद्वान वणा
किस्मत रा फोरै आ पासा

इण रो ही डको बाजे है
हेमाळे सू लेकर सिधू
भारत नै मानै पुण्यभोम
बो ही होवै असली हिन्दू

बे कैवै गाधी कैयोड़ी
म्हारोडो मन नीं मान सकै
मीया नै सागै लिया विना
आजाद कदी नी होय सकै

तात्ये मीया नै ललकारै
मत सोच्या न्याऊ म्हे पड़सा
होओ सागै तो बलिहारी
नी तो म्हे एकेला लड़सा

करसो जे म्हारो थे विरोध
तो बगत बतासी म्हे अड़सा
मावा रो दूध लजावा नी
दुसमण हाथा ताळा जडसा

मूसळमाना अर कागरेस
वा माय माय ही जुड़ी प्रीत
बै बद करावण नै तुलग्या
वन्देमात्रम गावणो गीत

मीया सिर चाढ्या कागरेस
आ वात न हिन्दू बिसरैलो
नतीजो ऐहडी बाता रो
थे देख्या खोटो निसरैलो

जिण हाडी खावै वा फोड़ै
अडियोडा नी देवै पाछी
कइ बरस पछै ऐ ही बाता
सावरकर कैयी ही साची

उरदू अर अल्पसख्यक लेखै
आखै भारत जहर खिडावै
राष्ट्रभाषा देवण दरजो
सै मिलै बवडर फैलावै

२९ बरस पैला सावरकर
वात अहमदाबाद बतायी
अधिवेसन जोरा सू होयो
वात हिन्दूआ घणी सतायी

लखनऊ बैठक मुस्लिम लीग
कर उर्दू भाषा बात खास
राष्ट्रभाषा उणनै बणवावण
मिल परा करै प्रस्ताव पास

मीया नै राजी राखण नै
लै कागरेस भी आट बाध
वन्देमात्रम रै गीत माय
सबदा री करदै काट-छाट

वन्देमात्रम रो उच्चारण
वा रै मूढे नी गायीजै
आ वात मना मे हिंदवा रै
भली भात आणी चाहीजै

मींया कुचाल आ चाल कहै
हिन्दू म्हारा ही भाई है
इण ही धोखे गाधी नेहरु
वै मात सातरी खाई है

आजाद देस होवे कीया
मींया ऊधी पाटी पढग्या
नी म्हांरै विना हुवैला की
आ सोच-सोच माथै चढग्या

अहमदाबाद अधिवेश मे
तात्ये जनता रो मन मोहै
पाकिस्तान वणावण नीती
गाधी नेहरु री सिध होवै

आ भूमि क्राति री साखी है
कइ गलतफहमिया दूर करै
अगरेजा री तात्या टोपे
इण ठोड़ भ्राति नै दूर करै

वीरा री जलमभोम ने हू
परणाम कोटिश कर र्‌यो हू
वलिदान दिया हा घण वीरा
था आगे चवड़े कर र्‌यो हू

इतिहासू नगरा रा दरसण
है वडा भाग करणै फिर र्‌यो
देवी देवा री आसीसा
पाय-पाय भव सू तिर र्‌यो

नाना साहव तात्या टोपे
तोपा गूजाया हा गोळा
अगरेजा रण आडा नाख्या
भापण कर दीना हा धोळा

इतिहासू स्थाना री यात्रा

इतिहासू सहरा मुसाफरी
तात्ये करवा नीसर जावे
३ अप्रेल १९३८ कानपुर मे
अधिवेशन क्रातिभोम आवै

जोशीला भापण दे जनता
काना री खिड़क्या से खोलै
सुण कर सगळा ही हुवे दग
से पोत लारला ही खोलै

जिण शिव मन्दिर रै माया वड़
वीरा रणशख वजायो हो
गगातट दरसण करता ही
मन मोहित शीश झुकायो हो

मेरठ अर कानपुर वनारस
देखण री कर राखी त्यारी
इतिहासू नगरा दरसण री
वचपन सू इच्छा ही म्हारी

तात्या टोपे हिन्दू सेना री
वाता मन माय गुण्या करतो
अर तोप धमाका जद होता
मिनख रै माय सुण्या करतो

मेरठ मे ओघड़नाथ मिन्दर
वामण प्याऊ जळ पातो हो
गोरा सू टक्कर लेवण नै
हिन्दवा ने जोस दिरातो हो

है वडा भाग म्हारा जिण सू
पग फूक-फूक कर धर रयो हू
पुण्यभोम हुतात्मावा री
इण आख्या दरसण कर रयो हू

काली पलटन रै वावै रा
ओघड़नाथ दरसण फेरु करै
साचे मन कैवू धोक लगा
मन मुजब आपरै भट धरै

वीं गगातट नै निवण कर्यो
वीरा तन मन-धन वार्या हा
गोरा रै गोळ्या मार-मार
मोतड़ली घाट उतार्या हा

इक शोभायात्रा पर हमलो
गोरा-मीया मिल कर्यो जठै
वीरा नै पुष्पाजलि देवै
गगाजळ सू खड़ फेर अठै

वाराबकी र फैजावाद
हिन्दू जैकारा सिर ऊचे
डको लखनऊ वजाय परा
जाय आगरै मे वै पूचै

मीया अगरेजा हमलै म
हिन्दू पाछा पग नही धरै
ओप मिन्दरा री राखण नै
लड़ता-लड़ता ही कई मरै

जठै शिवाजी मिलण काज हित
औरगजेब सू आ जावै
सगळा सू पैला उतर परा
यो किल्लो देखणनै जावे

पजाबकेसरी लाला री
माळा पैरावै मूरत नै
सुवरण मिदर रा दरसण कर
नैणा सू निरखै सूरत नै

१८५७ समरगथ तात्ये
लिक्खै मेरठ धरती सागण
हिन्दवा नै जोस दिरायो हो
वण क्रातीकारी आ नागण

अजमेर जाधपुर ग्वालीयर
वीकाणो देखै वाह हिन्द
सबदा वरणन नीं होय सकै
सीधा ही पूगै फेर सिन्ध

हैदराबाद आदोलन मे योगदान

हैदराबाद आदोलन मे
भाषण दे लेवै ओर भाग
कडकड़ी खाय पूछे निजाम
ओ आयो काळो किसो नाग

निजाम हिन्दुआ धरम उपर
सागीड़ी रोक लगावे है
यज्ञोपवीत नी पैर सकै
मीया मे क्राति जगावे है

मिदरा मे घट्या नग्गारा
पूजा कर नही बजा सकता
गीता रामायण भजन सुणा
मिदर भी नहीं सजा सकता

हिन्दवा रै सागे मुसळमान
गुण्डागरदी करता रहता
हिन्दू नारया नै भगावणो
मामूली बात समझ कहता

ओरगजेब दाई निजाम
निज राज चलावणनै लागे
आतमा सिवाजी सावरकर
हिवड़ै दुख अणमेदा जागे

कर आर्य महासम्मेलन वे
शोलापुर सहर बीच माही
हिन्दू जत्था नै जोड़्या वे
भडा निजाम फोड़ण ताईं

अध्यक्ष बण्या बापूजी अणे
सयोजक नारायण स्वामी
कइ नेता भेळा हुया ओर
आया हा दूर-दूर नामी

सम्मेलन री जिम्मेदारी
शोलापुर री जनता ऊचे
सावरकर ने सदेश मिल्या
बे चाल परा सीधा पूचै

पूगै शोलापुर सम्मेलन
तात्ये भी बजा देय डको
हा आर्यसमाज रै सागे म्हे
सल राखे नी कोई सको

पूरी हिन्दवाणी महासभा
आर्यसमाज रो साथ देसी
ताकत निजाम रै जुलमा री
चकनाहिचूर करके रैसी

२२ जनवरी १९३९ नै ही
सब देसा सदेसो देवै
निजाम विरोध दिवस मनावण
सगळी पारट्या ने केवै

आर्यसमाज आदोलन नै
महासभा करदे रेल-पेल
सनातनधरमी अनेकू ई
सावरकर केणे जाय जेळ

पूना नाथूराम गोडसे
सागे हिदवा भेजे टोळो
हैदराबाद वो पूग परो
सागीड़ो मचवावे रोळो

गाधी भेळा दूजा नेता
जनता रै मन मे बैठावे
हैदराबाद आदोलन नै
सापरदायिक बै जतलावे

गाधीजी री आ बात सुण्या
सब देस माय होवै निन्दा
धार्मिक आन्दोलन बता परा
अर फेर हुवे है सरमिन्दा

केवै बै भारतवास्या नै
मै ध्यान लगाकर नी जोयो
हिन्दू सभा कूदण कारण
मानू सापरदायक होयो

बा मोभी बेटा समझ परा
था कैया-कैया गाया हा
लड़णै मे साथ दियो कोनी
सिर माथै कैण चढाया हा

वन्देमात्रम बद करवायो
मुह माग्योड़ो सो देवो हो
हिंदवा नै देकर धरम धको
काना मे कोवा लेवो हो

सावरकर केयी ठौडा जा
भाषण दे बाता कह जावै
हिदवा रा टोळा रा टोळा
सत्याग्रह माया भिळ जावै

हिन्दू महासभा नागपुर मे
भाषण दे सा बात बतावे
हिदू नै सरे आम निजाम
हैदराबाद मही सतावै

तात्ये मुजे गाधीजी नै
इण रो जवाब पूछै पाछो
वन्देमात्रम बद करवावण
कुण जचवायो हो ओ जाचो

स्वाधीनता विरोधी लोगा
किण जोस दिरायो हो भारी
हिरदै पर हाथ धरो कैवो
आ बात झूठ काई म्हारी

म्हारो सगळा नै कैणो है
थानै इ पूगणो चाहीजै
ई धरम जुद्ध रै माय जाय
सगळा नै कूदणो चहीजै

नी तोड्या हठधरमी निजाम
सगळा ही बण जासा दोसी
भोपाळ अलावा कई जागा
हिंदवा पर फेर जुलम होसी

खुलना हिन्दू परिषद तात्ये
भासण सुण जनता जावै हिल
डाक्टर श्यामाप्रसाद मुखर्जी
हिन्दू महासभा जावै मिल

खुलना रा हिन्दू टोळ्या मे
हैदराबाद मे लड़े जग
मीया रै हाथा ताळा जड़
करै निजाम री चाला भग

हिन्दू मीया होवै शहीद
कइ जेळा रै माया जावै
हिदवा रो दीयो बलिदान
हैदराबाद रग लावै

हिदवा ने छोडै जेळा सू
मन निजाम धीरज धर लेवै
आर्यसमाज सू मिलै फेर
झट सू राजीपो कर लेवै

क्रांतिकारी हुवणै रै लेखै
वो जनरल रो दिरवाय ध्यान
हिन्दू सिख गोरखा मिल्या
राख सकै काकड़ रो मान

सावरकर री आ बात सुण्या
लिनलिथगो मन होवै राजी
सैनिक काकड़ आ टुकड़्या सू
ये ठीक कहो रैसी बाजी

जनरल बतळावै पत्रकार
सावरकर मे है ओजू दम
बरसा ही जेळा रेया पण
खूखारपणो नी होयो कम

जुध री जद सामै आय बात
भारत रै पख मे बात करै
धर मौत हथेळी रै माथै
आगै आकर दो हाथ करै

गवर्नर जनरल सू भेट

९ अक्टूबर सन १९३९ नै
विश्वयुद्ध छिड़णै री वाणी
जनरल लिनलिथगो तड़ै हो
तात्ये रो नापै हो पाणी

दिल्ली मे भेळा वैठ परा
तात्ये री राय तुरत लेवै
रण रा खेलारी हो थे भी
इज्ञत देवै जनरल कैवे

तीजी वेळा अध्यक्ष बणे
कलकत्तै भाषण देय आप
नेपाल देश रे राजा नै
सस्कृति धरम री देय थाप

नेपाल राष्ट्र है हिदवा रो
तात्ये रै बात समझ आई
दोनू इक मा रा बेटा हे
मिल रेणो चायै बण भाई

हिदवा नै इण वाता घमड
इण नै समझे सिर रो से'रो
भारत माता रो ओ वेटो
देवै काकड़ ऊभ्यो पैरो

कलकत्तै सू वा रै खातर
पैला सू कर राखी त्यारी
तात्ये रो भाषण सुण जनता
स्वागत ही खूब करै भारी

कलकत्तै दिखणादे भारत
वै दोरो करण निसर जावै
करनाटक मे भाषण देवै
मदरास पछै सीधा आवे

मद्रास माय हिन्दू परिषद
भाषण देता खुल्ला बोलै
सरकारी भिष्टीवाड़े सू
हिन्दवा काना खिड़क्या खोलै

अहिसा रै ठेकेदारा रा
मीया सगळा गुण गावै है
हाथाजोड़ी कर पाकिस्तान
न्यारो बणवाणो चावै है

आ हिंदवा रै ही दिन धाड़े
है पगा कुवाड़ी वायीजै
ठुकरा कर थानै माग इसी
सावचेत होणो चाहीजै

मद्रास माय री एक सभा
तात्ये भाषण परभाव पड़ै
वीर शिवा औलाद बता
मीया रै माथै टोट जड़ै

त्रावणकोर महाराज पला
स्वागत खातर बणवाय गेट
चन्दनचेरी नगरपालिका
अभिनन्दन पत्र मिल करै भेट

सावरकर रो जद नाव सुणे
केरल री जनता खुस होवै
जोशीला भाषण देय परा
नेतावा तक रा मन मोवै

जा मदुरा मीनाक्षी देवी
दरसण भक्ति रै भाव करे
केरल प्रदेश री जनता मे
भाषण देवै अर जोस भरै

नेताजी सुभाष नै प्रेरणा

गाधीजी नेहरू अर जिन्नो
करणा चावै हिंद दोय भाग
भारत बटवारो होवण सू
इतिहास लागसी एक दाग

हिन्दू युवका नै सेना मे
भरती होवण रो दै नारो
भारत आपा नै लागै है
प्राणा सू भी ज्यादा प्यारो

ई कारण सेना रै माया
भरती होणो पडसी था नै
धर मोत हथाळ्या रै माथै
आजाद होवणो है म्हानै

सुभाषचन्द्र वोस नेताजी
सावरकर री मानी नीती
गोरा री नाका म दम कर
बो वीर लड़ाया ही जीती

१८५७ मे स्वातन्त्र्य समर ग्रथ
पढवाय प्रेरणा वै दीनी
भारत रो भाग बणावण नै
सगळा सू वा वाही लीनी

सुभाषचन्द्र बवई आवै
२२ जून १९४० नै चाल
सावरकरजी सू मिल करके
राजी हुय पूछ हालचाल

मन फूल्या नही समावे है
आपस र माया मिला हाथ
आजाद करावण भारत नै
कइ घटा बैठे करै वात

गोरा री मूरतिया सुभाष
कैवे जद जोडण रै ताई
सावरकर पाछो दै जवाब
म्हारै आ वात जचै नाई

ई श्रीगणेश सू गोरा रै
मनसोबा लागेलो धक्को
सगळै नगरा मे तोड़ण रो
कैवो तो काम करा पक्को

पैला कलकत्तै हालवेल
स्टेच्यू नै नाखाला आडी
आदोलन करके अगवानी
आगै गुड़कासू मे गाडी

ओ देख ढग सरकार फेर
भारत सू डरकर दोड़ैला
जद मूरतिया नै बै तोड़ै
आपा जीता नी छोडैला

सुण सावरकर वोलै पाछो
मानू आ नीती है स्याणी
मे बरसा जेळा माय रया
थ मानो राख नही छाणी

था जैड़े देस दिवानै नै
आ बात नही देवै सोभा
थे जेळ माय पकड़ीज रवो
म्हारै मे पड़ जावै रोभा

आ वात बतावे राजनीति
खुद नै मरणे सू बचवाणो
दुसमण ने मारण रै ताई
सागीड़ो जाचो जचवाणो

कइ रासबिहारी बोस जिसा
क्रांतीकारी नेता जाग्या
गोरी सरकार हिलाय परा
दे चकमो परदेसा भाग्या

२५ जून सन १९४४ नै वै
सिंगापुर सन्देसो बोलै
आजाद हिन्द ली फौज वणा
ओ भेद विदेसा तक खोलै

नीं पूग्या हा जद वै विदेस
आन्दोलन कई चलाया हा
भारत री आजादी खातर
कामा जामा सलटाया हा

कागरेस रा नेता सगळा
हिंद सेनिका कैवे चट्टू
आ केय परा बदनाम करै
सभी किरायै रा है टट्टू

उण तरिया आप जाय बारै
दुसमण री ताकत नै तोलो
भारत आजाद करावण नै
मारग सागीड़ो थे खोलो

उण वेळा सावरकर निर्भय
नी बदनामी रो ध्यान धरै
भारत-युवका नै सेना मे
भरती होवण आह्वान करै

जे भारत लाज बचाणी है
थे कान खोल आ सुणो बात
भारत रा बेटा सै जवान
विसवास मनै वे रवै साथ

हेला सावरकर रो सुणकर
भारत रै युवका जोस तणे
भरती होवै वै फोजा मे
आजाद हिन्द सिपाही बणै

सुणा योजना सावरकर
नेताजी जोश वधा देवै
आजाद हिंद री फौजा री
उण बिरिया ही सौगन लेवै

तात्ये लिखियो स्वातन्त्र्य ग्रंथ
नेताजी उणनै भलै छपावै
आजाद हिन्द रै फौज्या नै
वीर बणावण घणो पढावै

नेताजी भारत छोड परा
काबुल रै रस्तै ध्यान धरै
सिंगापुर हाथोहाथ जाय
आजाद हिंद सरकार करै

गाधी-नेहरू री नीति सू
नेताजी रो मन जाय फाट
सावरकर अपणाया विचार
वा रा जम जावै ठाठ-बाट

सेना मे भरती होवण रो ओलाव

भारत रा युवक हुया भरती
ताल्ये बणवाया सीपाई
वै कागरेस रे नेतावा
आ करामात भी दीखाई

जुलाई १९४० शिमले माही
बे वायसरा सामै खड़ता
भारत अखड आजाद हुवै
रैसी हिन्दू सगळा अड़ता

मदुरा अधिवेशन म खड कै
खलकावै भाषण बै खुल्ला
चरखो अर सत्याग्रह जैड़ा
जनता सीखावै दयो भुल्ला

चरखो छोडो सस्तर सीखो
अर करो देस री मिल सेवा
आजाद देस रै होया सू
दुसमण नी काढ सके केवा

गाधी अर कागरेस नेता
कह शस्त्र चलाणा नहीं ठीक
बेमोता मारया जावोला
थे उल्टी मान्या मता सीख

म्हारा है अहिंसा परम धरम
ऊधै मारग बैवा कोनी
ससतर हाथा मे उठा परा
भूडाई सिर ऊचा कोनी

सावरकर पाछो दै जवाब
फूका सू उडै पहाड़ नही
हथियार हाथ ले गोरा नै
जद तक भारत दे झाड़ नहीं

अगरेजा नै ढावण तायी
बारूद नीव भरणो पड़सी
१८५७ सू भरता आया
ओ काम अवै करणो पड़सी

किल्लो इगलैड अहिंसा सू
आडो नाखोला हसी बात
अणहूती बाता कर रया हो
था जामण जाया इसी रात

मदुरा अधिवेशन पछै आप
बीमारी सू होया सोरा
तोड़ण नै पाकिस्तान माग
कइ नगर फिरया बै कर दोरा

कलकत्तै पूग विराट सभा
भारत अखड रो दे नारो
मरणै-मारण नै हुवो त्यार
ओ केणो थानै अब म्हारो

धर नीव मुखर्जी सभाभवन
जनता नै दे ओ गुरु ग्यान
थे कागरेस नीत्या सू
अब सगळा रैया सावधान

भारत रा दो टुकड़ा करवा
पाप घड़ो तो भरणो कोनी
मूसळमाना सू ओ सौदो
मरतै दम तक करणो कोनी

नेहरूजी नै करारो जवाब

सन १९४१ री मुस्लिम योजना
बारै सू आय वसण लागे
सावरकर तो चेता देवै
पण केया कोई नी जागे

आसाम मिया रै वधणै सू
भारत माही खतरो वधसी
हिंदवा रै पगा माय फेरू
अे काटा वण कर कै गडसी

हिंदवा नै अठै भगाय परा
जचवासी खुद रा जाचा
सरकार देखती ही रैसी
नी फेर वसण देवै पाछा

सावरकर पाछे दे जवाब
नेहरूजी शास्त्र नही ज्ञान
कुदरत हवा गदगी कारण
मिनखा री लेवै तुरत जान

सावरकर कैणो हुवै साच
आसाम मिया जच रेया है
भेळा हुय एको कर केवै
पाकिस्तान वणावण पच रया है

भागलपुर रो अधिवेशन

पाचवी बार भी सावरकर
हिन्दू महासभा अध्यक्ष वणे
सगळै ही क्रातिकारया माही
आजादी लेवण फेर ठणे

२५ दिसवर १९४१ अधिवेशन
भागलपुर करवावै हेलो
बकराईद झगडै कारण
अगरेज खिडा देवै खलो

वा हिन्दू महास्वागत समिति
तात्ये सामै आ बात धरै
अन्यायी बात आ वता परा
अधिवेशन रो ऐलान करै

तात्ये अखबारा दे छपाय
पावदी ध्यान नही धरसा
कह दीनो सो पत्थर लकीर
खुल्ले अधिवेशन म्हे करसा

सरकार विहारी ना मानै
नी लावै सावरकर सको
भागलपुर खुसी मनावण रो
भारत मे पिटवा दै डको

थे कान खोलकर सुण लेवो
म्हे हरगिज माना नहीं हार
लाखू ही क्रातिकारी लिखै
अर वासराय नै देय तार

बीहार गवर्नर रै कानां
आ बात तुरत दीनी पूचा
थे करणो हे सो कर लीजो
म्हारा विचार ही है ऊंचा

भागलपुर माही दोड़-दौड़
वे जोड़ सभा पीटै डूंडी
नवयुवका नै पकड़ण कारण
वतळाय पुलिस नै सै भूंडी

जद हुकम गवर्नर नी देवै
सै क्रांतिकारी बण्या ढीट
अधिवेशन २४ दिसम्बर रो
भारत ढिंढोरो देय पीट

अधिवेशन दिन नेड़ो आया
हिन्दू नेता पकड़ण लागै
नी डरै क्रांतिकारी कोई
पकड़ीजण नै आवै आगै

वैठ ठाठ वाट सू भारत मे
भागलपुर दिवस मना लेवै
सरकार कर्‌या अन्याय जका
बै वायसरा नै लिख देवै

स्वागताध्यक्ष गगानदसिह
दरभगा माय पकड़ लेवै
वै पूछै काई है कसूर
पाछो जवाब काई देवै

धिवेशन रो पडाल बणा
त्यारी जोरा सोरा जोडै
आ पुलिस करै कब्जो उण पर
पडाल सज्यो पाछो तोडै

नेता सो नेडा पकड़-पकड़
कर निजरबद जेळा माया
था घणी अनीत उठायी है
अब पड़या अंठै रैवो भाया

अन्याय पुलिस रा हुया घणा
भागलपुर मे हडताल होय
मोहल्ला गळिया मे जा जा
पकड़े हा हिन्दू जोय जोय

सावरकर सागै भागलपुर
पूगे मिल नेता कई जणा
जा ठेसण २४ दिसबर नै
बा ने तो बन्दी लिया बणा

हिन्दू नेता राघवाचार्य
शास्त्री नै करलै गिरफ्तार
जनता तो भड़क परी दूणी
टकराय पुलिस सू रीस खार

सावरकर पकड़ीज्या बोलै
ओ गीत नितूको गाईजै
म्हारै मन री आ इच्छा है
अधिवेशन होणो चाहीजै

२५ दिसबर १४४ धारा मे
घर-घर पर झडा सै चाढै
हड़ताल हुवै भागलपुर मे
अर हिन्दू एक जुलुस काढै

जे सावरकर री हिन्दु सभा
आभो गूजै हो नारा सू
नी पाकिस्तान बणण देवा
लड़सा म्हे भ्रष्ट विचारा सू

जूलुस रै माथै बेशुमार
लाठिया पुलिस री चालै ही
हिंदवा री टोळ्या री टोळ्या
लाठी-डडा नै झालै ही

घुड़सवार घोड़ा चढिया
जनता नै दाबै-चीथै हा
पण भारत माता रा बेटा
चीथीज परा ई उछळै हा

डाव्या ना डव्या क्रातिकारी
पुलिस री छाती ऊपर चढै
केतकर चढ मच ऊपर
सावरकर भाषण लिख्यो पढै

डा मुजे आशुतोष लाहिड़ी
प चद्रगुप्त वेदालकार
हज्जारू ही नेतावा नै
कर लेवै पूलिस गिरफ्तार

भागलपुर ठेसण गोकळचद
नारग नै झालै पुलिस ठोकै
श्यामाप्रसाद मुखर्जी नै भी
आता नै मारग मे रोकै

डा मुजे अध्यक्ष बणा
सम्मेलन हुवै जेळ माया
रै कैदी नेता पूग जाय
लारै भी कोई रै नाया

अधिवेशन सागीड़ो होवै
अर असर समूचै देस पड़ै
मीया अगरेजा कांग्रेस्या
अणगिण बिच्छूड़ा आय लडै

१९४२ मे कानपुर मे फेर
वै बात करै मर मिटणै री
जनता नै खुल्लम खुल्ला कह
अब वगत नहीं गम गिटणै री

तात्ये जोशीला भाषण सुण
कापै है कागरेस मीया
आपस बाता अगरेज करै
आपा री पड़सी पार किया

कानपुर अधिवेशन रै माय
वण छठवा वै अध्यक्ष कवै
सेनिकीकरण हिन्दू होवै
जनता नै गुरुमन्तर देवै

तात्ये आतमघाती नीती
गाधीजी पाछी घिरवावै
पाकिस्तान बणेलो ल्हास परा
हिंदवा नै चेते करवावै

औ पाकिस्तान वणा रैसी
आपा सू न्यारो बसणो है
हिंदवा नै रैणो सावचेत
आ नीती मे नी फसणो है

वरसा पैला वाणी काढी
वा सावरकर री होवै सिध
अर पाकिस्तान बणाणे री
बैठा लेवै अदरूणी बिद

राजगोपालाचारी मन मे
भारत तोड़ण री लेय धार
गाधीजी नै कइ सरता पर
मनवाय परा कर लेय त्यार

जिन्नो नीं मानै वात कोइ
वस गीत आप रा गातो हो
सगळी मागा मनवाय परो
भारत रा टुकड़ा घातो हो

गाधीजी नीती रै कारण
भारत म हाको गयो फूट
बोल्या काग्रेसी देशभक्त
क्यू दी मींया ने इती छूट

तात्ये तद कयो मुखर्जी नै
जाकर गाधी ने समझावे
भारत रा टुकड़ा होस्या था
कीं बात समझ मे भी आवै

न्यारो जे पाकिस्तान बणे
दोना नै आव घणी आसी
भारत सेती बगाल माय
अणगिणती रा मारया जासी

बै महासभावा नै सगळी
हुकम दे देवै हाथो-हाथ
पाक विरोधी आन्दोलन
सगळे छेड़ाय रातो-रात

कोई नी शहर रयो बाकी
नारा दे हिन्दू जुलुस काढ
नी पाकिस्तान वणण देवा
मींया मन सदमो दियो चाढ

सावरकरजी अर कइ साथी
देवता सरूपी परमानद
आशुतोष लाहिड़ी मुजे कह
सगळा मिल देवो काट फन्द

वै करै मिटिंगा घणी-घणी
केवै अड़चण घालण ताईं
से हिन्दू चेतन हुय जावो
भलो हुवैला इण माईं

पाकिस्तान योजना तोड़ण नै
लिख पूरो देस कागद नाखै
८ अक्टूबर १९४४ दिल्ली मे
हिन्दू सभा आयोजन राखै

राधाकुमुद मुखर्जी अध्यक्षता
जोरा सभा हुवै मन मोवै
पुरि जगदगुरु शकराचार्य
विद्वान कई भेळा होवै

भरतपुर राजा जमनादास
वल्लभाचार्य अर गोस्वामी
तारासि धर्मवीर भोपटकर
गोकळचद नारग सा नामी

हनुमानप्रसादजी पोद्दार
कृष्णजीवन खापर्डे लाहिड़ी
हजारू विद्वाना बोल परा
पाकिस्तान नीति नै झाड़ी

खूखार भाषण देय तात्ये
सम्मेलन रै माया बोलै
खोड़ीली नीती कागरेस
समझाय पोतड़ा सै खोलै

सै हाव वधाता मुसळमान
काग्रेसी म्हारो लेरया है
मनमानी करसा म्हे म्हारी
हिदवा नै मैणा देरया है

काग्रेस अहिसा पूजारी
अफण्ड रचावण जच रया है
भारत टुकड़ा करणे ताई
सगळी कुनीति ऐ रच रया है

हिंदवा नै तन-मन निछरावळ
अव भारत माथै करणो है
देवा री इज्जत राखण नै
दो हाथ दिखाकर मरणो है

आ नीती फोड़ा घालेली
भारत रो होया अग-भग
आवणआळै बरसा माही
दोना मे होसी खूब जग

इण इतिहासू सम्मेलन रो
आखै भारत परभाव पड़ै
हिन्दू नेता सै एक हुवै
मैदान मायनै आय खड़ै

भारत रा टुकड़ा हुवो भळा
ऐ माग इसी विध कर रया है
ऐ नेता सगळा कागरेस
हा मे हा आरी भर रया है

सगळा रै माया भरै जोस
नी दुख जताय होवै ठडा
काग्रेस्या नै वै जगा-जगा
देखाळै मिल काळा झडा

जनता भडके आ देख परा
काग्रेसी नेता सभी डरै
इज्जत राखण नाटक करता
वै पाकिस्तान विरोध करै

तात्ये चेतावै सगळा नै
फाकी मे आया मत आ री
ऐ जीत परा इण विध चुनाव
फीचा लठ मारैला थारी

देख चुनावा री वेळा
काग्रेसी भेळा होय खड़ै
भारत अखड रो दे नारो
जीतण रै ताई तोत घड़ै

सावरकर वाणी हुवै साच
गाधी नेहरू हामल भरलै
राजगोपालाचारी मिल
वे पाक वणावण हा करले

पाकिस्तान बण्या भी कोई
नी शरीर रा होया टुकड़ा
भारत माता रो तन कटता
काग्रेसी क्यू रोता दुखड़ा

सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिवधरो विरोध

सन् १९४४ विलासपुर मे
हिदवा रो ध्यान टेकावै
हिन्दू अधिवेशन मे वोलै
सावरकर मारग देखावे

मुस्लिम लीग कराची माही
करके अधिवेशन करी खपत
सत्यार्थप्रकाश इस्लाम विरुध
प्रस्ताव मुजव करवाय जपत

सत्यार्थप्रकाश रै समुल्लास
चवदै काढो आघो राखो
मींया री माग अणूती सुण
आर्यसमाज्या माच्यो हाको

प्रस्ताव सिध मत्रीमडल
प्रतिवन्ध लगाणो वै चावै
दिल्ली मे आर्यसमाजी सै
अधिवेशन कर आगे आवे

प्रतिबध विरोध करण पेटै
वायसराय नै दिया तार
मचग्यो तहलको भारत मे
ओ सहन कराला नहीं वार

केन्द्रीय असेवली परमानद
भाई मचवाय दियो हाको
मीया तो हिन्दू जाती पर
दिन धोळै ही नाखे डाको

मुस्लिम मत्रीमडल सिधी
सत्यार्थप्रकाश खदेड़यो हे
समुल्लास प्रतिवधित कर
हिन्दू समाज नै छेड़यो हे

मुल्लास चवदै माही
स्लाम विरोध लखास्यो है
कुरान रो हर इक आखर
दवा सू पड़ स्यो न्यारो है

रान लिख्यो हर एक सबद
ागै है हिन्दू धर्म खिलाफ
ानै म्हे जप्त करावाला
ोना रो होवै नी मिलाप

सावरकर आम सभा कैवै
हिंदवा चेतो करणो चाइजै
कांग्रेसी शासन मे कुरान
प्रतिबन्ध लागणो चाईजै

सावरकर सिंध गवर्नर नै
दे तार शान सू ललकारै
भारत कुरान पर पाबन्दी
लगवा रैवैला नी लारै

सत्यार्थप्रकाश पाबन्दी सू
हिंदवा पर चढसी घणो रंग
हिन्दू अर मूसळमाना मे
अब भळे छिड़ैलो एक जंग

जे पाबन्दी नी हटवासो
इक-दूजै सभी खदेड़ैला
हिन्दू नी रेवैला लारै
मिलकर आदोलन छेड़ैला

प्रतिबंध हटावण रै ताई
वै वायसराय सू मिल्या जार
मीया सू न्यावू नही पडा
म्हे हरगिज माना नहीं हार

विश्वासघात री चेतावणी

सन १९४६ मे होवै चुनाव
सावरकर वौळा हा बिमार
वै महासभा नै हुकम देय
भारत अखण्ड रो कर प्रचार

जनता नै वै नारो देवे
कांग्रेस वोट है पाक वोट
ऐ जीत परा थांरै सागै
सागीडी उतारैला चोट

हिन्दू मतदाता देख जोर
नेहरू कलकत्तै सभा करै
मीया वै दुसमण वता परा
हिंदवा रा फेरू कान भरै

मुस्लिम लीगी सांपरदायिक
म्हे वा सू मेळ करांला नीं
भारत रा टुकड़ा करवावै
उण मारग पाव धरांला नीं

मनचायो जे करसी कोई
सुख री नींदा नीं सोवण दा
विश्वास दिरावू भारत रा
हरगिज टुकड़ा नीं होवण दा

तात्ये चेतावै हिंदवा नै
थानै फसवाणा चावै है
थांरै वोटा रै खातर ऐ
मीया नै बुरा बतावै है

कांग्रेसी नेता मिलकर सै
कर रया है ओ विश्वासघात
मीया नै राजी राखण नै
हिंदवा रै मारै पीठ लात

आ री बोली मे संदर नही
ऊंधै रस्ता पग जा रया है
हिंदवा नै फाक्या लेय परा
भारत री बळी चढा रया है

हिंद भाग पड्यो है मुश्किल मे
अर हिन्दू आया बाता मे
मनचाया खुद रा अब करसी
भारत लगाम ले हाथा मे

ना हेत देश सू है आ नै
ऐ मन रा है बिलकुल खोटा
बोली रै माही जस कोनी
सै मिरजापुरिया है लोटा

सावरकर री सिध होय बात
हिंदवा सू सिट्टा लिया सेक
जीत्या गोडा मीया आगे
हा कागरेस तो दिया टेक

तात्ये चेतावै सगळा नै
बाता अब नाही सुळझेली
भारत नै बाटण रै लेखै
फेरू दूणी ही उळझेली

पाकिस्तान बण्या सागै
आ सागी रूप भळै धरसी
कर जावै शांति किनारो अर
लाखू ही मिनख भळै मरसी

सावरकर री आ कैयोड़ी
हिंदवा रै मनड़ा नै मोवै
१५ अगस्त १९४७ भारत र
पाकिस्तान बणे टुकड़ा होवै

लाहौर बंग नोआखाली
मुलतान सिंध मे हुवै मार
लाखू ही हिंदवा मौत घाट
मीया हाथा सू दै उतार

कर नागी हिन्दु लुगाया नै
बाजार माय जूलुस काढै
जे हिन्दू सामा मंड जावै
नागी तरवारा सू वाढै

रोड़े घर माय लुगाया नै
कुकरम कर कर देवै नागी
छोडावणियो कोई कोनी
आ मीया रै तावै लागी

नारया री इज्जत लूट परा
अर हाव बधावै जमा धाक
हिंदवा रो सौ-की बाळ परा
आख्या देख्या कर देय राख

सन १९४६ मे मुस्लिम लीग
कलकत्ते अर नोआखाली
कर जिहाद हिन्दू लेखै
देखावे हिम्मत री लाली

पड जाय भागणो हिंदवा नै
जीवन अधविच माया लटकै
शरणार्थी बण जावै सगळा
मगता ज्यू दर-दर बै भटकै

भारत रा टुकड़ा देख-देख
सावरकर काया कळपावै
हिन्दू हिवड़ो घण कुरळावै
आख्या सू आसू ढळकावै

जिण मारग मीया चालै है
थानै मिलकर बैणो पडसी
ईटा रा उथळा भाठा सू
साम्हैं खडकर देणा पड़सी

भारत री शान राखणी है
दिन मत ना कढो थे गिण-गिण
मीया नै मार-मार करकै
ल्हासा भीता मे देवो चिण

नेहरूजी आख्या देखै हा
हिन्दू-मीया री जाय जान
१५ अगस्त सन सैताळिस नै
न्यारो बणग्यो पाकिस्तान

जद हिंदू मिलकर मीया री
धज्या उडाय फोड्या भडा
देख्यो अब मारया जावाला
खुद ही हो जावे बै ठडा

आ कागरेस री कायरता
सो काम कर्यो आतमघाती
देख दुरदसा हिंदवा री
भारत मा री धधकै छाती

सावरकर हा बीमारी मे
कांपै हा सुण-सुण समाचार
हिंदवा नै सूत्या कैवावै
मर-मिटणै हो जाओ तयार

सावरकर कैणो हुयो साच
काग्रेसी भेळा हुवै घणा
वस बात आपरी राखण नै
बै दीन्यो पाकिस्तान बणा

बग नोआखाली मुलतानी
सिंध माया लेवै जमा ठाठ
लाखू सिध्या नै भगा परा
जुलमी ऊतारै मौत घाट

हिन्दू-मुस्लिम भाई-भाई
मन माय एक नारो रैतो
भारत रो रूप अखड हुया
लाखा रो लोही नी वैतो

गाधीजी मीया हिदवा मे
चावे एको होवे पूरण
हिंदवा नै मान पराया अर
मूसळमाना नै देय सरण

सावरकरजी चेताया ज्यू
काग्रेसी जे सामै जोता
भारत माता नी दुख पाती
नी भारत रा टुकड़ा होता

लालकिल मे वन्दी

मुसळमान मा बेट्या रा
काव्या हाथळ जूलुस काव्या
हिदवा भी पाछी नी ताकी
घाट मौत पाछा ऊतारया

खोस्योड़ा केयी मीया रा
जद पाछा तोड़या बा ढूढा
गाधीजी मीया री पख ले
हिदवा नै वतळावे भूडा

काग्रेसी शासन ताल्ये पर
गाधीजी री हत्या थोपे
हिंदवा अर क्रातीकारया रै
मनड़ा रै माही दुख रोपै

हिन्दू जनता मिलकर सगळी
आपस मे मत्तो कर लेवै
सावरकर छोडावण ताई
मिल एक लाख रुपिया देवै

दावो चालै जद एक वरस
पूरो न्यायालय ध्यान धरै
आत्माचरण १९४९ माय
वे सावरकर नै वरी करै

छुटता ही सगळै देस माय
जनता मन घणी खुसी होवै
दीयाळी दाई घर-घर पर
झडा फहरै दीया जोवे

सावरकर लालकिलै सू ही
कलकत्तै पासी दुर जावै
अधिवेशन हिन्दू महासभा
वै झटपट सीधा ही आवै

दो लाख मानखो भेळो हुय
स्वागत खातर आवै आगे
जय सावरकर री बै बोलै
आभै नै गूजावण लागे

पावचो परिच्छेद

गाधी हत्या आरोप हट्या
रैवणनै लागे वे विमार
भारत पर जान लगावण री
मन माही पूरी लेय धार

माचै रे ऊपर पड़्या-पड़्या
दुखड़ा ही दुखड़ा बै सैवै
हिन्दू वीरा ने सला भळे
मन माया उपजे बा देवै

धर मोत हथेळ्या रे माथै
म्हे दुनिया नै देखा दीनी
लाखू वीरा आजादी हित
मौतडल्या निछरावळ कीनी

नेहरूजी अर ल्याकत अली
कर समझौतो हेत जतावै
सावरकर भारत जनता ने
दोना रो नाटक समझावै

आजादी सौरै सास मिली
आ बात कैवणी सफा झूठ
भारत रा बडा-बडा जोधा
मरतै दम दीनी नही पूठ

जनता सुण-सुण कर हुवै दग
ऐड़ी भूडाया घणी करै
काग्रेसी तात्ये-साथ्या नै
पकड़ाय जेळ रै माय धरै

तात्ये इतिहासू आयोजन
वीरा ने श्रद्धाजलि देवे
म्हे बा रै बलवूतै जीत्या
खूखार बोलता ही कैवै

कूड़ा सै लाछण लगा परा
भूडायी सिर पर लेय ओढ
जद बदनामी होवण लागी
सगळा नै पाछा दिया छोड

भारत टुकडा री बात कर्या
दुख उठे हियै मे भळ जागै
सिन्धू सरिता नै याद करै
बस फूट-फूट रोवण लागै

अभिनव भारत समापन समारोह

१० मई सन १९५२ पूना मे
भेळा होवै सै क्रातिकारी
अतिम समारोह रै माया
मत पूछो भीड़ हुवे भारी

पूणै नेड़ी भारत भूमी
आजाद हुई बलिदान दिया
पण सिधु नदी अर सिध प्रात
दोना ने जावा भूल किया

सावरकर जोशीलो भासण
लाखू ही गिनखा मे देवे
नी सौरै सासा आजादी
म्हे पाई ऊभा हो कैवे

आखै जग री भूडाई ले
ओ जीवन अरपण मोत करा
पण सिधु नदी सू वीछोड़ा
किण विध ओ दुखड़ो सहन करा

सिधू बिन बिन्दू किया हुवै
हे अर्थबायरो सबद कठै
प्राणा बिन देही वेकारी
भारत है सिन्धू वैय जठै

मा सिधू नदी था प्रेम विना
महाराष्ट्र होयग्यो है गूगो
तू दूर चली गी हिवड़ै सू
जीवन हुयग्यो हे घण मूघो

वो दिन हो था सू हुया दूर
मनड़ा घणी उदासी छाई
अर थनै छुडावण रै खातर
चतरगी सेना चढ धाई

बाजीराव जीतणे तायी
पूग्या चबर नरबदा पार
कोई भी मारग नी रोक्यो
दिल्ली रै वैठ्यो माय आर

झेलम तिर पदाक्रात करकै
जद अटक पार बै जा पूगे
सगळा मन होवै घणी खुसी
अर सोनलियो सूरज ऊगै

जय भारत मा री बोल परा
कोई भी नी हाव ठडो
हिम्मत खुद री देखाय परा
फहरावै है भगवा झडो

मा सुरसेविनी नदी सिन्धू
था घरणा माही च्यार धाम
थारोडी आसीसा कारण
सै फळीभूत हो जाय काम

था भगती री सगती ऊची
मुगती रा मारग खुला सकै
ऋषी-मुनी अर देव तलक
माता थानै नी भुला सकै

म्हारा बलशाली घोड़ा ही
जमना रो पीयो हो पाणी
गगा आसीसा बण्यो काम
नी होवण दी कोई हाणी

जिणरे ही विसवास ताण
मरणो मिटणो तक लियो धार
कोई नीं रोक सक्यो वानै
सतलज रै पूग्या विये पार

डकै री चोटा कैवा हा
था हाथ सीस म्हारै रैसी
महाराष्ट्र एकलो ही लड़कर
दुसमण सू छोडाकर रैसी

थारै पावन घाटा बैठ्या
ऋषि मुनी तपस्यावा कीनी
वेदा रा गान सुणाय परा
शुभ आसिरवादा ही लीनी

आसीसा निसफळ नही गई
देवा-सो दरजो ही दीयो
पूजीजी मिदर मे घर मे
उपकार घणेरो ही कीयो

ऐड़ी थारी लीला पावन
हिवड़ै सू किया भुला देवा
मा जलमतारणी थारोड़ी
म्हे सरण-छावळी पड़ रैवा

मे साखी वणा राम कैऊ
निरभय बलिदान भळै देसा
दुसमण खातर म्हे मौत वणा
माता थानै पाछा लेसा

सावरकर सिधु नदी सुमिरण
ज्यूही दुख लागै धोवण नै
सुणकर कै जनता फूट-फूट
अर सगळी लागै रोवण नै

उण वेळा से क्रातीकारी
छोडावण छाती कहै ठोक
ऊभा हुय सोगन वै लेवै
चरणा मे लुळकर देय धोक

राजनीति हो हिन्दूकरण अर हिन्दू रो सैनिकीकरण करो

सन १९५१ जोधपुर माय नै
अधिवेशन राख्यो ही जावै
बीमार हाल मे सावरकर
रुतबो देखावण नै आवै

वै राजनीति-सैनिकीकरण
करणै रे माथै दियो जोर
सिघ-दहाड करन्ता वै
जनता रा भेजा दिया फोर

जद तलक देस री राजनीति
नी हिन्दुकरण देस सिरकैली
सैनिकीकरण नी होवै तो
सभ्यता कदै नी रैवेली

हिन्दू युवका नै कैणो है
सेना माही भरती होवो
भारत री इज्जत राखण नै
आराम तजो अब मत सोवो

शस्त्र चलावण ज्ञान लेय
आजादी नै बळ देय सको
देस-तणी आफत टळिया
दुसमण सू वदळो लेय सको

सत्याग्रह नी शस्त्राग्रह

गोआ नै पूरतगाल्या सू
वै छोडावण री कैयी ही
सपनै भी सुख नी पराधीन
तात्ये ऐड़ी ही कैयी ही

अहमदावाद अधिवेशन मे
तात्ये कैयो म्हे चावा हा
भारत री पूरी आजादी
म्हे वेगी लेणी चावा हा

भारत रै सागै पोर्तुगीज
जुड़ियोडो लागै हे खोटो
मूरखता गूजे कान माय
ई खातर देणो है बोटो

ओ कृत्रिम और वलात हुयो
भारत रो सरकारी बटणो
देस अखड वणावाला
इण सोगन सू नीं है हटणो

म्हा हिंदवा नै हिम्मत सागे
ओ ही हेलो करणो चहिजै
कासमीर सू रामेश्वर तक
आसाम अखड रैणो चहिजै

सोन चिड़कली कैवावै
ससारी लोगा मन मो सी
सयुक्त अभिन्न अग भारत
म्हानै तो वस ओ मान्य हुसी

मावा रो दूध लजाया मत
चक्का दुसमण रा जाम कस्या
राणा अर वीर शिवा ज्यू लड़
भारत रो वीरा नाव कस्या

सन १९५५ गोवा छोडावण
सत्याग्रह रा पूग्या जत्था
कर आदोलन पुर्तगालिया रा
लेवणनै लाग्या वै लत्ता

मेरठ जत्थो गोवा जाता
वम्बई माय डेरा देवै
सावरकरजी सू मिल परोर
साम्हे खड आसीसा लेवै

कैयो वै सपादक विनोद
थे घणी दूर सू जावोला
छाती गोळ्या खा गोवा मे
थे देशभक्त कैवावोला

म्हानै गोवा पाडीचेरी
लेवण ताई अड़णो पड़सी
आ नै आजाद करावण हित
पुर्तगाल भिड़णो पड़सी

भारत अखड म्हे राखाला
मन सू सोगन लेणी पड़सी
अर देशभक्त कवावण नै
कुरवान्या ही दणी पड़सी

था मनसोवा बलिदाना सू
होसी जरूर ही कीं जगती
गीता रै मुजब देशभक्ता
जमराज न रोकेलो मुगती

थे पुर्तगाल री वन्दूका
सामै जावो खाली हाथा
बी मानो तो थारी मरजी
म्हारै ऐ जचे नही वाता

बलिदान देवणो लियो धार
तो हाथा बन्दूका लेवो
दुसमण नै गोळ्या रो जवाब
साम्है खड गोळ्या सू देवो

हाथा बन्दूका लिया बिना
पग गोवा माहीं मती धरो
इण मे थारी बलिहारी है
दुसमण नै पैला मार मरो

सरकार काम ऐडो सगळो
सेना ने ही देणो चहिजै
बेमौत मरण रै ही तायी
जनता नै नी कैणो चहिजै

रुक परा फेर कै सावरकर
पूगैला जद सैनिक जत्था
पुर्तगालिया ललकारैला
गोवा सू काढ लेय लत्ता

सत्याग्रह रै बदळे माही
बन्दूक सफळता ही मिलसी
मूढै चढियोड़ा मौतड़ली
मनसोबा पुर्तगाल हिलसी

सावरकर कैयोड़ो साचो
सरकार सैनिका भेज कियो
बन्दूका अर शस्त्रा रै बळ
झट गोवा नै आजाद कियो

गोवा छोडावण समाचार
तात्य सुण खुश हो गैरावे
खुद घर मे ही खुशिया बाटे
अर भगवो झण्डो फरावै

बुद्ध कि जुद्ध

गोवा भारत रो एक अग
मन माय समावै नी फूल्या
जेळा माही दुख देख्योडा
सपनै-सी बात समझ भूल्या

१० मई १९५७ फेर १८५७
दिल्ली मे उच्छब मनवावै
बीमारी हालत सावरकर
सम्मेलन रै माया आवै

दिल्ली रै माही जोरा सू
स्वागत तो होवै है वा रो
सावरकर जिन्दाबाद रवै
जनता मिल देवै ओ नारो

सभा विराट भाषण देवै
वै सिघ-गरजना करै फेर
मेदान रामलीला वाळै
माळावा रो लग गयो ढेर

आदर्श बुद्ध आदर्श जुद्ध
है आपा सामी दो वाता
दोना माया सू फकत एक
आपा अपणाणी है हाथा

आ आपा मरजी माथे हे
मन माही सोचो धरो धीर
आतमघाती बुध अपणावा
का विजयदायिनी नीति वीर

११ मई १९५७ दिल्ली माही
हिन्दू भाया बुलवा लेवे
मनड़ै री बाता सागीडी
जळपान करावै अर कैवै

थे धन्यवाद रा पात्र बण्या
विपदा री वेळा दियो साथ
हिन्दू झंडै रै नीचै डट
आ भात बडी था करी वात

था बीस बरस नेता मान्यो
अर दुखड़ा अणगिणती झेल्या
हिन्दू समाज बलवान कस्यो
डरकर पाछा पग नी मेल्या

मै देय सक्यो नीं कूई भी
था तन-सन धन बलिदान कस्या
थे म्हारै सागै रैय परा
पग मौत-चकारै माय धस्या

आ देख वीरता अणमोली
मन माय खुसी बोळी होरी
सोगन मनड़ा सू लीयोड़ी
भारत रो दाळीदर धोरी

कांधै हिन्दू री धजा लिया
दुखड़ा झेल्या हे पाळ प्रीत
खापण सिर माथै बांध परा
आजादी गाया घणा गीत

मै आप पुजारी आसा रो
मो'ह नही निरासा सू राखू
झडो फहराणो नी सोरो
आसा मे पाछी नी ताकू

विश्वास राख मन रै माया
कुळ री जावा नी भूल रीत
हिम्मत कर आगीनै चालो
छेकड़ आपा री हुवै जीत

हर कोई धारो बात इसी
निछरावळ देस काज होसू
भारत माता री बेड़्या नै
एकलपो काट परो रैसू

भारत अखड ही रैवैलो
सामी छाती जुलमा लड़ सू
गोळ्या सू दुसमण रो माथो
फौलादी हाथा मै घड़सू

मृत्युजय समारोह

१४ जनवरी १९६१ पूना मे
सगळा दल करियो एक क्रम
मृत्युजय समारोह तात्ये
मनवायो मिलकर धूमधाम

नरकेहर स्वातत्र्य वीर
सब सस्थावा स्वागत कीनो
सगळै ही क्रातीकारया नै
भाषण मे धन्यवाद दीनो

क्रातिवीर सेनापति बापट
भाषण दे सै रा मन मोवै
बा री अध्यक्षता रै माही
ओ समारोह सपन होवै

समाजवादी जोशी एम एम
तिलक पौत्र श्री जयन्तराव
भाऊराव मोडक केतकर
सावरकर घण बिड़दाय घाव

बोलै अधिवेशन सभा माय
असली बै बात जता देवै
सावरकर आजादी-जुध मे
जोधा अणतोल बता देवै

बीमारी दिन-दिन बधती ही
दुखड़ा रै सामै नही झुकै
सामाजिक सेवा रो चिन्तन
अर कलम साहितू नहीं रुकै

चीन रै आक्रमण रो आघात

अक्टूबर १९६२ मे चीण
भारत माथै हमलो बोलै
सावरकर मन धक्को लागे
बिन शस्त्रा ताकत कुण तोलै

भारत रा सैनिक सामा चढ
चीण्या सू मूकाबलो करै
मेजर शैतानसिघ सागै
सैनिक लदाख म घणा मरै

बम्बई कोटड़ी माय पड़्या
तात्ये हमलो दुख भभकावै
बस री नी कोई बात रयी
कचन-सी काया धधकावै

मन हुवै गळगळा अर कैवै
भ्रम माय अहिंसा नीं फसता
हथियार हाथ मे होता तो
चीणी भारत मे नी धसता

भारत नेता म्हारै कैया
सेना हथियार सूप देता
पाछा खदेड़ कर चीण्या नै
गोळ्या री मार प्राण लेता

ऐ विश्वशाति रा महापुरुष
कल्पना-उडारया ही भरसी
हथियार बणाकर भारत नै
अब फेरू कद तकड़ो करसी

कुरस्या पर नेता कागरेस
सैनिकीकरण रया बात काट
भारत सैनिक बिन हथियारा
उतरया जावे हा मौत घाट

धीरज बध जावै मन माया
काया बीमारी नी चोसी
सिन्धू रै तट पर दाग हुवे
आ मनोकामना सिध होसी

काग्रेसी नेता चाणचकै
बै वीर मार्ग छोड़ै अकड़ै
गाधीजी लक्खण अपणाता
अणहूतो मारग ही पकड़ै

फस जावै रूसी कूटनीति
बद करवा देवै भळे जुद्ध
दुसमण पर धाक जमायोड़ी
छोडा देवे नी रेवे सुध

रणबका रा पग थमता ही
सावरकर नै सदमो लागै
हो जावै मटियामेट खुसी
दुख करता रात्यू ही जागै

जीणो हुय जावै तद हराम
इण तरिया रो लागै धक्को
समझोतो करियो तासकद
आपस मे हुय जावै पक्को

सावरकर मूढो मुरझावे
ओ ओड़ा खाटो करयो काम
आसा माथै पाणी फेरयो
भारत रा चक्का करया जाम

राक बधत रणबका नै
निरलज्जा कर दे फेर दूर
सुणता खुसियाळी तात्ये री
हुय जावै चकनाचूर-चूर

शास्त्रीजी पाछी नी ताकै
मीया रै लारै जाय लाग
भागतड़ा ने आडा नाखे
मूढै कढवावै भळै झाग

वे भागे जान बचावण नै
मीया रा टका गिण लेवै
अर मार-मार रणभूमी म
ल्हासा री भीता चिण देवै

हिन्दू युवका हजारू रो
अैळो ही होयो बलीदान
मा बाप गमाया निज बेटा
देस बणै किण विध महान

हजारू वीरा प्राण दिया
भारत री पैठ जमा दीनी
गाधीवादी नेता मिलकै
इज्जत नै धूड़ रळा दीनी

अब आ री आस राखणी तो
मोतड़ली नै नूतो देणो
खोस्या सोनै-चिड़िया रा पर
ओ म्हारो सगळा ने केणो

सदमो लागै सावरकर नै
माचै पड फिकर माय डूबै
धीरज सू धाको धिकावता
मौतड़ली नेड़ा जा पूगै

मौत नै आत्म-समर्पण

बो ताशकद रो राजीपो
तात्ये आशा पाणी फेरै
मौतडली सामै झुक जावै
सुस्तीवाड़ो बा नै घेरै

औषध लेणी बै करै बद
सदमो कािळदर बण्यो डसै
मौतड़ली सिर घूमण लागै
माचै पड़िया दुख पाय खसै

बेटो विश्वास सावरकर
डाक्टर सू सला करै जाकर
विक्रम सावरकर कै भतीजो
थे ऊभा करो दवा पाकर

बाल सावरकर कहे डाक्टर
मिला चाय मे दवा लियावै
बेहोसी हालत सोयोड़ा
बैठा करकै झट सू पावै

बैम दवा हुवता बोलै
मे नीं चाऊ अब और जिऊ
दवा मिलाई चाय पिलाया
चाय भळे मे कोनी पीऊ

अब ज्यादा जीणो नी चाऊ
छेकडलो आय गयो नाको
माग्या सू मौत मिलै कोनी
धींगाणै धिक र्यो हो धाको

इक दिन मितर साठे डाक्टर
बै बुला परा यू समझावै
मै अबै बोलणो नी चावू
तू क्यू नी इसी दवा देवै

करणो हो सो कर दिखा दियो
मन माया की राखी कोनी
भारत आजाद करावण नै
पाछी भी मै ताकी कोनी

नी टाळी थारी बात कदी
मत बात म्हारली आज टाळ
तू इसड़ी मनै दवा देदै
झट सू लेजावै उठा काळ

सावरकर री आ सुणी बात
साठे मागै माफी बा सू
आ बात न सोभा थानै दै
कह आख्या मे लावै आसू

शकराचार्य नै प्रणाम

स्वामी जगदगुरु शकराचार्य
नव सचिदानद कागद आवै
स्वातत्र्य-वीर सावरकर सू
वे ही आकर मिलणो चावै

सावरकर पाछो लिखवावै
पावडा मनै धरणा चइजे
सामै पग आकर थारा ही
दरसण फेरू करणा चहिजै

वस री अब बात नहीं रैयी
माफी मागू हू थांरै सू
बीमारी कारण हुयो ऐढ
चालीजै कोनी म्हारै सू

तो शकराचार्य लिखै पाछो
अपवाद नियम रा भी होवे
था जैड़ी आजादी ज्योती
भारत रै माय नही जोवे

सावरकर पाछो लिखवावै
कागद पढ मन लागै हरखण
था चरणा कोटिक नमन करू
थे भल पधार देवो दरसण

किण विध होवै थारो स्वागत
जथाजोग म्हारै मन चायो
आ लगन मगन कैवै म्हारी
मुगती रो दिन नेड़ो आयो

तात्ये बुलवावै निजी सचिव
अप्पा कासार बुला लेवो
शकराचार्य स्वागत ताई
झट त्यारी करणे री कैवो

आपा री इज्जत रो सवाल
सागीड़ो थे स्वागत करिया
चावळ चदण अर तिलक लगा
चरणा म्हारा परणाम दिया

अगद दायी पग रोप परा
कर सेवा पाछी नी ताके
मरणे सू पैला तात्ये-मन
मरजादा हित सरधा राखै

ज्योतिपुज बुझग्यो

२६ फरवरी १९६६ रै दिन
हो जावे ज्यादा ही बिमार
डाक्टर आक्सीजन चढा देय
इजेक्सन देवै भळै लार

पण होणहार नै नमस्कार
थक जावे कर सै भागदौड़
दोपारे री ग्यारह बजता
सावरकर देवै प्राण छोड

आ खवर पूगता देस माय
हक्का-वक्का हुय जाय लोग
सरणाटो छावै बुरी तरा
वारह दिन राखै घणो सोग

मरता कहग्या हा लारै सू
राष्ट्र-हानि मत होण दिया
हड़ताल तलक थे कर्या मती
नीं काम-काज थे वद किया

भावना राष्ट्रहित री उजळी
मन माय विया रै कितरी ही
सवदा नी वरणी जाय सकै
अणथाग समदर जितरी ही

इतिहास वतासी वोल परो
सावरकरजी री देशभक्ति
क्रातिकारिया मुकुट-मणी
मान्योड़ी ऊची एक शक्ति

२७ फरवरी सिझ्या नै
या री शवयात्रा से काढै
भगवा झंडै माया लपेट
काधा धर मोटर पर चाढै

लाखू ही मिनख मसाणा मे
दाग निमत ही भेळा होवै
स्वातन्त्र्य-वीर रो सोग मना
दुख जता परा वेजा रोवै

सगळा री आख्या देखै ही
बिजळी री चिता पर धर देवै
परकम्मा देवै जै वोलै
अर घणा घमीड़ा से लेवै

वजर सो डील वाळ देवै
लकड़्या री आ सरधा कोनी
ईं खातर आछो करयो काम
वाळण रै तायी ली कोनी

जीया कट्टर हिन्दू विचार
सेया हा कागरेस-झटका
नीं दब्या कदै दाब्या राख्या
वै सदा सुणाया हा खटका

साकार देवता समझ परी
दुनिया निरखैली मूरत नै
भारत-मा रो साचो सपूत
थुथकारो उण री सूरत नै

गोरा नी दव्या कागरेस्या
वा नाव मणी दाईं चमक्यो
सूरज रै ज्यू कर उजियाळो
ससार समूचो दमकायो

घणी विधावा साहित लिखियो
महाकवी बण नाव कमायो
निछरावळ हुया देस ऊपर
रुतवो सब रै बीच जमायो

सावरकर दाईं लौह-चिणा
नी दूजो नेता चवा सक्यो
धर मौत हथेळी रै माथै
अगरेजा नै नीं दवा सक्यो

पक्का हा हिन्दु राष्ट्रवादी
दुनिया वा नै चेतै करसी
अर जुगा-जुगा इण अमर-जोत
उजियाळो हुवतो ही रहसी

अंतिम वसीयत

मरणै पैला माडी वसियत
ईं री अब वरणन कर ख्यो हू
उण देशभक्त री मनचायी
पद्लो लिख कर कै धर ख्यो हू

म्हारै लारै धन रैयोड़ो
धार्मिक सस्थावा दान करया
मत माया रै हुय वसीभूत
थे घर रै माया मती धरया

है पचहजारी निजी कोश
शुद्धी आदोलन देरयो हू
वो सागीड़ो चालण ताई
अै वचन आज था लेरयो हू

चौड़े ही मन री सा इच्छा
कागद माथे लिखकर देयी
शुद्धी आदोलन रै खातर
बा नै चिन्ता लागी रैयी

हिदवा मे शुद्धी आदोलन
चलवाणे खातर बै केया
पाछी मत ताक्या मरतै दम
मुगती रै मारग पर बैया

धर्मान्तर याने राष्ट्रातर
हिदवा नै चेतावणि दीनी
भारत रो ऊचो नाव करण
मजबूत नीव नै ही कीनी

मुस्लिम ईसाई जनसख्या
जे भारत मे बध जावैला
तो तत्व विदेशी मिल करकै
फेरू भारत नै जकड़ैला

वै देश-व्यवस्था मे अड़चन
नी आख्या सू देखी जाता
जे कोई विघन घालतो तो
रोकण नै झट आगै आता

ईं खातर मरता वै कैग्या
कोई मत ना हड़ताल करया
निस्वारथ सेवा देश करया
मेहनत सू भारत भाग भरया

हड़ताल करया हाणी होसी
मेहनत सा निसफळ जावैली
आत्मा तो होवै अजर अमर
मरियोड़ा री दुख पावैली

जे कोई भी नेता मरतो
हड़ताल नही करणै देता
काग्रेसी कोई अड़ जातो
वै रा लत्ता पूरा लेता

लिखियोड़ी बारी आ वसियत
कैवै मूढै सू आज बोल
भारत माता री वेड़्या नै
आख्या सू देखत रही खोल

बिसवास करयो वै खुद माथै
निछरावळ रौ-की कीयो है
मुगती रो मारग जीतै जी
वै देशभक्ति खोलायो है

मोतड़ली नै ललकार कयो
मै नी हराम रो खायो है
मातृ-पितृ ऋण ब्याज सुदो
मरजादा रैय चुकायो है

इण जीवन माथै दोस लगा
अर पाप अवै थोपै कोनी
मुगती री पेड़चा चढतै नै
जमराज आय रोकै कोनी

सा दुनिया जाणै करया काम
वैयो कित्तो गहरो ऊडो
भारत रै पूठै छुरो मार
मै करयो नही काळो मूढो

ऐ मोत जदै मरजी आवै
लेजा ओ जीवन थनै छूट
दुनिया रो धारो देख लियो
अरपण करतो ना देउ पूठ

म्हारो है वश मिनख जाती
भारत सेवा करतो रैयो
जेळा रै माया उमर काट
मुगती रै मारग पर वैयो

हो जिको काम म्हारै करणो
सोगन ले हाथा माय कियो
मानो ना मानो है मरजी
सूरज तक अस्त न होण दियो

किरतवा पूरती म्हारा री
मन राख चेष्टा पूरी करी
परमेसर जाणे सगळी नै
मैनत करियोड़ी नही मरी

करियोड़ै ही कृत कामा सू
म्हारा जीवन सुखमय होया
मालिक री छतर-छिया वैठ्या
मारग मे काटा नी बोया

सामयिक चेतावनिया अर महत्वपूर्ण विचार

विश्वासघात देसड़लै कर
नरका नातो जोड़यो कोनी
माया रै बसीभूत होया
किरतव सू मू मोड़यो कोनी

म्हारै करमा वळवूतै ही
ओछी कीनी मानो पोटी
आगोतर मालिक वैठण नै
देवेलो लूठी-सी कोठी

बेरुवाड़ी रो दान नी हुयो होतो

इण हिन्द मायनै जलम लेय
देवा ऋषि मुनिया पुजवायो
गुरु सब देसा रो कैवायो
सोनै रो सूरज उगवायो

२४ जनवरी १९६१ पूना मे
सावरकर जनता नै कैयो
भारत री इज्जत राखण नै
नी ठीक राह सासन वैयो

आजाद होयग्या हा जरुर
आ बात बतावण अब आयो
मूढै पर देश उदासी नै
थे मनै बतावो कुण लायो

उदगीर जुद्ध जीतणआळा
सेनापति भाऊ होय खतम
अगरेजा नै काढण ताई
मत पूछो कीना घणा जतन

अर भाग्यनगर हैदराबाद
निजाम जीवतड़ो ही रीयो
बी कारण गई नी गूलामी
अर लहू गरीबा रो पीयो

सरदार पटेल लौहपूरुष
आगै आ नी पाछी ताकै
वो हाथ निजाम कटाय परा
कुरसी छोडा नीचै नाखै

नेहरुजी खुद रै मन माही
हटवाणो नी निजाम चाता
हा रै माही हा मिला परा
उण कैयै मारग पर जाता

सरदार पटेल निजामाळै
पापा रै माथे ध्यान धरयो
नाका रै माही नाथ घाल
पुन रो झट ओ ही काम करयो

बी वगत उदासी मूढै पर
नी कठै देखणै आती ही
जनता निरात रैवण लागी
धरती खुसिया महकाती ही

नेरुजी बेरुवाड़ी रो
दे देवै पाकिस्तान दान
हिंदवा नै सदमो लगा परा
देखाळी निज री भळे शान

लौहपुरुष जे होता तो
नेडा कोनी फटकण देता
नेरुजी भेळा काग्रेस्या
बै आडे हाथा ले लेता

नी दान करण देता कूयी
बा काम सातरो कीयो हो
मीया सू अड़ हैदराबाद
मिनटा मे छोडा लीयो हो

वे सर्प समझ काळो निजाम
सत्ता सू हटा परा वचळ्यो
मन दया आवणे रै कारण
छोड्यो पूरो फण नीं कुचळ्यो

दुसमण वणकै अय्यूव खान
भारत माथे हमलो करसी
चुप बैठे नी मौको देख्या
फुकारै पग आगै धरसी

हा रै भेळी हा मिला परो
होवाइ काढ मन री लेसी
छानै-छुपकै मौको देख्या
बो मदद दुसमणा नै देसी

संतोष हुयो है मनै आज
दी आ पटेल गोळी गिटवा
भोपाल रामपुर रा नवाब
जड़ामूळ सू दे मिटवा

मनै उपाधि नी चाइजै

सावरकर देशभक्ति वदळै
उपाधी लेण रया विरोधी
परमिट पद लेवण रै ताई
नी बात कदी कीनी सोधी

निस्वारथ कीनी देशभक्ति
वलशाली बता कहै साची
आ देश-दिवाना बलबूथा
आजादी भारत मे नाची

म्हानै सासन दे उपाधिया
कदै नही सनमान कियो
अर जप्पत करवायोड़ो घर
ओजू तक पाछो नही दियो

कइ नेता ओजू है नराज
जीणो कर राख्यो है हराम
पण मै कुरसी बैठण ताई
ओजू तक लीनो नही नाम

पूणै नेडो भारत सगळो
आजाद होय फूला खिलग्यो
अर देख देख खुस होय क्वा
म्हानै तो सौ-क्यू ही मिलग्यो

क्राती री ऐ उपासनावा
जद गूजी जाणी जाती ही
भारत-इज्जत राखण ताई
वै जाना काम आवती ही

सैकड़ा युवक फासी लटक्या
बा नही करी कोई इछ्या
भारत आजाद करावण नै
बा जीवन समझ्यो हो मिथ्या

सगळा आजादी आदोलन
सैनिक मान्योड़ा हा साचा
पाक्योड़ा घड़ा बाजता हा
कोई कह सक्यो नही काचा

आजादी मिलणे रै पाछै
मत्री तक वणणो नी चाया
कोटा परमिट जागीर मिलै
इण लालच माय नहीं आया

जीवता थका आजादी रो
वा कदी नहीं देख्यो हो सुख
निस्वारथ सगळो परीवार
भूखो रह करकै काट्यो दुख

आ वात तोल कैणो पड़सी
केरू ही कोनी है छानै
सावरकर जैड़ो देशभक्त
दुनिया केनै अव नी मानै

साची पूछो आजादी री
हा नींव मायला वै पत्थर
युवका ने क्रांती शिक्षा दी
कवितावा इतिहासू कथकर

की इच्छा मन रैयी कोनी
म्हा मौत देश खातर होसी
सेना जीते ध्वज लिया वधे
उण मारग निष्कटक होसी

देशभक्ति देखावण सू
कोई रोक्योड़ा नही रया
जाझा मे भर-भर मस्ताना
अडमान जेळ मे पूग गया

घाणी रै माया जोत परा
तेल काढणे माय लगावे
सोच्यो ऐ रो फळ कद मिलसी
ओ काम गरीवा रै आवै

कर खून पसीनो कढै तेल
सोच्यो प्रतिनिधि ही खाता हा
भगवान न्याय करसी इण रो
मनड़ा मे दुख उपजाता हा

पण इयै तेल सू लाय लाग
सगळै भारत माया धधकी
फास्या पर चढते वीरा री
कुरबान्या वेजा ही भभकी

अडमान कयी क्रातीकारी
फास्या पर चढ-चढ देय प्राण
मरता पाछा पग नी देवै
आजादी खातर रखै आण

वा वीरा रै बलिदाना पर
आज कई मत्री वण तणग्या
कुरस्या रै माथे कब्जो कर
क्रोडू पइसेआळा वणग्या

म्हे सगळा हा सतुष्ट आज
जेळा मे दुख भोगणा पड़्या
आ वेसरमा रै दाई तो
कुरस्या रै खातर नहीं लड़्या

राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद
सिंघासण वैठ्या रया गाज
साची पूछो तो वीया सू
मैं घणो सुखी हू फेर आज

हजार हजारू लोग आज
म्हा दरसण ने जिद कर रया है
वारे सू आय परा देखो
दैळी माथै पग धर रया है

जनता सू कवल कियोड़ा ने
पूरा सगळा कर देखाया
मौतड़ली रै मूढै आगे
गोरा रा माथा टेकाया

कीयोड़ै विजै काम तक भी
आ री औकाता नी पूची
आ राजमुकुट अर उपाधिया
म्हारी औकाता है ऊची

सापरतै सावरकर खातर
ससार साच बाता कहस्यो
निस्वारथ सेवा बुद्धि कर
काटा रो मुकुट शीश पैस्यो

ए-वन जेळा मे रैय परा
मक्खन अर टेस्ट नहीं खायो
बिजळी पखा तळ मजा उडा
देशभक्ति नी दाग लगायो

आपा नै आक्रामक बणणो होसी

तात्ये देखै म्हा काकड पर
चीन-पाक हुकार करै
आधा-गूगा बण काग्रेसी
इण बाता पर नीं ध्यान धरै

तो बा रो देशभक्त हिवड़ो
भुसळीजण लागै माय-माय
राखै मन-री मन माय बात
किण आगै खोलै बात नाय

बै जनवरी १९६१ माय कै
काग्रेसी सासन है दोसी
आजादी तो मिलगी है पण
अब आगै हाल कई होसी

रिछपाल देस भारत री अब
किण विध होसी अर कुण करसी
क्रातीकारया ज्यू आगै बध
पग मौत सामनै कुण धरसी

काग्रेस राज होता हालत
नामरदी सागै खड़ी लिया
दुख इये बात रो होवै है
चालैला आगै फेर किया

औ माय कोथळया गुड फोड़ै
चवडै मे बात करै कोनी
भळै गरीबी मेटण तायी
कोइ प्लान बणा धरै कोनी

चीण हमलो करकै अचानक
४०० मील दबायली धरती
नेहरुजी नै सो मालम हो
बा लापरवाही क्यू बरती

डर कर कै उण री ताकत सू
नी कैयी आगै बात करै
हथियार बणावण सारू नट
भारत रै सागै घात करै

जे पैला त्यारी कर लेता
सेना जबाब लडकै देती
दुसमण नै मार पाधरो कर
दाबी धरती पाछी लेती

आजाद होवता ही पैला
काकड़ माथै पहरो देता
नो मेन्स लेड माही घुसता
अर हिन्दू मैन्स बणा लेता

सब देश चीन नै जाणै है
बेधरमी है आतमघाती
हथियार बण्योड़ा जे होता
आ आफत आज नहीं आती

बीमार रैवता सावरकर
वै देश-भलो सोच्या करता
टेम-टेम पर आगै आता
सगळा नै चेतावणि **देता**

हरकोई देश धाक खुदरी
वलवूते सैनिक जमवावै
वस आख दिखाकर दूजा नै
नी धाक जमायी गमवावै

एकर डा राजेन्द्रप्रसाद
नेतावा कैणै मे आवै
समदर मे सस्तर नखवाकर
भग सेना नै करणी चावै

होठा पर फेफ्या आय गयी
हथियार हाथ सू दिया नाख
कायर वण कै रागळा सामै
म्हे जमा सक्या नीं अजू धाक

सावरकर राष्ट्रपती नीती
वतळावै होसी खतरनाक
ओ आछो काम कर्यो कोनी
बण कायर पाछै रया ताक

राजेन्दर बाबू चेताया
रक्षा नीती होणी चइजै
अर देश-सुरक्षा रै खातर
सेना-हथियार घणा चइजै

जे म्हारो कैणो ना मानो
पण प्राण बचावण आय काम
पाछी भी कोनी ताक सको
दुसमण चक्क कर सकै जाम

बिन सेना देश वडो होवै
बो आपो खुद रो यू खोवै
निवळै री मा सब री भाभी
बो पराधीनता मे होवै

भारत हमलो जद चीन कर्यो
हथियारवायरा कूण डरै
राजेन्दर बाबू खुलै आम
सिर धुण-धुण पश्चाताप करै

'मुहम्मदपथी हिन्दू' भ्रामक विचार

एकर सन १९६२ मेरठ मे
इक नेता राजनीति बोलै
हिन्दू माथै बाता करकै
मन गाठा लाग्योडी खोलै

भारत रैवणिया नागरीक
सब जाता नै हिन्दू मानै
आ कोई नवी बात कोनी
कैस्यू भी नी है आ छानै

कबीर पथ अर दादू पथी
नानकपथी सगळा हिन्दू
सनातनी अर आर्य समाजी
सै एक बात रा है बिन्दू

हिन्दू व्याख्या मुहमदपथी
कैवै है वानै एक जात
लेखक रो लिखियोड़ो आगै
लो पढो बतावै नई बात

रामशरणदासजी पिलखुआ
सावरकर सू दोस्ती रैयी
बा कागद लिख्यो वीरजी नै
ई खातर पूछण री कैयी

वै पाछो लिखकर दै जवाब
आर्यसमाज कवीरी पथ
बौद्ध सिक्ख अर सभी धरम
भारत मे जलम्या एक कथ

आ सगळा रा परतख दीखै
जाण्या ताण्या हिन्दू बाज्या
औकात आपरी दिखा परा
वै दव वण्या कारज साज्या

तीरथ अर आरी पुण्यभोम
सगळा ही भारत मायी है
इण देस सरीसो नी दूजो
छाती सू अळघा नाही है

मूसळमानी मजहब रा तो
तीरथ लाधै है नी जोया
अर इसाई मजहब वाळा
धरती विदेस पैदा होया

वा पुण्यभूमि भारत कोनी
हिन्दू वा नै माना कीया
मानो ना मानो था मरजी
आ बात साचली है ईया

जिका काशी मथुरा अयाध्या
नही तीरथ बतावै थानै
बै तीर्थ आपरो ही न्यारो
मक्का र मदीना नै मानै

हिदवा सू न्यारा रैय परा
न्यारो ही मानै एक धरम
वा बै तो हिन्दू कैणो ही
साची पूछो है एक भरम

धर्मान्तर याने राष्ट्रान्तर

मालिक दो कोनी एक हि है
लिख लेखक चवड़े कर रयो है
है झूठ बोलणो महापाप
पढ्लो था आगे धर रयो है

लोही सगळा रो एक जिसा
एक धरम अर इक मारग है
म्हानै बचावण वाळै री
देखो निजरा ही नेक है

ना कोई हिन्दू-मुसळमान
ना सिख कोई ना ईसाई
मिनखा री जात बणायोड़ी
नई मती ना मानो भाई

मिनख करयोड़ै लफड़ै पर
नीं ध्यान किणी भी धर रया हो
ई अणसमझी रै कारण ही
आपस म लड़-लड़ मर रया हो

है धरम-करम से एक जिसा
मत भेद मारगा थे घालो
लाखीणी देवा जिसी जूण
पापा रै मारग मत घालो

देवी देवा अर पीरा सू
मा री आसीसा सस्ती है
पडित-मुल्ला नै पूछू मै
कुण मा सू ऊची हस्ती है?

धरती माता अन उगा परी
पनपावै सगळा री काया
दुनिया आख्या सू देखे है
परमेसर बैठ परा छाया

सावरकर धरम राष्ट्र अतर
कह बदलण माथै ध्यान किया
हिदवा ईसाई मुसळमान
मरतै दम तक मत होण दिया

व्यवहार सातरो धरम करम
सगळा रे सागे ही करणो
धन-काया तो है नासवान
आ छोड अठै ही है मरणो

धर्म अर्थ इतिहास राष्ट्र
त्याग इणा रो कैण कियो
आ रो है अरथ घणो ऊडो
जाणण वाळै तो जाण लियो

इगलैंड राज प्रोटेस्टेंट
नी धरम-धजा नीचै खड़तो
कम रत्तीभर नही चालतो
इस्तीफो दणो ही पड़तो

मध्यपूर्व मे छोटा-छोटा
राष्ट्र घणा है धर्म-प्रधान
मिसनरिया दाई गपा हाक
झूठी देखावै नही शान

धरम री गाडी काधा ऊपर
जे नीं चाल्यो हो जोत परो
परमेसर कोनी बचा सकै
मरसी वो खुरडा खोत परो

मुगती मारग सगती भगती
कइ हत्या नै कैणो पड़ग्यो
स्टालिन-सै धरम-हीण नै भी
धरम धजा झुकणो पड़ग्यो

आज देश मे तो मिसनरिया
ईसाया धूम मचा राखी
हिंदवा ईसाई बणा-बणा
बै सरम-लाज अळघी नाखी

शिक्षा र दवाया दे लालच
ध्यान गरीबा दिरवावै है
लालच पइसे नौकरिया रो
अब धरमहीण करवावै है

अमरीकी राष्ट्राध्यक्षा री
गाडी अधबिच माहीं अड़गी
प्रोटेस्टेंट बाइबिल री
हाथा सौगन लेणी पड़गी

धारणा करिया रै बिना धरम
जीवन नीं सुख सू काट सक्यो
हिरदै माहीं पाळ्या बिन तो
ओकात हि कोई छाट सक्यो

धरम-फोरणो रोग बण्यो
हिंदवा माही बोळो बधग्यो
अर धर्म-सहिष्णू गूगापण
लोगा रै सिर माथे चढग्यो

परचार विदेसी ओ [illegible]ीयो
नीं जोड़ सहिष्णु हिंदू धरम
जाती कमजोर [illegible] [illegible]
साची बाता ओ [illegible] धरम

आ सगळा रा परतख दीखै
जाण्या ताण्या हिन्दू बाज्या
औकात आपरी दिखा परा
वै देव बण्या कारज साज्या

तीरथ अर आरी पुण्यभोम
सगळा ही भारत मायी है
इण दस सरीसो नी दूजा
छाती सू अळघा नाही है

मूसळमानी मजहब रा तो
तीरथ लाधे है नी जोया
अर इसाई मजहब वाळा
धरती विदेस पैदा होया

बा पुण्यभूमि भारत कोनी
हिन्दू बा ने माना कीया
मानो ना मानो था मरजी
आ बात साचली है ईया

जिका काशी मथुरा अयोध्या
नही तीरथ बतावे थाने
वै तीर्थ आपरो ही न्यारो
मक्का र मदीना नै मानै

हिदवा सू न्यारा रैय परा
न्यारो ही मानै एक धरम
बा ने तो हिन्दू कैणो ही
साची पूछो है एक भरम

धर्मान्तर याने राष्ट्रान्तर

मालिक दो कोनी एक हि है
लिख लेखक चवड़े कर रयो है
है झूठ बोलणो महापाप
पढलो था आगै धर रयो है

लोही सगळा रो एक जिसा
एक धरम अर इक मारग है
म्हाने बचावण वाळै री
देखो निजरा ही नेक है

ना कोई हिन्दू-मुसळमान
ना सिख कोई ना ईसाई
मिनखा री जात बणायोड़ी
नई मती ना मानो भाई

मिनख करयोड़ लफड़ै पर
नीं ध्यान किणी भी धर रया हो
ई अणसमझी रै कारण ही
आपस में लड़-लड़ मर रया हो

है धरम-करम से एक जिसा
मत भेद मारगा थे चालो
लाखीणी देवा जिसी जूण
पापा रै मारग मत घालो

देवी-देवा अर पीरा सू
मा री आसीसा सस्ती है
पडित-मुल्ला नै पूछू मे
कुण मा सू ऊची हस्ती है?

धरती माता अन उगा परी
पनपावै सगळा री काया
दुनिया आख्या सू देखै है
परमसर बैठ परा छाया

सावरकर धरम राष्ट्र अतर
कह बदलण माथै ध्यान किया
हिदवा ईसाई मुसळमान
मरतै दम तक मत होण दिया

व्यवहार सातरो धरम करम
सगळा रै सागे ही करणो
धन काया तो है नासवान
आ छोड अठै ही है मरणो

धर्म अर्थ इतिहास राष्ट्र
त्याग इणा रो कैण कियो
आ रो है अरथ घणो ऊडो
जाणण वाळै तो जाण लियो

इगलैड राज प्रोटेस्टेट
नी धरम धजा नीचै खड़तो
कम रत्तीभर नही चालतो
इस्तीफो दणो ही पड़तो

मध्यपूर्व मे छोटा-छोटा
राष्ट्र घणा है धर्म-प्रधान
मिसनरिया दाई गपा हाक
झूठी देखावै नही शान

अमरीकी राष्ट्राध्यक्षा री
गाडी अधविच माही अड़गी
प्रोटेस्टेट बाइबिल री
हाथा सौगन लेणी पड़गी

धारणा करिया रै विना धरम
जीवन नीं सुख सू कट सक्यो
हिरदै माहीं पाळ्या बिन तो
औकात हि कोई छाट सक्यो

धरम री गाड़ी काधा ऊपर
जे नीं चाल्यो हो जोत परो
परमेसर कोनी बचा सकै
मरसी बो खुरड़ा खोत परो

मुगती मारग सगती भगती
कइ हत्या नै कैणो पड़ग्यो
स्टालिन-सै धरम-हीण नै भी
धरम धजा झुकणो पड़ग्यो

आज देश मे तो मिसनरिया
ईसाया धूम मचा राखी
हिदवा ईसाई बणा-बणा
वै सरम-लाज अळधी नाखी

शिक्षा र दवाया दे लालच
ध्यान गरीबा दिरवावै है
लालच पइसै नौकरिया रो
अब धरमहीण करवावै है

धरम-फोरणो रोग बण्यो
हिदवा माही बौळो बधग्यो
अर धर्म-सहिष्णू गूगापण
लोगा रै सिर माथै चढग्यो

परचार विदेसी ओ कीयो
नी जोड़ सहिष्णु हिंदु धरम
जाती कमजोर हुवण बदळै
साची बाता ओ नही भरम

अस सहिष्णु हिन्दु धरम
हे विना सहिष्णु अश ओर
अन्याय सहिष्णु कायरता
समझाया हिन्दू कस्यो जोर

ई कारण धरम इसाई ही
परचार ध्यान धरणो पड़सी
मिसनरिया सेती सामै खड़
अर मुकाबलो करणो पडसी

बगत प्रवाणै हुय सावधान
मिल प्रीत देस सू पाळ सको
सकट नीं धरम आय कोई
हिम्मत देखा जे टाळ सको

सावरकर पढ इतिहास ग्रथ
खुद ज्ञान कियो अर ओ लिखियो
हिन्दू जद तक रैसी हिन्दू
हासलो हिन्द रैसी टिकियो

वै धरती माता रै खातर
रण मे रणभेरी गाय सकै
कर प्राण आपरा न्यौछावर
ले जनम दूसरा आय सकै

अर मुसळमान ईसाई बण
धरती पर ध्यान धरै कोनी
अर समझ रेत रो दुम्वो ही
हरगिज ही कोय मरे कोनी

बारोड़ी मनया बदळ परी
काशी मक्का मदीना होसी
पक्की आ बात मान लेया
खुद नै नी मानेला दोसी

हिन्दू ही असली देशभक्त

आ मान लिया थे इयै देश
हिन्दू सै देशभक्त रैसी
जे विपदा फेरू आई तो
वै आगै आय जान देसी

आजाद होवता कागरेस
माथै म लीनी राख घाल
है सम्प्रदायवादी हिन्दू
भारत सागै आ चली चाल

भारत रै शहरा-गावा मे
परचार रोज ओ करता हा
हिन्दू नी हिन्दुस्तान कवो
लोगा मे इण विध भरता हा